Sample

भृगु पत्रिका

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com

A 16 Ramdutt Enclave,

Milap nagar, Uttam nagar,

New Delhi -110059

Contact - 9818193410, 8527121621

* While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

ज्योतिष सारिणी

जन्म दिन	: 18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)
ज्योतिषिय वार	: सोमवार
जन्म समय	: 01:45:00
जन्म स्थान	: Ballia (up) , INDIA
रेखांश	: 084:10:00E
अक्षांश	: 025:45:00N
समयक्षेत्र	: -05:30:00 hrs
समय संशोधन	: 00:00:00 hrs
जी. एम. टी. समय	: 20:15:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार	: 00:06:40 hrs
स्थानीय समय	: 01:51:40 hrs
इष्टकाल	: 47: 52: 16 घटी

सांपातिक काल	: 07:36:55 hrs
सूर्योदय	: 06:36:32AM
सूर्यास्त	: 05:03:05PM
अयनांश	: N.C.Lahiri (023:29:36)
विक्रम संवत	: 2030
शक संवत	: 1895
संवत्सर	: प्रमादी
संवत्सर अधिपति	: इन्द्राग्नि
तत्कालीन दशा	: शनि : शनि : बुध
दशा भोग्यकाल	: चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26
भयात	: 27: 30: 35 घटी
भभोग	: 61: 31: 25 घटी

अवकहड़ा चक्र

लग्न	: कन्या
लग्नाधिपति	: बुध
राशि (चन्द्रमा)	: कन्या
राशिपति	: बुध
नक्षत्र	: हस्ता
नक्षत्रपति	: चन्द्रमा
नक्षत्र चरण	: 2
पाया	: स्वर्ण
ऋतु	: हेमन्त
मास	: पौष
पक्ष	: कृष्ण
तिथि	: नवमी
तिथि श्रेणी	: रिक्ता
तिथि पति	: सूर्य
करण	: गरिज
करण श्रेणी	: चर
करणपति	: वासुदेव
गण	: देव
वर्ण	: वैश्य
योनि	: महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग	: सौभाग्य
रज्जु	: कंठ
वश्य	: द्विपद

तत्व	: अग्नि
तत्वाधिपति	: मंगल
विहग	: वायस
नाड़ी	: आदि
नाड़ी पद	: मध्य
वेध	: शतभिषा
आद्याक्षर	: श

घात चक्र

राशि (सूर्य)	: मिथुन
मास	: भद्रा
तिथि	: 5,10,15
वार	: शनिवार
नक्षत्र	: श्रावण
प्रहर	: 1
लग्न	: मीन
सूर्य सिद्धान्त योग	: सुकर्मन
करण	: कौलव

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

सूर्य राशि	: धनु
देकानेट	: 3
फेस	: VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य)	: तुला
लग्न (पाश्चात्य)	: तुला
सूर्य का अवधिपति	: मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति	: शुक्र
अवधि बदलाव	: (मंगल, शनि), (बुध, शुक्र) , (शुक्र, बुध) , (शनि, मंगल)

जन्म दिन का ग्रह : मंगल

जन्म समय का ग्रह : शनि

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लग्न कुण्डली

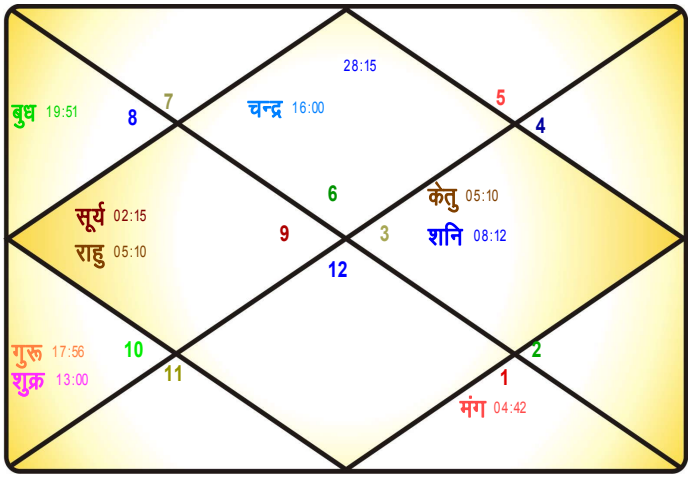

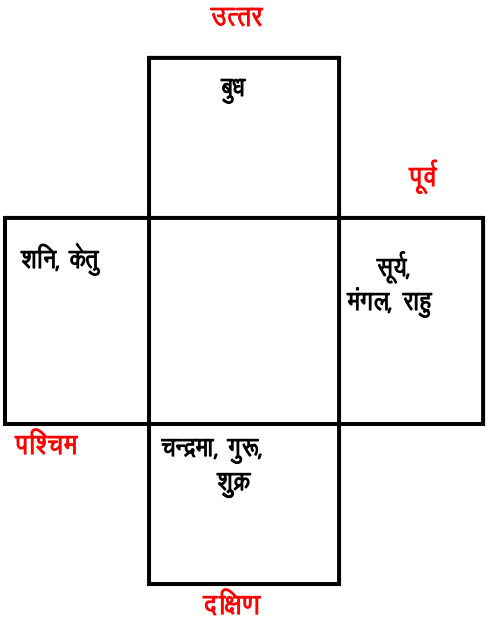

ग्रह स्थिति

ग्रह		राशि		डिग्री	गति	रा. प.	नक्षत्र – चरन	न0 पति	सप्तकारक	दिशा	विशेष
AC	लग्न	♍	कन्या	28:15:29	––	बुध	चित्रा (2)	मंगल	...	पश्चिम	...
☉	सूर्य	♐	धनु	02:15:49	01:01:05	गुरू	मूला (1)	केतु	दारा	पूर्व	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा	♍	कन्या	16:00:57	13:01:34	बुध	हस्ता (2)	चन्द्रमा	भ्रात्रि	पश्चिम	स्व नक्षत्र
♂	मंगल	♈	मेष	04:42:18	00:14:54	मंगल	अश्विनी (2)	केतु	ज्ञाति	पूर्व	मूलत्रिकोन
☿	बुध	♏	वृश्चिक	19:51:24	01:31:15	मंगल	ज्येष्ठा (1)	बुध	आत्म	दक्षिण	स्व नक्षत्र
♃	गुरू	♑	मकर	17:56:39	00:12:02	शनि	श्रवण (3)	चन्द्रमा	अमात्य	पश्चिम	नीच राशि
♀	शुक्र	♑	मकर	13:00:16	00:32:45	शनि	श्रवण (1)	चन्द्रमा	मात्रि	पश्चिम	मित्र राशि
♄	शनि व	♊	मिथुन	08:12:33	00:04:56	बुध	अरिद्रा (1)	राहु	अपत्या	उत्तर	मित्र राशि
☊	राहु व	♐	धनु	05:10:35	00:03:11	गुरू	मूला (2)	केतु	...	पूर्व	सम राशि
☋	केतु व	♊	मिथुन	05:10:35	00:03:11	बुध	मृगशिरा (4)	मंगल	...	उत्तर	सम राशि
♅	हर्षल	♎	तुला	03:20:59	00:02:23	शुक्र	चित्रा (4)	मंगल	...	उत्तर	सम राशि
♆	नेपच्यून	♏	वृश्चिक	14:20:41	00:02:11	मंगल	अनुराधा (4)	शनि	...	दक्षिण	सम राशि
♇	प्लूटो	♍	कन्या	13:11:14	00:00:46	बुध	हस्ता (1)	चन्द्रमा	...	पश्चिम	सम राशि

नाड़ी दृष्टि और अन्य ग्रह स्थिति

स्थिति	से द्वितिय	से पंचम	से सप्तम	से नवम	से द्वादश	नक्षत्र में ग्रह	राशि परिवर्तन
सूर्य	गुरू, शुक्र	मंग	शनि, केतु	––	बुध	राहु	––
चन्द्रमा	––	गुरू, शुक्र	––	––	––	––	––
मंगल	––	––	––	सूर्य, राहु	––	––	––
बुध	सूर्य, राहु	––	––	––	––	––	––
गुरू	––	––	––	चन्द्र	सूर्य, राहु	शुक्र	––
शुक्र	––	––	––	चन्द्र	सूर्य, राहु	गुरू	––
शनि	––	––	सूर्य, राहु	––	––	––	––
राहु	गुरू, शुक्र	मंग	शनि, केतु	––	बुध	सूर्य	––
केतु	––	––	सूर्य, राहु	––	––	––	––

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लग्न कुण्डली

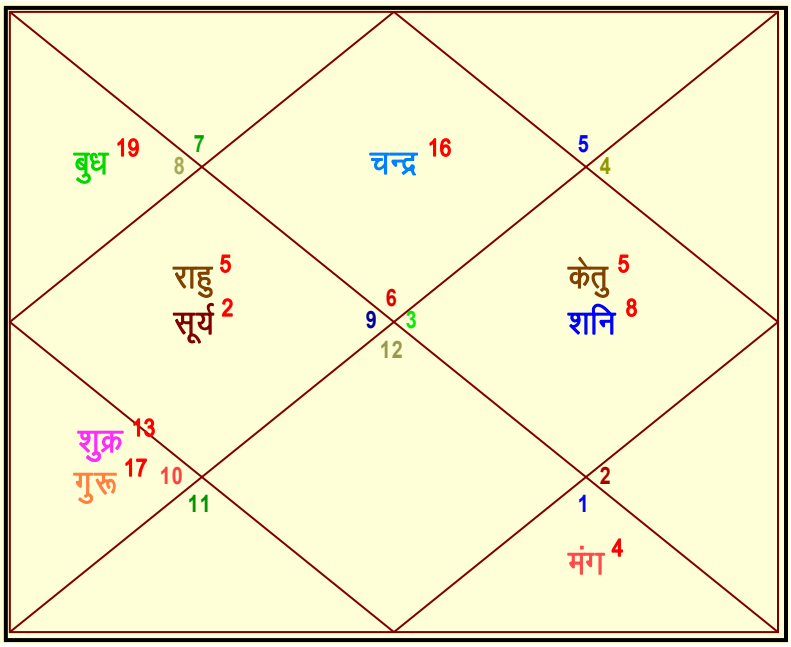

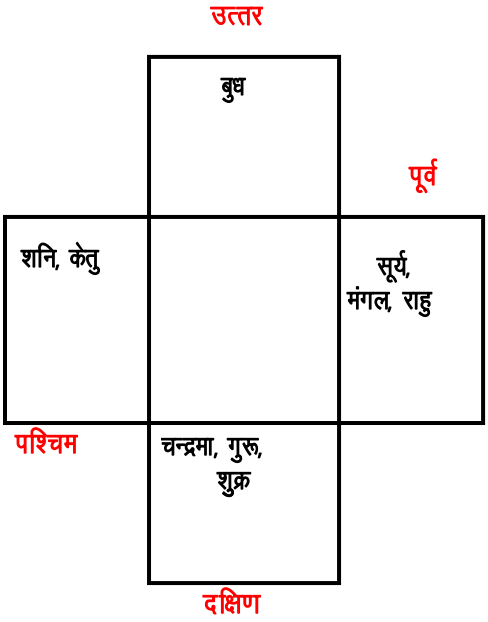

जीव लग्न कुण्डली

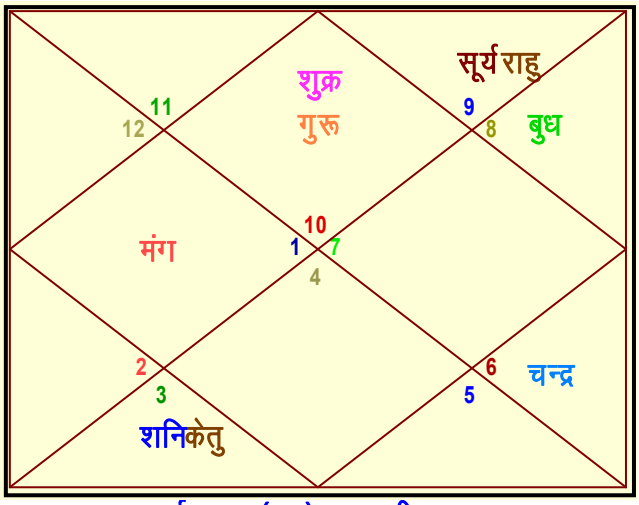

कर्म लग्न कुण्डली

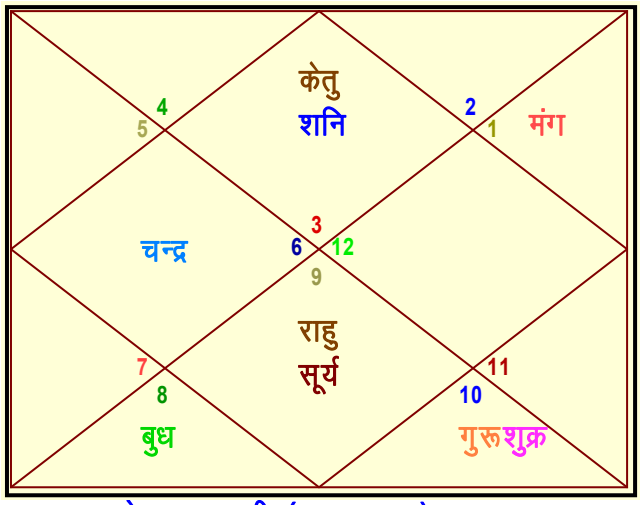

कर्म फल (राहु) कुण्डली

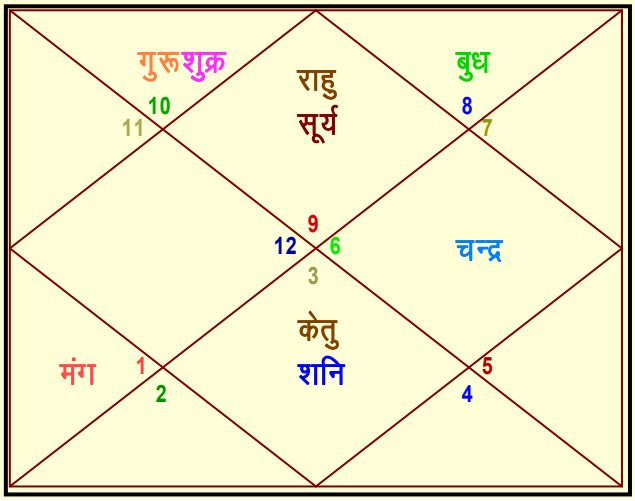

गोचर कुण्डली (14:01:2021)

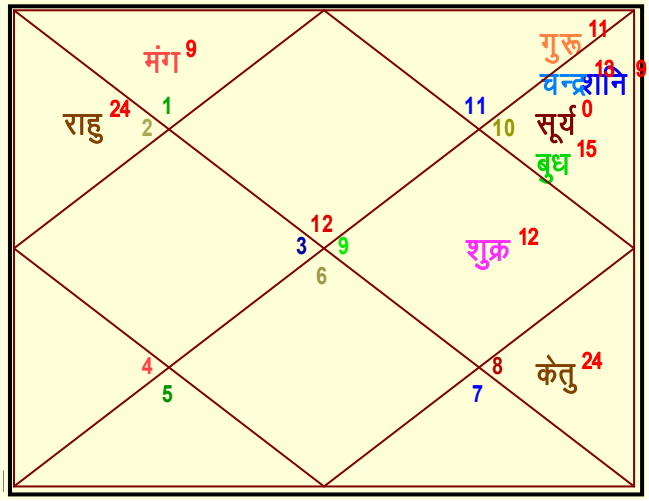

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति	विशेष
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	मंगल	–––
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	केतु	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	चन्द्रमा	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	केतु	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	बुध	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	चन्द्रमा	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	चन्द्रमा	मित्र राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	राहु	मित्र राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	केतु	सम राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	शनि	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	चन्द्रमा	सम राशि

लग्न कुण्डली

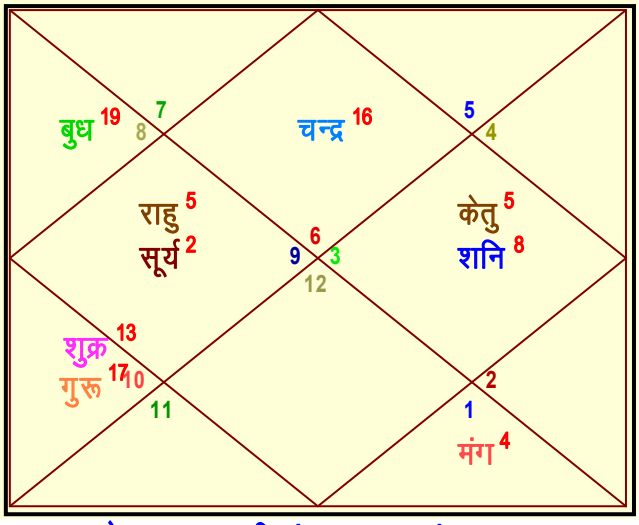

नाड़ी ग्रह स्थिति (जन्म)

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	बुध	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, राहु
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, राहु

नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)

गोचर कुण्डली (14:01:2021)

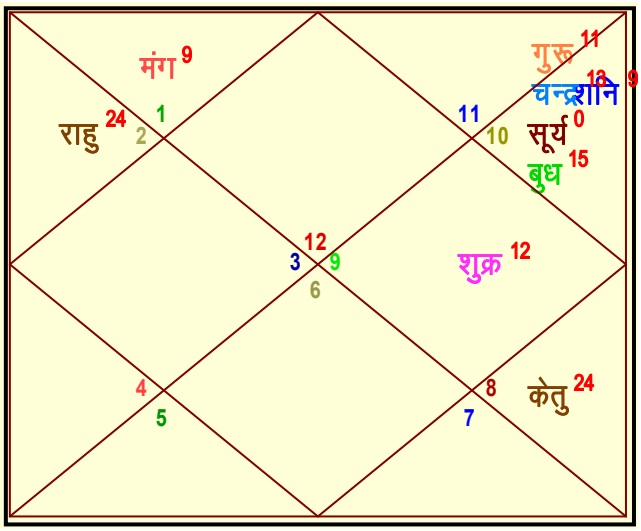

नाड़ी ग्रह स्थिति (जन्म कुण्डली पर गोचर)

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
शनि	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
राहु	शुक्र, चन्द्र, गुरू	मंग., केतु, शनि, बुध
केतु	बुध	सूर्य, राहु

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति	विशेष
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	बुध	–––
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	मंगल	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	शुक्र	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	शुक्र	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	गुरू	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	बुध	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	मंगल	मित्र राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	गुरू	मित्र राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	शुक्र	सम राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	मंगल	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	मंगल	सम राशि

लग्न कुण्डली

नाड़ी ग्रह स्थिति (जन्म)

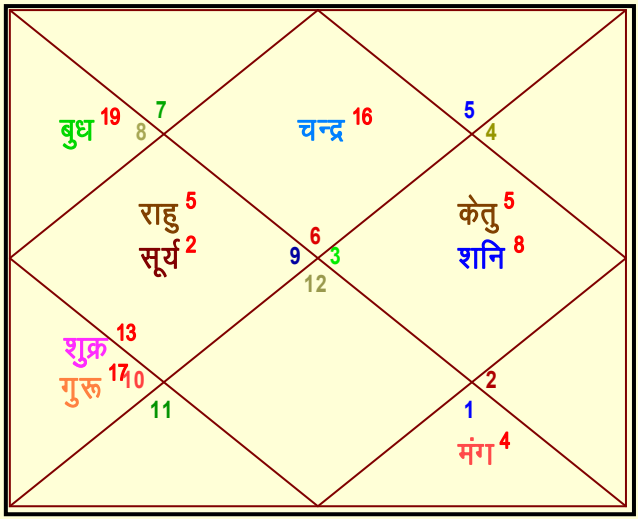

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	बुध	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, राहु
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, राहु

नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)

ग्रह स्थिति (नाड्यांश)

ग्रह	राशि	अंश	श्रेणी	नाड्यांश	नाड़ीभाग	नवांश	नक्षत्रांश
लग्न	कन्या	28:15:29	उभय	गदहरा (67)	पूर्वार्ध	कन्या	नपुंशकांश
सूर्य	धनु	02:15:49	उभय	सुमनोहरा (88)	उत्तरार्ध	मेष	तस्करांश
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	उभय	सुधाकरी (6)	उत्तरार्ध	वृष	भोग्यांश
मंगल	मेष	04:42:18	चर	मुसला (24)	पूर्वार्ध	वृष	भोग्यांश
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	स्थिर	कुन्दिनी (52)	उत्तरार्ध	धनु	उत्पन्नांश
गुरू	मकर	17:56:39	चर	मङ्गला (91)	पूर्वार्ध	मिथुन	वित्तछिन्नांश
शुक्र	मकर	13:00:16	चर	भूपा (66)	उत्तरार्ध	मेष	मंगलांश
शनि व.	मिथुन	08:12:33	उभय	मदिरा (115)	पूर्वार्ध	धनु	कृपांश
राहु व.	धनु	05:10:35	उभय	सारा (100)	उत्तरार्ध	वृष	भोग्यांश
केतु व.	मिथुन	05:10:35	उभय	सारा (100)	उत्तरार्ध	वृश्चिक	नीचांश
हर्षल	तुला	03:20:59	चर	प्रभा (17)	पूर्वार्ध	वृश्चिक	दरिद्रांश
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	स्थिर	शोभा (79)	पूर्वार्ध	वृश्चिक	नीचांश
प्लूटो	कन्या	13:11:14	उभय	वी[illegible] (4[illegible])	उत्तरार्ध	मेष	बलिष्टांश

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति	विशेष
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	बुध	–––
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	मंगल	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	शुक्र	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	शुक्र	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	गुरू	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	बुध	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	मंगल	मित्र राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	गुरू	मित्र राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	शुक्र	सम राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	मंगल	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	मंगल	सम राशि

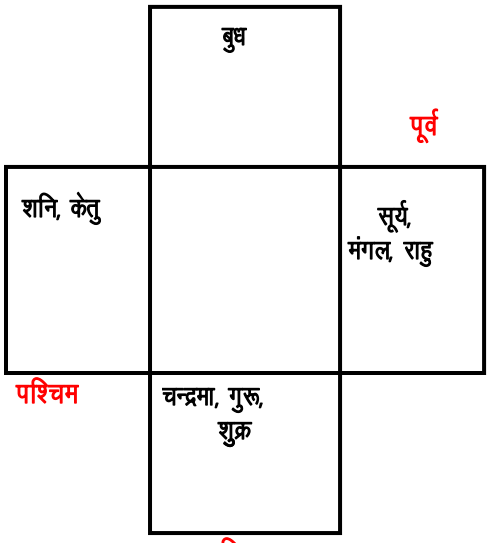

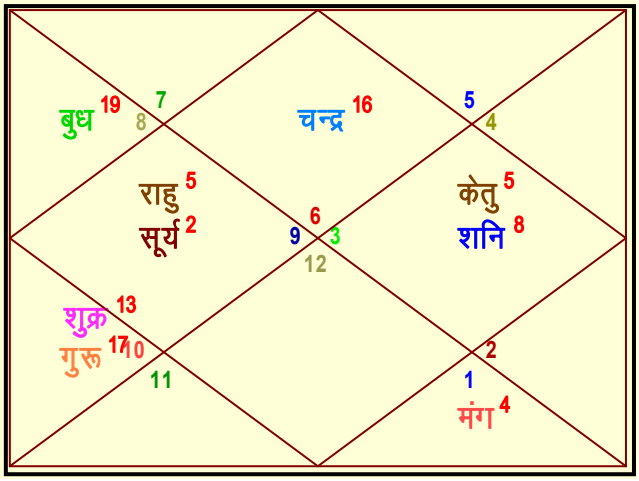

लग्न कुण्डली

नाड़ी ग्रह स्थिति (जन्म)

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	बुध	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, राहु
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, राहु

नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)

ग्रह स्थिति (सी.एस. पटेल)

ग्रह	भावपति	राशिपति	नवांशपति	नक्षत्रपति	64वां नवांश	विशेष
लग्न (कन्या)		बुध (वृश्चि.)	बुध (वृश्चि.)	मंगल (मेष)	धनु	वर्गोत्तम नवांश में
सूर्य (धनु)	12	गुरू (मक.)	मंगल (मेष)	केतु (मिथु.)	कर्क	विष नवांश (सर्प)
चन्द्रमा (कन्या)	11	बुध (वृश्चि.)	शुक्र (मक.)	चन्द्रमा (कन्या)	सिहं	पुष्कर नवांश
मंगल (मेष)	8, 3	मंगल (मेष)	शुक्र (मक.)	केतु (मिथु.)	सिहं	
बुध (वृश्चि.)	10, 1	मंगल (मेष)	गुरू (मक.)	बुध (वृश्चि.)	मीन	
गुरू (मक.)	4, 7	शनि (मिथु.)	बुध (वृश्चि.)	चन्द्रमा (कन्या)	कन्या	
शुक्र (मक.)	9, 2	शनि (मिथु.)	मंगल (मेष)	चन्द्रमा (कन्या)	कर्क	
शनि (मिथु.)	5, 6	बुध (वृश्चि.)	गुरू (मक.)	राहु (धनु)	मीन	
राहु (धनु)		गुरू (मक.)	शुक्र (मक.)	केतु (मिथु.)	सिहं	
केतु (मिथु.)		बुध (वृश्चि.)	मंगल (मेष)	मंगल (मेष)	कुम्भ	
हर्षल (तुला)		शुक्र (मक.)	मंगल (मेष)	मंगल (मेष)	कुम्भ	
नेपच्यून (वृश्चि.)		मंगल (मेष)	मंगल (मेष)	शनि (मिथु.)	कुम्भ	वर्गोत्तम नवांश में
प्लूटो (कन्या)		बुध (वृश्चि.)	मंगल (मेष)	चन्द्रमा (कन्या)	कर्क	
मान्दी (धनु)		गुरू (मक.)	सूर्य (धनु)	शुक्र (मक.)		
भृगुबिन्दु (मेष)		मंगल (मेष)	मंगल (मेष)	शुक्र (मक.)		

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

नाड़ी ग्रह गोचर

18:12:2020 TO 18:06:2021

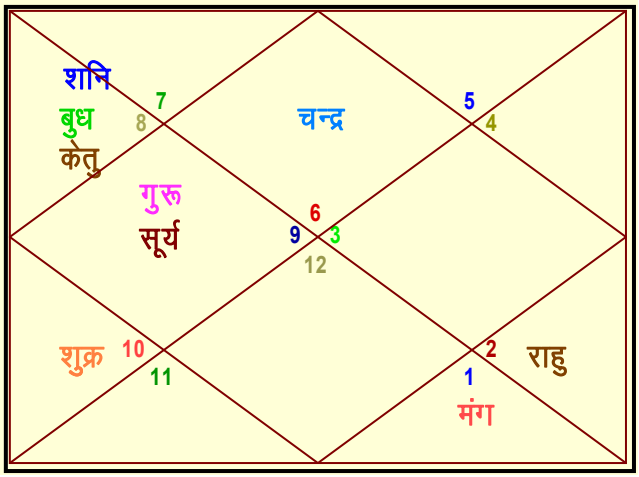

नाड़ी ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., गुरू	केतु, शनि, शुक्र, बुध
चन्द्रमा	राहु, शुक्र, चन्द्र	
मंगल	सूर्य, मंग., गुरू	राहु
बुध	केतु, शनि, बुध	सूर्य, राहु, गुरू
गुरू	सूर्य, मंग., गुरू	केतु, शनि, शुक्र, बुध
शुक्र	राहु, शुक्र, चन्द्र	सूर्य, गुरू
शनि	केतु, शनि, बुध	सूर्य, राहु, गुरू
राहु	राहु, शुक्र, चन्द्र	मंग., केतु, शनि, बुध
केतु	केतु, शनि, बुध	सूर्य, राहु, गुरू

लग्न कुण्डली

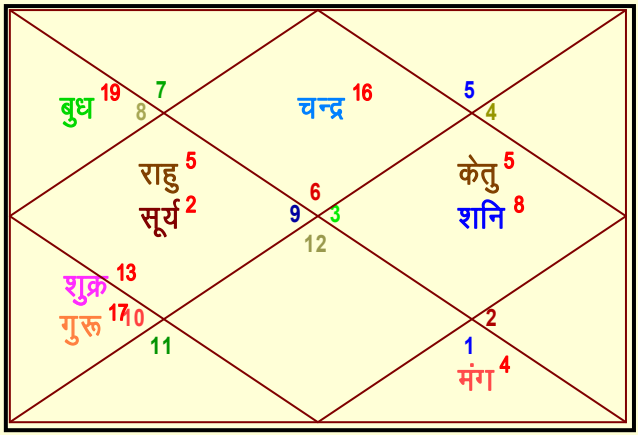

गोचर कुण्डली (14रू01रू2021)

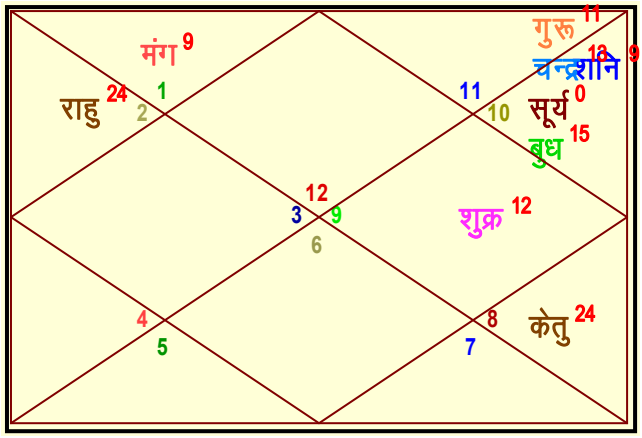

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा (चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.)

दशा	अवधि	से ——— तक
चन्द्रमा दशा	5 व. 5 मा. 26 दि.	18:12:1973 --- 14:06:1979
मंगल दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1979 --- 14:06:1986
राह दशा	18 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1986 --- 13:06:2004
गुरू दशा	16 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2004 --- 13:06:2020
शनि दशा	19 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2020 --- 14:06:2039
बुध दशा	17 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2039 --- 13:06:2056
केतु दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2056 --- 14:06:2063
शुक्र दशा	20 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2063 --- 14:06:2083
सूर्य दशा	6 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2083 --- 14:06:2089

शनि दशा
13:06:2020 – 14:06:2039

अन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
गुरू	01:12:2036

शनि अन्तर
13:06:2020–17:06:2023

प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	मंगल
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	केतु
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	चन्द्रमा
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	केतु
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	बुध
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	चन्द्रमा
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	चन्द्रमा
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	राहु
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	केतु
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	शनि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	चन्द्रमा

नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

नाड़ी ग्रह गोचर

18:12:1973 TO 18:12:1974

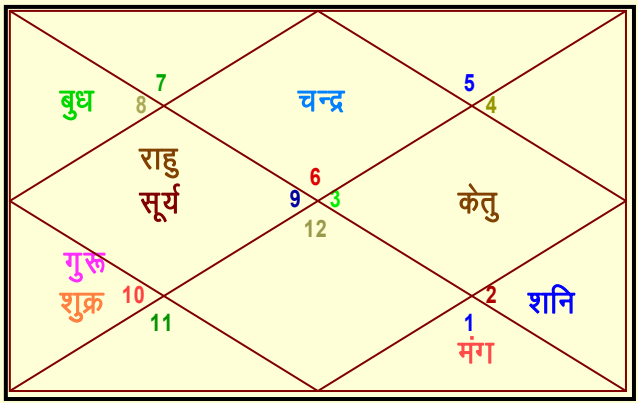

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शनि, शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	शनि
बुध	बुध	सूर्य, राहु, शनि
गुरू	शनि, शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शनि, शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	शनि, शुक्र, चन्द्र, गुरू	मंग., केतु, बुध
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु	सूर्य, राहु, शनि

18:12:1974 TO 18:06:1975

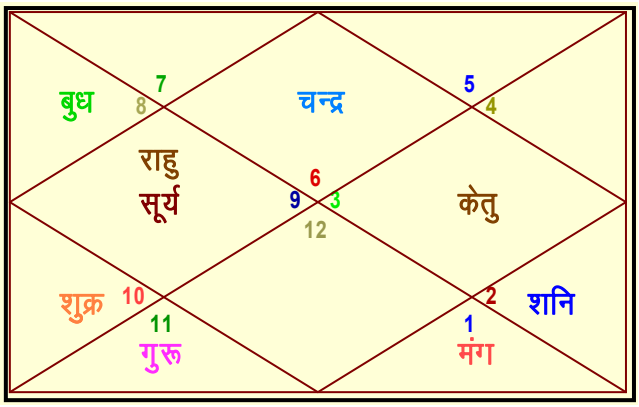

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शुक्र, बुध
चन्द्रमा	शनि, शुक्र, चन्द्र	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	शनि
बुध	बुध	सूर्य, राहु, शनि
गुरू	केतु, गुरू	शुक्र
शुक्र	शनि, शुक्र, चन्द्र	सूर्य, राहु, गुरू
शनि	शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग., केतु, बुध
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शुक्र, बुध
केतु	केतु, गुरू	सूर्य, राहु, शनि

18:06:1975 TO 18:12:1975

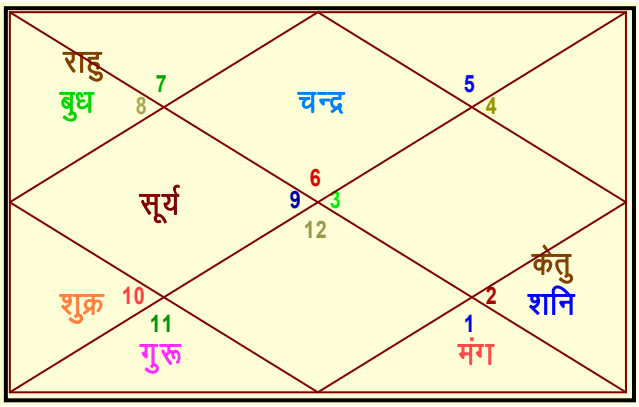

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग.	राहु, शुक्र, बुध
चन्द्रमा	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	
मंगल	सूर्य, मंग.	केतु, शनि
बुध	राहु, बुध	सूर्य, केतु, शनि
गुरू	गुरू	शुक्र
शुक्र	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	सूर्य, गुरू
शनि	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग., राहु, बुध
राहु	राहु, बुध	सूर्य, केतु, शनि
केतु	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग., राहु, बुध

18:12:1975 TO 18:06:1976

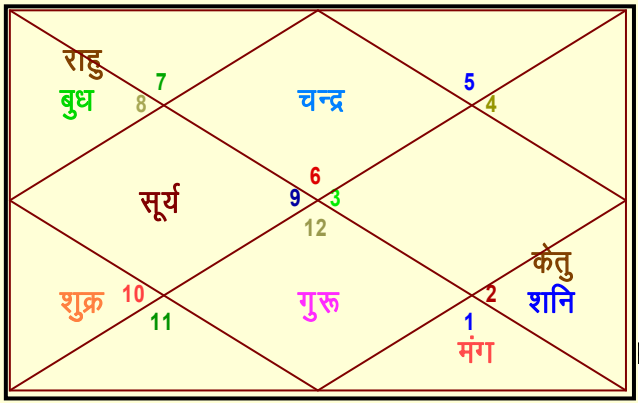

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग.	राहु, शुक्र, बुध
चन्द्रमा	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	गुरू
मंगल	सूर्य, मंग.	केतु, शनि, गुरू
बुध	राहु, गुरू, बुध	सूर्य, केतु, शनि
गुरू	राहु, गुरू, बुध	मंग., चन्द्र
शुक्र	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	सूर्य
शनि	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग., राहु, बुध
राहु	राहु, गुरू, बुध	सूर्य, केतु, शनि
केतु	केतु, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग., राहु, बुध

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

नाड़ी ग्रह गोचर

18:12:1973 TO 18:12:1974

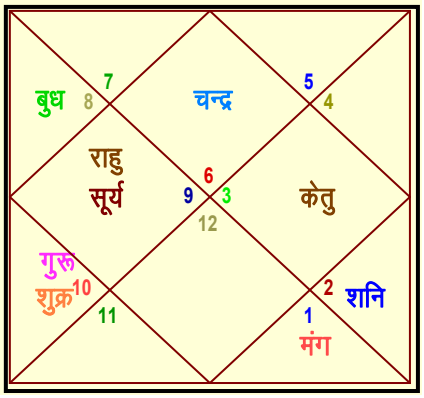

18:12:1974 TO 18:06:1975

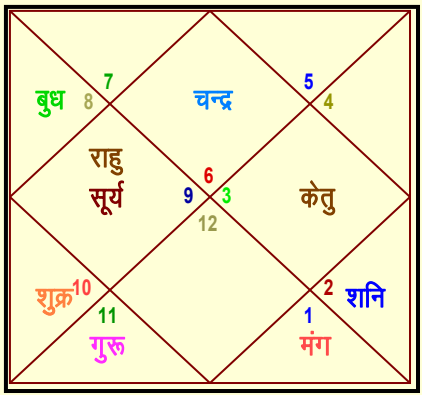

18:06:1975 TO 18:12:1975

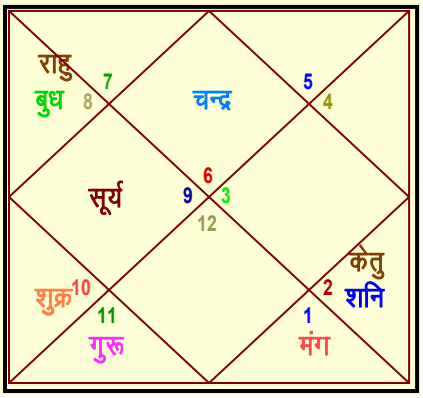

18:12:1975 TO 18:06:1976

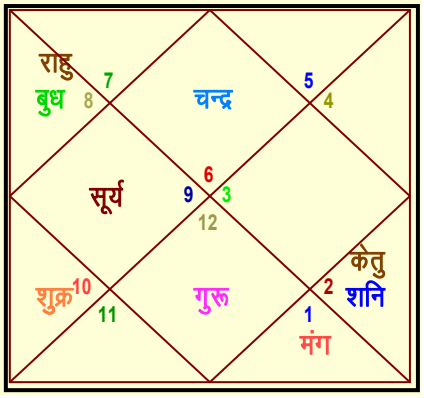

18:06:1976 TO 18:12:1976

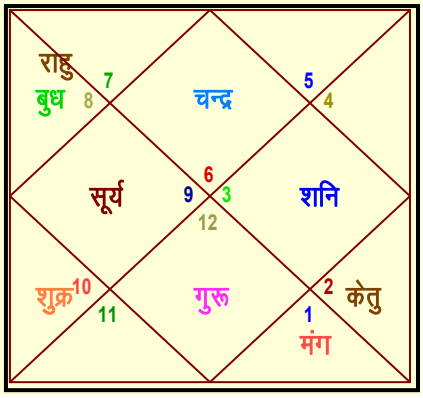

18:12:1976 TO 18:12:1977

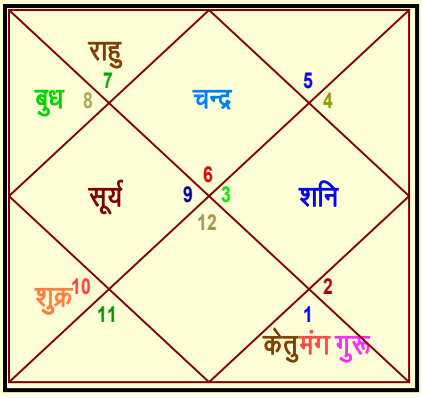

18:12:1977 TO 18:06:1978

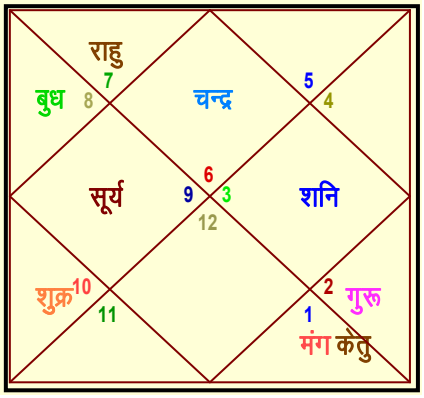

18:06:1978 TO 18:12:1978

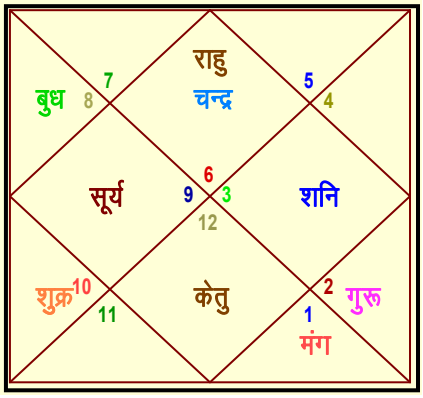

18:12:1978 TO 18:12:1979

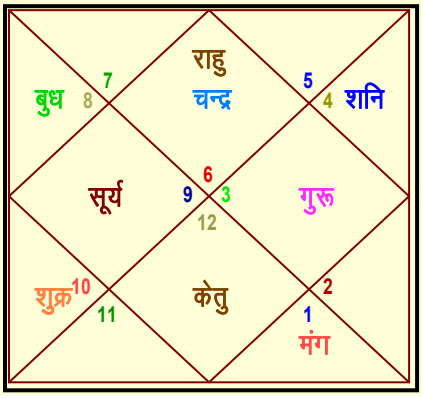

18:12:1979 TO 18:12:1980

18:12:1980 TO 18:06:1981

18:06:1981 TO 18:12:1981

18:12:1981 TO 18:12:1982

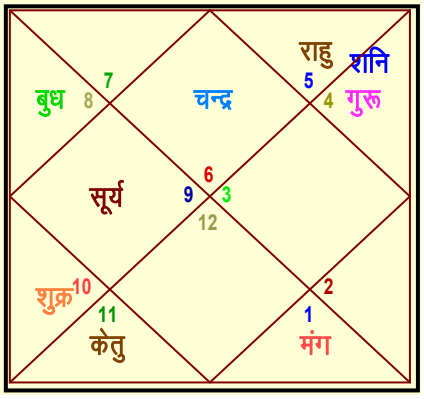

18:12:1982 TO 18:06:1983

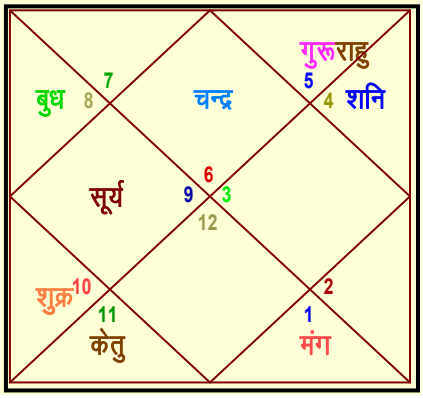

18:06:1983 TO 18:12:1983

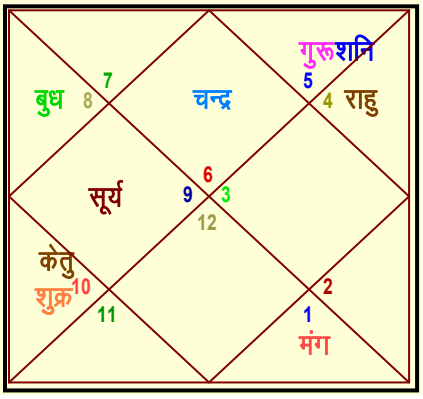

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लग्न कुण्डली

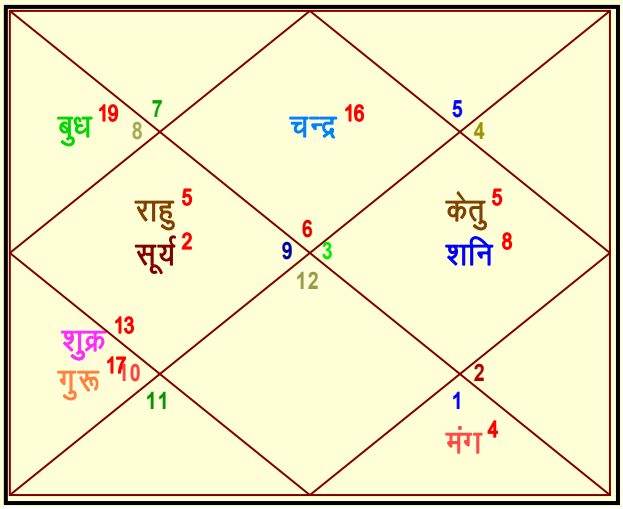

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	मंगल
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	केतु
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	चन्द्रमा
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	केतु
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	बुध
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	चन्द्रमा
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	चन्द्रमा
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	राहु
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	केतु
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	शनि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	चन्द्रमा

भावेश स्थिति

अधिपति	ग्रह	भाव	राशि	विशेष	परिवर्तन
लग्न	बुध	3	वृश्चिक	स्व नक्षत्र	
द्वितीय	शुक्र	5	मकर	मित्र राशि	
तृतीय	मंगल	8	मेष	स्व राशि	
चतुर्थ	गुरू	5	मकर	नीच राशि	
पंचम्	शनि	10	मिथुन	मित्र राशि	
षष्टम्	शनि	10	मिथुन	मित्र राशि	
सप्तम्	गुरू	5	मकर	नीच राशि	
अष्टम्	मंगल	8	मेष	स्व राशि	
नवम्	शुक्र	5	मकर	मित्र राशि	
दशम्	बुध	3	वृश्चिक	स्व नक्षत्र	
एकादश	चन्द्रमा	1	कन्या	स्व नक्षत्र	
द्वादश	सूर्य	4	धनु	मित्र राशि	

नाड़ी ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	बुध	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, राहु
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, राहु
नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)		

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा (चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.)

दशा	अवधि	से ——— तक
चन्द्रमा दशा	5 व. 5 मा. 26 दि.	18:12:1973 --- 14:06:1979
मंगल दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1979 --- 14:06:1986
राह दशा	18 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1986 --- 13:06:2004
गुरू दशा	16 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2004 --- 13:06:2020
शनि दशा	19 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2020 --- 14:06:2039
बुध दशा	17 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2039 --- 13:06:2056
केतु दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2056 --- 14:06:2063
शुक्र दशा	20 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2063 --- 14:06:2083
सूर्य दशा	6 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2083 --- 14:06:2089

शनि दशा
13:06:2020 – 14:06:2039

अन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
गुरू	01:12:2036

शनि अन्तर
13:06:2020–17:06:2023

प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

भृगु नैसर्गिक दशा

दशा	दशारंम्भ	दशा	दशारंम्भ
चन्द्रमा	18:12:1973	राहु	18:12:2045
मंगल	18:12:1977	केतु	18:12:2051
बुध	18:12:1981		
शुक्र	18:12:1986		
गुरू	18:12:1989		
सूर्य	18:12:1995		
चन्द्रमा / शुक्र	18:12:1997		
मंगल	18:12:2001		
बुध	18:12:2005		
शनि	18:12:2009		
राहु	18:12:2015		
चन्द्रमा / राहु	18:12:2019		
सूर्य / चन्द्रमा	18:12:2021		
मंगल	18:12:2025		
गुरू	18:12:2029		
शुक्र / सूर्य	18:12:2033		
बुध	18:12:2037		
शनि	18:12:2041		

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु गोचर कुण्डली

18:08:2020 TO 19:03:2021

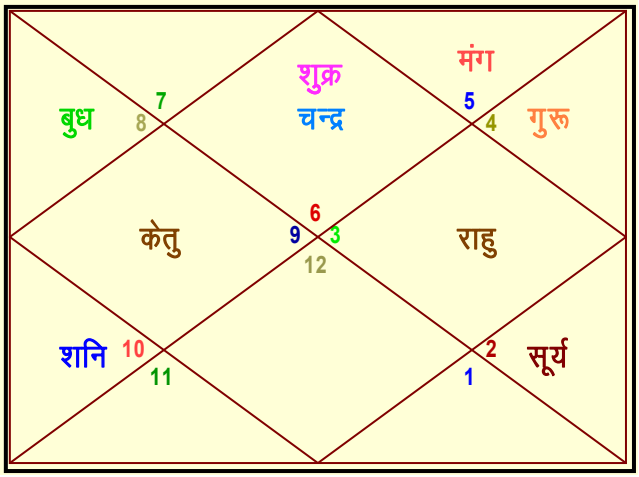

नाड़ी ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, शनि, शुक्र, चन्द्र	राहु, बुध
चन्द्रमा	सूर्य, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग.
मंगल	मंग., केतु	शुक्र, चन्द्र, गुरू
बुध	गुरू, बुध	सूर्य, केतु
गुरू	गुरू, बुध	मंग., राहु, शनि
शुक्र	सूर्य, शनि, शुक्र, चन्द्र	मंग.
शनि	सूर्य, शनि, शुक्र, चन्द्र	केतु, गुरू
राहु	राहु	सूर्य, केतु, गुरू
केतु	मंग., केतु	राहु, शनि, बुध

लग्न कुण्डली

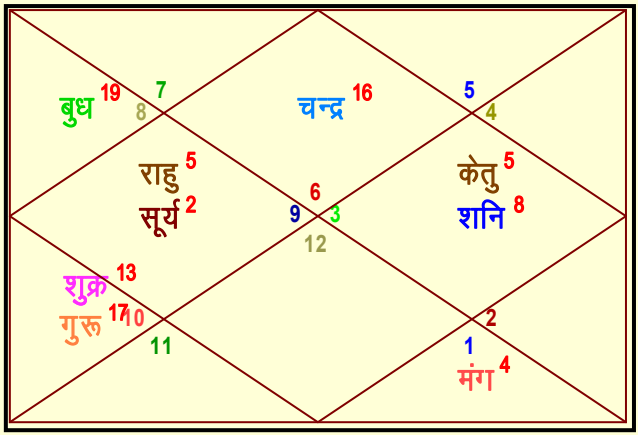

गोचर कुण्डली (14:01:2021)

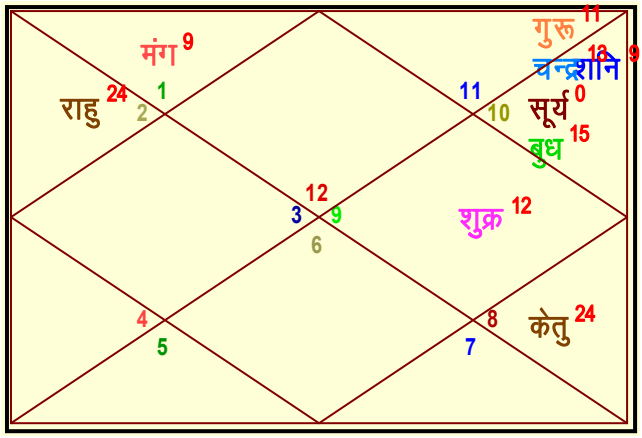

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा (चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.)

दशा	अवधि	से ——— तक
चन्द्रमा दशा	5 व. 5 मा. 26 दि.	18:12:1973 --- 14:06:1979
मंगल दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1979 --- 14:06:1986
राहु दशा	18 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1986 --- 13:06:2004
गुरू दशा	16 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2004 --- 13:06:2020
शनि दशा	19 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2020 --- 14:06:2039
बुध दशा	17 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2039 --- 13:06:2056
केतु दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2056 --- 14:06:2063
शुक्र दशा	20 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2063 --- 14:06:2083
सूर्य दशा	6 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2083 --- 14:06:2089

शनि दशा
13:06:2020 – 14:06:2039

अन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
गुरू	01:12:2036

शनि अन्तर
13:06:2020–17:06:2023

प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	राशिपति	नक्षत्रपति
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	बुध	मंगल
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	गुरू	केतु
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	बुध	चन्द्रमा
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	मंगल	केतु
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	मंगल	बुध
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	शनि	चन्द्रमा
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	शनि	चन्द्रमा
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	बुध	राहु
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	गुरू	केतु
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	बुध	मंगल
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	शुक्र	मंगल
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	मंगल	शनि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	बुध	चन्द्रमा

नक्षत्र परिवर्तन (मंगल–केतु)

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु गोचर कुण्डली

18:12:1973 TO 16:02:1975

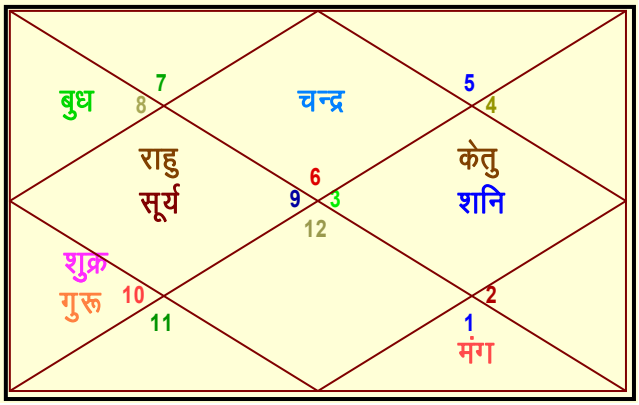

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., राहु	
बुध	बुध	सूर्य, राहु
गुरू	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, राहु
राहु	सूर्य, मंग., राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, राहु

16:02:1975 TO 18:07:1975

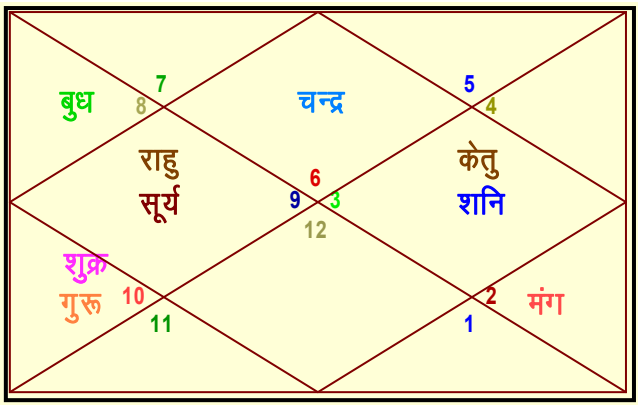

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
चन्द्रमा	मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	केतु, शनि, बुध
बुध	बुध	सूर्य, मंग., राहु
गुरू	मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शुक्र	मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	सूर्य, राहु
शनि	केतु, शनि	सूर्य, मंग., राहु
राहु	सूर्य, राहु	केतु, शनि, शुक्र, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि	सूर्य, मंग., राहु

18:07:1975 TO 18:03:1976

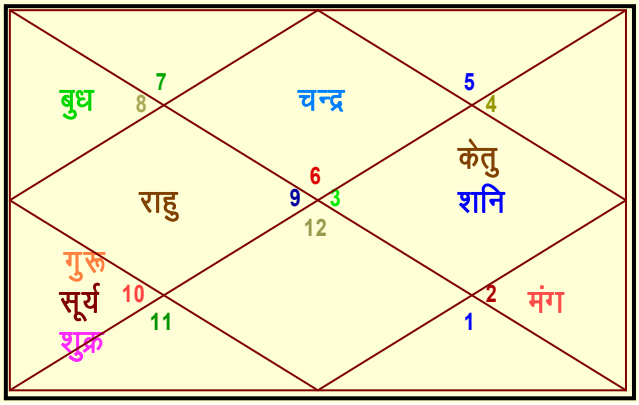

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	राहु
चन्द्रमा	सूर्य, मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	केतु, शनि, बुध
बुध	बुध	मंग., राहु
गुरू	सूर्य, मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	राहु
शुक्र	सूर्य, मंग., शुक्र, चन्द्र, गुरू	राहु
शनि	केतु, शनि	मंग., राहु
राहु	राहु	सूर्य, केतु, शनि, शुक्र,
केतु	केतु, शनि	मंग., राहु

18:03:1976 TO 18:04:1976

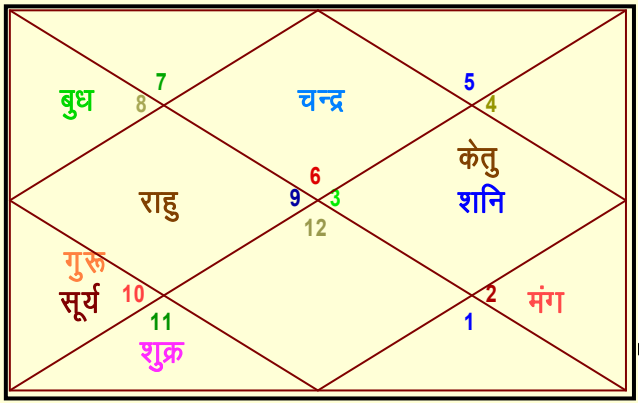

ग्रह स्थिति

ग्रह	से 1,5,9	से 2,7,12
सूर्य	सूर्य, मंग., चन्द्र, गुरू	राहु, शुक्र
चन्द्रमा	सूर्य, मंग., चन्द्र, गुरू	
मंगल	सूर्य, मंग., चन्द्र, गुरू	केतु, शनि, बुध
बुध	बुध	मंग., राहु
गुरू	सूर्य, मंग., चन्द्र, गुरू	राहु, शुक्र
शुक्र	केतु, शनि, शुक्र	सूर्य, गुरू
शनि	केतु, शनि, शुक्र	मंग., राहु
राहु	राहु	सूर्य, केतु, शनि, गुरू, बुध
केतु	केतु, शनि, शुक्र	मंग., राहु

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

भृगु गोचर कुण्डली

18:12:1973 TO 16:02:1975

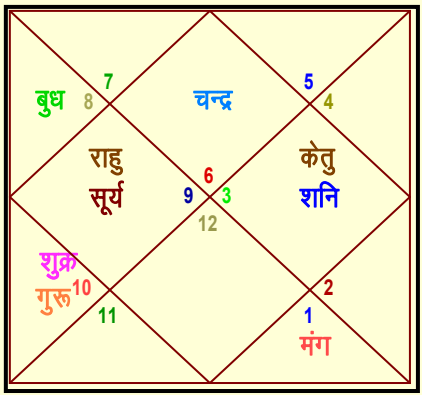

16:02:1975 TO 18:07:1975

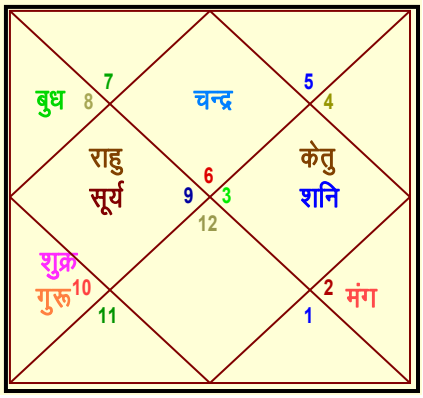

18:07:1975 TO 18:03:1976

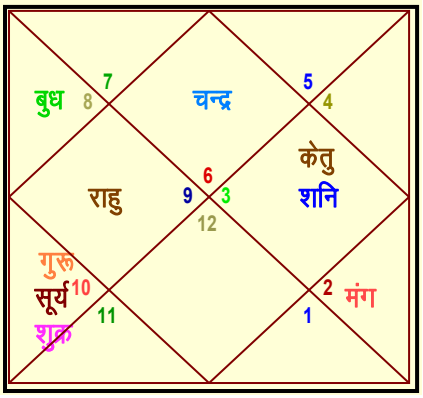

18:03:1976 TO 18:04:1976

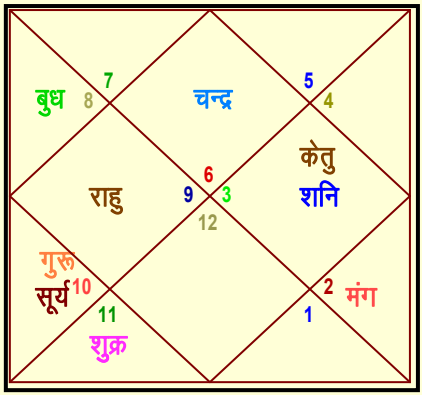

18:04:1976 TO 18:05:1976

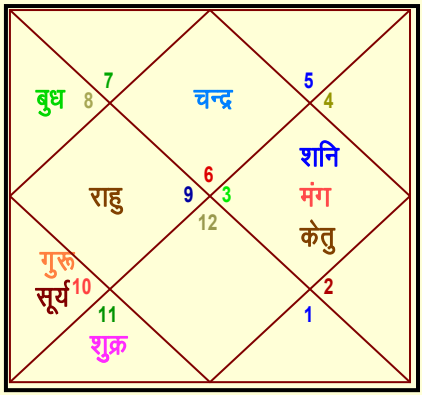

18:05:1976 TO 16:02:1977

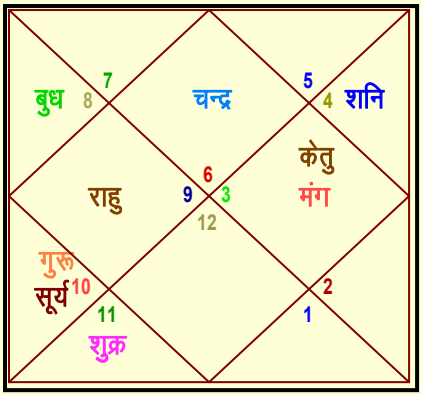

16:02:1977 TO 18:06:1977

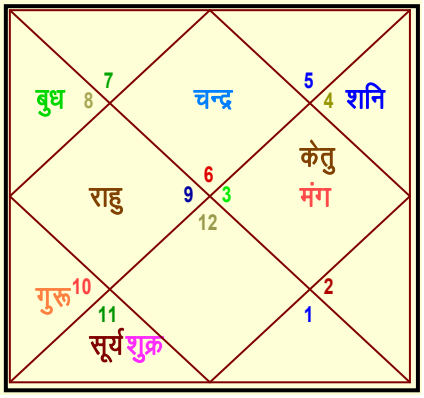

18:06:1977 TO 17:09:1977

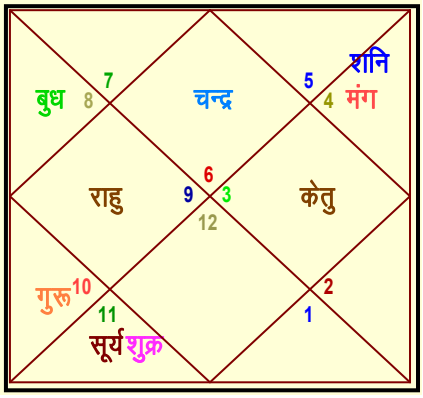

17:09:1977 TO 18:10:1977

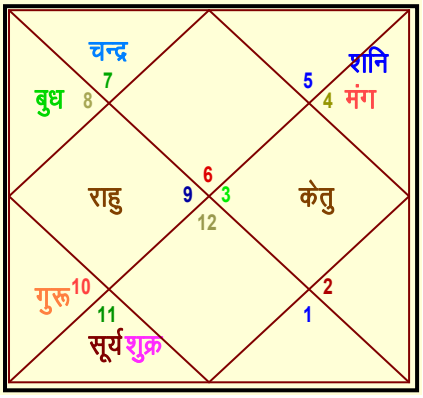

18:10:1977 TO 18:06:1978

18:06:1978 TO 18:08:1978

18:08:1978 TO 17:09:1978

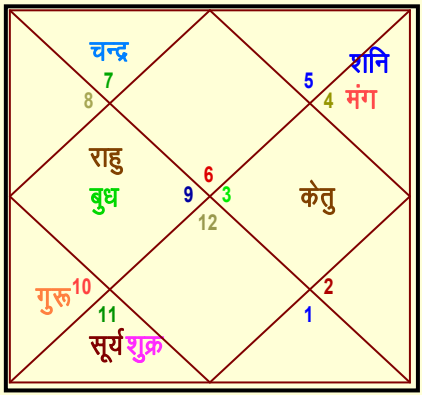

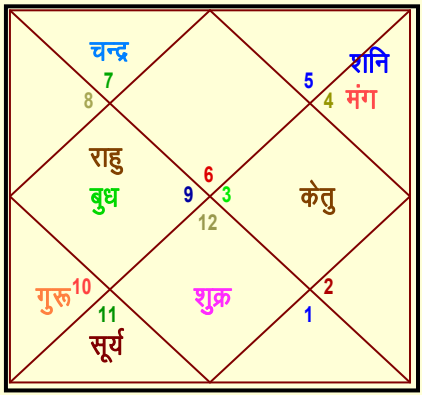

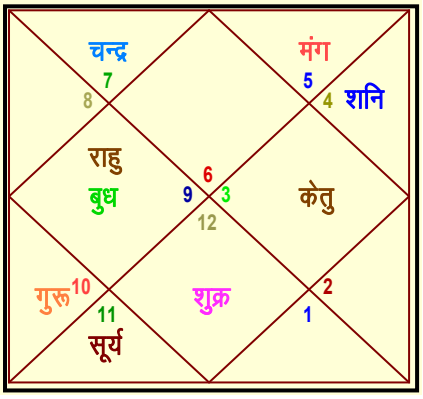

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

लग्न कुण्डली

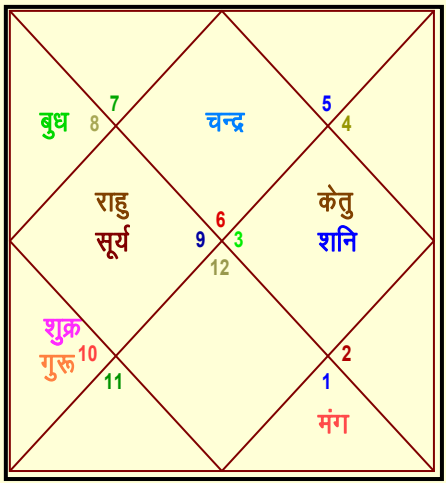

वर्षफल – 48

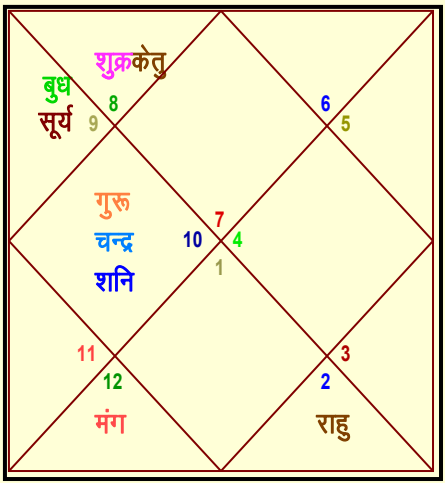

वर्ष पंचाधिकारी

मुन्थेश	सूर्य (8.01)
जन्म लग्नेश	बुध (11.33)
वर्ष लग्नेश	शुक्र (13.03)
त्रिराशिपति	शनि (14.14)
दिनरात्रिपति	शनि (14.14)
वर्षेश	शनि
मुन्था – राशि	सिहं (028:15:29)
मुन्था – भाव	11
मुन्थेश	सूर्य
मुन्थेश – भाव	3

वर्ष प्रवेश दिन – 18:12:2020 वर्ष प्रवेश समय – 02:55

जन्म समय

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा (2)	–
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला (1)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता (2)	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:18	अश्वि. (2)	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (1)	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	17:56:39	श्रव. (3)	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रव. (1)	मित्र राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरि. (1)	मित्र राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला (2)	सम राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृग. (4)	सम राशि

वर्षफल

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	
लग्न	तुला	06:50:41	स्वा. (1)	–
सूर्य	धनु	02:15:51	मूला (1)	मित्र राशि
चन्द्रमा	मकर	14:21:04	श्रव. (2)	स्व नक्षत्र
मंगल	मीन	27:39:44	रेव. (4)	मित्र राशि
बुध अ.	धनु	01:00:11	मूला (1)	सम राशि
गुरू	मकर	05:29:42	उ.षा. (3)	नीच राशि
शुक्र	वृश्चिक	08:37:02	अनु. (2)	सम राशि
शनि	मकर	05:55:36	उ.षा. (3)	स्व राशि
राहु व.	वृष	25:27:35	मृग. (1)	उच्च राशि
केतु व.	वृश्चिक	25:27:35	ज्येष्ठा (3)	उच्च राशि

द्वादश वर्गीय बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
राशि बल	0	0	-1	0	0	-1	+2
होरा बल	+2	+2	0	0	0	-1	0
द्रेक्कन बल	0	-1	+2	0	0	-1	+2
चतुर्थांश बल	0	-1	-1	0	0	-1	+2
पंचमांश बल	0	0	-1	0	-1	-1	-1
षष्टांश बल	0	0	-1	0	-1	-1	-1
सप्तमांश बल	0	-1	-1	0	0	-1	0
अष्टमांश बल	0	+2	-1	0	-1	+2	-1
नवांश बल	0	-1	-1	0	0	0	+2
दसांश बल	0	0	0	0	-1	0	-1
एकादसांश बल	0	0	-1	0	+2	-1	0
द्वादशांश बल	0	0	-1	0	+2	-1	0
कुल बल	**+2**	**0**	**-7**	**0**	**0**	**-7**	**+4**
तुलनात्मक बल	संतोष	सम	बबुरा	सम	सम	बबुरा	अच्छा

पंचवर्गीय बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
क्षेत्र बल	15.00	07.50	22.50	15.00	07.50	22.50	30.00
उच्च बल	05.81	07.93	13.37	11.56	00.06	04.62	11.56
हद्दा बल	07.50	11.25	15.00	07.50	07.50	15.00	07.50
द्रेक्कन बल	02.50	07.50	10.00	10.00	10.00	07.50	02.50
नवांश बल	01.25	03.75	03.75	01.25	01.25	02.50	05.00
कुल बल	**8.01**	**9.48**	**16.16**	**11.33**	**6.58**	**13.03**	**14.14**
तुलनात्मक बल	साधा	साधा	पूर्ण	बली	साधा	बली	बली

हर्ष बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
स्थान बल	0	0	5	0	0	0	0
क्षेत्र बल	0	0	0	0	0	0	5
ओज–युग्म बल	0	0	5	5	5	5	0
दिवा–रात्रि बल	0	5	0	5	0	5	5
कुल बल	**0**	**5**	**10**	**10**	**5**	**10**	**10**
तुलनात्मक बल	निर्बली	अल्प	मध्य	मध्य	अल्प	मध्य	मध्य

पत्ययनी दशा

दशा	अवधि	से ––तक
बुध	0 y.0 m.13	18:12:2020 To 31:12:2020
सूर्य	0 y.0 m.16	31:12:2020 To 17:01:2021
गुरू	0 y.1 m.12	17:01:2021 To 28:02:2021
शनि	0 y.0 m.6 d.	28:02:2021 To 06:03:2021
लग्न	0 y.0 m.12	06:03:2021 To 18:03:2021
शुक्र	0 y.0 m.23	18:03:2021 To 10:04:2021
चन्द्रमा	0 y.2 m.15	10:04:2021 To 25:06:2021
मंगल	0 y.5 m.23	25:06:2021 To 18:12:2021

मुद्दा विंशोत्तरी दशा

दशा	अवधि	से ––तक
राहु	0 y.1 m.24	18:12:2020 To 10:02:2021
गुरू	0 y.1 m.18	10:02:2021 To 31:03:2021
शनि	0 y.1 m.27	31:03:2021 To 28:05:2021
बुध	0 y.1 m.21	28:05:2021 To 19:07:2021
केतु	0 y.0 m.21	19:07:2021 To 09:08:2021
शुक्र	0 y.2 m.0 d.	09:08:2021 To 09:10:2021
सूर्य	0 y.0 m.18	09:10:2021 To 27:10:2021
चन्द्रमा	0 y.1 m.0 d.	27:10:2021 To 26:11:2021
मंगल	0 y.0 m.21	26:11:2021 To 18:12:2021

मुद्दा योगिनी दशा

दशा	से ––तक
मंगला (चन्द्रमा) दशा	18:12:2020 To 28:12:2020
पिंगला (सूर्य) दशा	28:12:2020 To 17:01:2021
धान्या (बृहस्पति) दशा	17:01:2021 To 16:02:2021
भ्रमरी (मंगल) दशा	16:02:2021 To 29:03:2021
भद्रिका (बुध) दशा	29:03:2021 To 19:05:2021
उल्का (शनि) दशा	19:05:2021 To 19:07:2021
सिद्धा (शुक) दशा	19:07:2021 To 28:09:2021
संकटा (राहु) दशा	28:09:2021 To 18:12:2021

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Sample DOB-18:12:1973 TOB-01:45:00 POB-Ballia (up)

लग्न कुण्डली

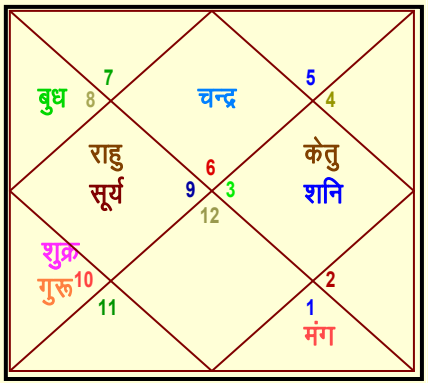

लाल किताब कुण्डली

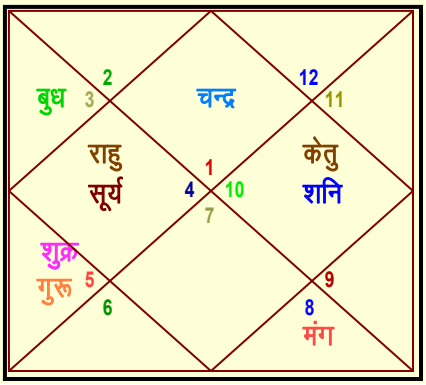

लाल किताब वर्षफल–48

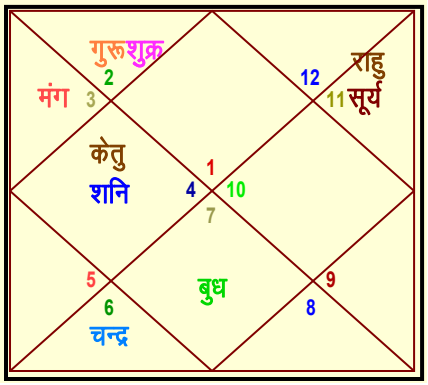

From (18:12:2020 To 17:12:2021)

जन्म समय

ग्रह	भाव	प्रभाव	विशेष
सूर्य	4	ग्रह	
चन्द्रमा	1	ग्रह	कायम
मंगल	8	ग्रह	
बुध	3	ग्रह	पक्के भाव का, भाग्योदय का
गुरू	5	ग्रह	
शुक्र	5	राशि	कायम
शनि	10	ग्रह	पक्के भाव का, भाग्योदय का
राहु	4	राशि	
केतु	10	राशि	कायम

सन्यास योग, पूर्वजन्म योग रहित, सूर्य ग्रहण, मांगलिक, पितृ ऋण, स्वयं का ऋण

वर्षफल

ग्रह	भाव	प्रभाव	विशेष
सूर्य	11	राशि	
चन्द्रमा	6	ग्रह	
मंगल	3	ग्रह	कायम
बुध	7	ग्रह	कायम
गुरू	2	ग्रह	
शुक्र	2	ग्रह	कायम
शनि	4	राशि	
राहु	11	राशि	
केतु	4	ग्रह	कायम

बालिग, पितृ ऋण, मातृ ऋण, बहन या बेटी का ऋण, कुदरती ऋण

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा (चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.)

दशा	अवधि	से –—— तक
चन्द्रमा दशा	5 व. 5 मा. 26 दि.	18:12:1973 --- 14:06:1979
मंगल दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1979 --- 14:06:1986
राहु दशा	18 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:1986 --- 13:06:2004
गुरू दशा	16 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2004 --- 13:06:2020
शनि दशा	19 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2020 --- 14:06:2039
बुध दशा	17 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2039 --- 13:06:2056
केतु दशा	7 व. 0 मा. 0 दि.	13:06:2056 --- 14:06:2063
शुक्र दशा	20 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2063 --- 14:06:2083
सूर्य दशा	6 व. 0 मा. 0 दि.	14:06:2083 --- 14:06:2089

शनि दशा
13:06:2020 – 14:06:2039

अन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	17:06:2023
केतु	24:02:2026
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	16:12:2032
राहु	25:01:2034
गुरू	01:12:2036

शनि अन्तर
13:06:2020–17:06:2023

प्रत्यन्तर्दशा	आरम्भ
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

35 साला चक्र

केतु/शनि	18:12:2020	47.0
केतु/राहु	18:12:2021	48.0
केतु/केतु	18:12:2022	49.0
गुरू/केतु	18:12:2023	50.0
गुरू/गुरू	18:12:2025	52.0
गुरू/सूर्य	18:12:2027	54.0
सूर्य/सूर्य	18:12:2029	56.0
सूर्य/चन्द्रमा	18:08:2030	56.7
सूर्य/मंगल	18:04:2031	57.3
चन्द्रमा/गुरू	18:12:2031	58.0
चन्द्रमा/सूर्य	18:04:2032	58.3
चन्द्रमा/चन्द्रमा	18:08:2032	58.7
शुक्र/मंगल	18:12:2032	59.0
शुक्र/शुक्र	18:12:2033	60.0
शुक्र/बुध	18:12:2034	61.0
मंगल/मंगल	18:12:2035	62.0
मंगल/शनि	18:12:2037	64.0

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : 5 व. 5 मा. 26 दि.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	☽ चन्द्रमा महादशा	5 y.5 m.26 d.	18:12:1973 --- 14:06:1979
2	♂ मंगल महादशा	7 y.0 m.0 d.	14:06:1979 --- 14:06:1986
3	☊ राहु महादशा	18 y.0 m.0 d.	14:06:1986 --- 13:06:2004
4	♃ गुरू महादशा	16 y.0 m.0 d.	13:06:2004 --- 13:06:2020
5	♄ शनि महादशा	19 y.0 m.0 d.	13:06:2020 --- 14:06:2039
6	☿ बुध महादशा	17 y.0 m.0 d.	14:06:2039 --- 13:06:2056
7	☋ केतु महादशा	7 y.0 m.0 d.	13:06:2056 --- 14:06:2063
8	♀ शुक्र महादशा	20 y.0 m.0 d.	14:06:2063 --- 14:06:2083
9	☉ सूर्य महादशा	6 y.0 m.0 d.	14:06:2083 --- 14:06:2089

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
गुरू	
शनि	18:12:1973 - 14:04:1975
बुध	14:04:1975 - 13:09:1976
केतु	13:09:1976 - 14:04:1977
शुक्र	14:04:1977 - 13:12:1978
सूर्य	13:12:1978 - 14:06:1979

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
मंगल	14:06:1979 - 10:11:1979
राहु	10:11:1979 - 28:11:1980
गुरू	28:11:1980 - 04:11:1981
शनि	04:11:1981 - 13:12:1982
बुध	13:12:1982 - 10:12:1983
केतु	10:12:1983 - 08:05:1984
शुक्र	08:05:1984 - 08:07:1985
सूर्य	08:07:1985 - 13:11:1985
चन्द्रमा	13:11:1985 - 14:06:1986

राहु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
राहु	14:06:1986 - 24:02:1989
गुरू	24:02:1989 - 20:07:1991
शनि	20:07:1991 - 27:05:1994
बुध	27:05:1994 - 13:12:1996
केतु	13:12:1996 - 01:01:1998
शुक्र	01:01:1998 - 01:01:2001
सूर्य	01:01:2001 - 25:11:2001
चन्द्रमा	25:11:2001 - 27:05:2003
मंगल	27:05:2003 - 13:06:2004

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
गुरू	13:06:2004 - 01:08:2006
शनि	01:08:2006 - 12:02:2009
बुध	12:02:2009 - 20:05:2011
केतु	20:05:2011 - 25:04:2012
शुक्र	25:04:2012 - 25:12:2014
सूर्य	25:12:2014 - 13:10:2015
चन्द्रमा	13:10:2015 - 12:02:2017
मंगल	12:02:2017 - 19:01:2018
राहु	19:01:2018 - 13:06:2020

शनि दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शनि	13:06:2020 - 17:06:2023
बुध	17:06:2023 - 24:02:2026
केतु	24:02:2026 - 05:04:2027
शुक्र	05:04:2027 - 05:06:2030
सूर्य	05:06:2030 - 17:05:2031
चन्द्रमा	17:05:2031 - 16:12:2032
मंगल	16:12:2032 - 25:01:2034
राहु	25:01:2034 - 01:12:2036
गुरू	01:12:2036 - 14:06:2039

बुध दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
बुध	14:06:2039 - 10:11:2041
केतु	10:11:2041 - 07:11:2042
शुक्र	07:11:2042 - 07:09:2045
सूर्य	07:09:2045 - 14:07:2046
चन्द्रमा	14:07:2046 - 13:12:2047
मंगल	13:12:2047 - 10:12:2048
राहु	10:12:2048 - 29:06:2051
गुरू	29:06:2051 - 04:10:2053
शनि	04:10:2053 - 13:06:2056

केतु दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
केतु	13:06:2056 - 10:11:2056
शुक्र	10:11:2056 - 10:01:2058
सूर्य	10:01:2058 - 17:05:2058
चन्द्रमा	17:05:2058 - 16:12:2058
मंगल	16:12:2058 - 14:05:2059
राहु	14:05:2059 - 01:06:2060
गुरू	01:06:2060 - 08:05:2061
शनि	08:05:2061 - 17:06:2062
बुध	17:06:2062 - 14:06:2063

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
शुक्र	14:06:2063 - 13:10:2066
सूर्य	13:10:2066 - 13:10:2067
चन्द्रमा	13:10:2067 - 14:06:2069
मंगल	14:06:2069 - 14:08:2070
राहु	14:08:2070 - 14:08:2073
गुरू	14:08:2073 - 13:04:2076
शनि	13:04:2076 - 14:06:2079
बुध	14:06:2079 - 14:04:2082
केतु	14:04:2082 - 14:06:2083

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से ---- तक
सूर्य	14:06:2083 - 01:10:2083
चन्द्रमा	01:10:2083 - 01:04:2084
मंगल	01:04:2084 - 07:08:2084
राहु	07:08:2084 - 02:07:2085
गुरू	02:07:2085 - 20:04:2086
शनि	20:04:2086 - 02:04:2087
बुध	02:04:2087 - 06:02:2088
केतु	06:02:2088 - 13:06:2088
शुक्र	13:06:2088 - 14:06:2089

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	17:06:2023
केतु	03:11:2023
शुक्र	30:12:2023
सूर्य	11:06:2024
चन्द्रमा	31:07:2024
मंगल	21:10:2024
राहु	17:12:2024
गुरू	14:05:2025
शनि	22:09:2025

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	24:02:2026
शुक्र	20:03:2026
सूर्य	26:05:2026
चन्द्रमा	16:06:2026
मंगल	19:07:2026
राहु	12:08:2026
गुरू	12:10:2026
शनि	04:12:2026
बुध	07:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	14:10:2027
चन्द्रमा	11:12:2027
मंगल	17:03:2028
राहु	23:05:2028
गुरू	13:11:2028
शनि	16:04:2029
बुध	16:10:2029
केतु	29:03:2030

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	22:06:2030
मंगल	21:07:2030
राहु	10:08:2030
गुरू	01:10:2030
शनि	16:11:2030
बुध	10:01:2031
केतु	28:02:2031
शुक्र	21:03:2031

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	05:07:2031
राहु	07:08:2031
गुरू	02:11:2031
शनि	18:01:2032
बुध	19:04:2032
केतु	10:07:2032
शुक्र	13:08:2032
सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	16:12:2032
राहु	09:01:2033
गुरू	11:03:2033
शनि	04:05:2033
बुध	07:07:2033
केतु	02:09:2033
शुक्र	25:09:2033
सूर्य	02:12:2033
चन्द्रमा	22:12:2033

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	25:01:2034
गुरू	30:06:2034
शनि	16:11:2034
बुध	29:04:2035
केतु	24:09:2035
शुक्र	23:11:2035
सूर्य	15:05:2036
चन्द्रमा	06:07:2036
मंगल	01:10:2036

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	01:12:2036
शनि	03:04:2037
बुध	28:08:2037
केतु	06:01:2038
शुक्र	01:03:2038
सूर्य	02:08:2038
चन्द्रमा	17:09:2038
मंगल	03:12:2038
राहु	26:01:2039

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

शनि अन्तर्दशा (13:06:2020 से 17:06:2023)

शनि प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
शनि	13:06:2020
बुध	11:07:2020
केतु	05:08:2020
शुक्र	15:08:2020
सूर्य	13:09:2020
चन्द्रमा	21:09:2020
मंगल	06:10:2020
राहु	16:10:2020
गुरू	11:11:2020

बुध प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
बुध	05:12:2020
केतु	27:12:2020
शुक्र	05:01:2021
सूर्य	31:01:2021
चन्द्रमा	07:02:2021
मंगल	20:02:2021
राहु	01:03:2021
गुरू	25:03:2021
शनि	15:04:2021

केतु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
केतु	09:05:2021
शुक्र	13:05:2021
सूर्य	24:05:2021
चन्द्रमा	27:05:2021
मंगल	01:06:2021
राहु	05:06:2021
गुरू	14:06:2021
शनि	23:06:2021
बुध	03:07:2021

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	12:08:2021
चन्द्रमा	21:08:2021
मंगल	05:09:2021
राहु	16:09:2021
गुरू	13:10:2021
शनि	07:11:2021
बुध	06:12:2021
केतु	01:01:2022

सूर्य प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	14:01:2022
मंगल	19:01:2022
राहु	22:01:2022
गुरू	30:01:2022
शनि	06:02:2022
बुध	15:02:2022
केतु	23:02:2022
शुक्र	26:02:2022

चन्द्रमा प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	15:03:2022
राहु	20:03:2022
गुरू	03:04:2022
शनि	15:04:2022
बुध	30:04:2022
केतु	12:05:2022
शुक्र	18:05:2022
सूर्य	02:06:2022

मंगल प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
मंगल	07:06:2022
राहु	10:06:2022
गुरू	20:06:2022
शनि	29:06:2022
बुध	09:07:2022
केतु	18:07:2022
शुक्र	21:07:2022
सूर्य	01:08:2022
चन्द्रमा	04:08:2022

राहु प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
राहु	10:08:2022
गुरू	03:09:2022
शनि	25:09:2022
बुध	21:10:2022
केतु	14:11:2022
शुक्र	23:11:2022
सूर्य	21:12:2022
चन्द्रमा	29:12:2022
मंगल	12:01:2023

गुरू प्रत्यन्तर्दशा

सूक्ष्म दशा	से –
गुरू	21:01:2023
शनि	10:02:2023
बुध	05:03:2023
केतु	26:03:2023
शुक्र	03:04:2023
सूर्य	28:04:2023
चन्द्रमा	05:05:2023
मंगल	17:05:2023
राहु	26:05:2023

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

बुध प्रत्यन्तर्दशा (05:12:2020 से 09:05:2021)

बुध सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
बुध	05:12:2020 : 00:22:19AM
केतु	08:12:2020 : 03:30:12AM
शुक्र	09:12:2020 : 10:26:23AM
सूर्य	13:12:2020 : 02:49:47AM
चन्द्रमा	14:12:2020 : 05:20:48AM
मंगल	16:12:2020 : 01:32:29AM
राहु	17:12:2020 : 08:28:40AM
गुरू	20:12:2020 : 04:01:44PM
शनि	23:12:2020 : 02:44:26PM

केतु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
केतु	27:12:2020 : 02:42:40AM
शुक्र	27:12:2020 : 03:26:58PM
सूर्य	29:12:2020 : 03:50:43AM
चन्द्रमा	29:12:2020 : 02:45:51PM
मंगल	30:12:2020 : 08:57:43AM
राहु	30:12:2020 : 09:42:02PM
गुरू	01:01:2021 : 06:22:25AM
शनि	02:01:2021 : 11:24:38AM
बुध	03:01:2021 : 09:53:32PM

शुक्र सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
शुक्र	05:01:2021 : 04:44:39AM
सूर्य	09:01:2021 : 00:26:53PM
चन्द्रमा	10:01:2021 : 07:33:33PM
मंगल	12:01:2021 : 11:24:40PM
राहु	14:01:2021 : 11:42:27AM
गुरू	18:01:2021 : 09:02:28AM
शनि	21:01:2021 : 08:00:16PM
बुध	25:01:2021 : 10:31:23PM
केतु	29:01:2021 : 02:40:17PM

सूर्य सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
सूर्य	31:01:2021 : 02:58:04AM
चन्द्रमा	31:01:2021 : 00:18:04PM
मंगल	01:02:2021 : 03:51:24AM
राहु	01:02:2021 : 02:44:44PM
गुरू	02:02:2021 : 06:44:44PM
शनि	03:02:2021 : 07:38:05PM
बुध	05:02:2021 : 01:11:25AM
केतु	06:02:2021 : 03:38:05AM
शुक्र	06:02:2021 : 02:31:25PM

चन्द्रमा सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
चन्द्रमा	07:02:2021 : 09:38:05PM
मंगल	08:02:2021 : 11:33:39PM
राहु	09:02:2021 : 05:42:32PM
गुरू	11:02:2021 : 04:22:33PM
शनि	13:02:2021 : 09:51:27AM
बुध	15:02:2021 : 11:07:00AM
केतु	17:02:2021 : 07:11:27AM
शुक्र	18:02:2021 : 01:20:21AM
सूर्य	20:02:2021 : 05:11:28AM

मंगल सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
मंगल	20:02:2021 : 08:44:48PM
राहु	21:02:2021 : 09:27:01AM
गुरू	22:02:2021 : 06:07:02PM
शनि	23:02:2021 : 11:09:15PM
बुध	25:02:2021 : 09:38:09AM
केतु	26:02:2021 : 04:29:16PM
शुक्र	27:02:2021 : 05:11:29AM
सूर्य	28:02:2021 : 05:29:16PM
चन्द्रमा	01:03:2021 : 04:22:36AM

राहु सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
राहु	01:03:2021 : 10:31:30PM
गुरू	05:03:2021 : 10:31:30AM
शनि	08:03:2021 : 01:11:31PM
बुध	12:03:2021 : 05:51:32AM
केतु	15:03:2021 : 01:11:32PM
शुक्र	16:03:2021 : 09:51:33PM
सूर्य	20:03:2021 : 07:11:33PM
चन्द्रमा	21:03:2021 : 11:11:34PM
मंगल	23:03:2021 : 09:51:34PM

गुरू सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
गुरू	25:03:2021 : 06:31:34AM
शनि	28:03:2021 : 00:53:48AM
बुध	31:03:2021 : 07:42:42AM
केतु	03:04:2021 : 06:13:49AM
शुक्र	04:04:2021 : 11:16:03AM
सूर्य	07:04:2021 : 10:13:50PM
चन्द्रमा	08:04:2021 : 11:07:10PM
मंगल	10:04:2021 : 04:36:04PM
राहु	11:04:2021 : 09:38:18PM

शनि सुक्ष्म दशा

प्राण दशा	से –
शनि	15:04:2021 : 00:18:18AM
बुध	18:04:2021 : 09:53:52PM
केतु	22:04:2021 : 09:38:20AM
शुक्र	23:04:2021 : 08:07:13PM
सूर्य	27:04:2021 : 10:38:21PM
चन्द्रमा	29:04:2021 : 04:11:41AM
मंगल	01:05:2021 : 05:27:15AM
राहु	02:05:2021 : 03:56:08PM
गुरू	06:05:2021 : 08:36:09AM

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

चन्द्रमा महादशा (18:12:1973 से 14:06:1979)

प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –

शनि अन्तर्दशा

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
				बुध	14:04:1975
		बुध	18:12:1973	केतु	26:06:1975
		केतु	05:03:1974	शुक्र	26:07:1975
		शुक्र	08:04:1974	सूर्य	21:10:1975
		सूर्य	13:07:1974	चन्द्रमा	15:11:1975
		चन्द्रमा	11:08:1974	मंगल	28:12:1975
		मंगल	28:09:1974	राहु	28:01:1976
		राहु	01:11:1974	गुरू	14:04:1976
		गुरू	27:01:1975	शनि	23:06:1976

केतु अन्तर्दशा

शुक्र अन्तर्दशा

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –	प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:09:1976	शुक्र	14:04:1977	सूर्य	13:12:1978
शुक्र	25:09:1976	सूर्य	24:07:1977	चन्द्रमा	22:12:1978
सूर्य	31:10:1976	चन्द्रमा	24:08:1977	मंगल	07:01:1979
चन्द्रमा	10:11:1976	मंगल	13:10:1977	राहु	17:01:1979
मंगल	28:11:1976	राहु	18:11:1977	गुरू	14:02:1979
राहु	11:12:1976	गुरू	17:02:1978	शनि	10:03:1979
गुरू	12:01:1977	शनि	09:05:1978	बुध	08:04:1979
शनि	09:02:1977	बुध	14:08:1978	केतु	04:05:1979
बुध	15:03:1977	केतु	08:11:1978	शुक्र	14:05:1979

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

मंगल महादशा (14:06:1979 से 14:06:1986)

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:1979
राहु	22:06:1979
गुरू	15:07:1979
शनि	04:08:1979
बुध	27:08:1979
केतु	17:09:1979
शुक्र	26:09:1979
सूर्य	21:10:1979
चन्द्रमा	28:10:1979

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	10:11:1979
गुरू	06:01:1980
शनि	27:02:1980
बुध	27:04:1980
केतु	21:06:1980
शुक्र	13:07:1980
सूर्य	15:09:1980
चन्द्रमा	05:10:1980
मंगल	06:11:1980

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	28:11:1980
शनि	12:01:1981
बुध	07:03:1981
केतु	25:04:1981
शुक्र	15:05:1981
सूर्य	10:07:1981
चन्द्रमा	27:07:1981
मंगल	25:08:1981
राहु	14:09:1981

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	04:11:1981
बुध	07:01:1982
केतु	05:03:1982
शुक्र	29:03:1982
सूर्य	04:06:1982
चन्द्रमा	24:06:1982
मंगल	28:07:1982
राहु	21:08:1982
गुरू	20:10:1982

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	13:12:1982
केतु	03:02:1983
शुक्र	24:02:1983
सूर्य	25:04:1983
चन्द्रमा	13:05:1983
मंगल	12:06:1983
राहु	03:07:1983
गुरू	27:08:1983
शनि	14:10:1983

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	10:12:1983
शुक्र	19:12:1983
सूर्य	13:01:1984
चन्द्रमा	20:01:1984
मंगल	02:02:1984
राहु	10:02:1984
गुरू	04:03:1984
शनि	24:03:1984
बुध	16:04:1984

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	08:05:1984
सूर्य	18:07:1984
चन्द्रमा	08:08:1984
मंगल	13:09:1984
राहु	08:10:1984
गुरू	11:12:1984
शनि	06:02:1985
बुध	14:04:1985
केतु	13:06:1985

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	08:07:1985
चन्द्रमा	14:07:1985
मंगल	25:07:1985
राहु	02:08:1985
गुरू	21:08:1985
शनि	07:09:1985
बुध	27:09:1985
केतु	15:10:1985
शुक्र	23:10:1985

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	13:11:1985
मंगल	01:12:1985
राहु	13:12:1985
गुरू	14:01:1986
शनि	11:02:1986
बुध	17:03:1986
केतु	16:04:1986
शुक्र	29:04:1986
सूर्य	03:06:1986

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

राहु महादशा (14:06:1986 से 13:06:2004)

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	14:06:1986
गुरू	09:11:1986
शनि	20:03:1987
बुध	23:08:1987
केतु	10:01:1988
शुक्र	07:03:1988
सूर्य	19:08:1988
चन्द्रमा	07:10:1988
मंगल	29:12:1988

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	24:02:1989
शनि	21:06:1989
बुध	07:11:1989
केतु	11:03:1990
शुक्र	01:05:1990
सूर्य	24:09:1990
चन्द्रमा	07:11:1990
मंगल	19:01:1991
राहु	11:03:1991

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	20:07:1991
बुध	01:01:1992
केतु	28:05:1992
शुक्र	28:07:1992
सूर्य	17:01:1993
चन्द्रमा	10:03:1993
मंगल	05:06:1993
राहु	05:08:1993
गुरू	08:01:1994

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	27:05:1994
केतु	05:10:1994
शुक्र	29:11:1994
सूर्य	03:05:1995
चन्द्रमा	18:06:1995
मंगल	04:09:1995
राहु	28:10:1995
गुरू	16:03:1996
शनि	18:07:1996

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:12:1996
शुक्र	05:01:1997
सूर्य	10:03:1997
चन्द्रमा	29:03:1997
मंगल	30:04:1997
राहु	22:05:1997
गुरू	18:07:1997
शनि	08:09:1997
बुध	07:11:1997

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	01:01:1998
सूर्य	02:07:1998
चन्द्रमा	26:08:1998
मंगल	25:11:1998
राहु	28:01:1999
गुरू	11:07:1999
शनि	04:12:1999
बुध	26:05:2000
केतु	28:10:2000

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	01:01:2001
चन्द्रमा	17:01:2001
मंगल	13:02:2001
राहु	04:03:2001
गुरू	23:04:2001
शनि	06:06:2001
बुध	28:07:2001
केतु	12:09:2001
शुक्र	01:10:2001

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	25:11:2001
मंगल	10:01:2002
राहु	11:02:2002
गुरू	04:05:2002
शनि	16:07:2002
बुध	10:10:2002
केतु	27:12:2002
शुक्र	28:01:2003
सूर्य	29:04:2003

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	27:05:2003
राहु	18:06:2003
गुरू	14:08:2003
शनि	04:10:2003
बुध	04:12:2003
केतु	28:01:2004
शुक्र	19:02:2004
सूर्य	23:04:2004
चन्द्रमा	12:05:2004

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

गुरू महादशा (13:06:2004 से 13:06:2020)

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	13:06:2004
शनि	25:09:2004
बुध	27:01:2005
केतु	17:05:2005
शुक्र	02:07:2005
सूर्य	08:11:2005
चन्द्रमा	17:12:2005
मंगल	20:02:2006
राहु	07:04:2006

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	01:08:2006
बुध	26:12:2006
केतु	06:05:2007
शुक्र	29:06:2007
सूर्य	30:11:2007
चन्द्रमा	15:01:2008
मंगल	01:04:2008
राहु	26:05:2008
गुरू	12:10:2008

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	12:02:2009
केतु	09:06:2009
शुक्र	28:07:2009
सूर्य	12:12:2009
चन्द्रमा	23:01:2010
मंगल	02:04:2010
राहु	20:05:2010
गुरू	21:09:2010
शनि	09:01:2011

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	20:05:2011
शुक्र	09:06:2011
सूर्य	05:08:2011
चन्द्रमा	22:08:2011
मंगल	20:09:2011
राहु	09:10:2011
गुरू	29:11:2011
शनि	14:01:2012
बुध	08:03:2012

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	25:04:2012
सूर्य	05:10:2012
चन्द्रमा	23:11:2012
मंगल	12:02:2013
राहु	10:04:2013
गुरू	03:09:2013
शनि	11:01:2014
बुध	14:06:2014
केतु	30:10:2014

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	25:12:2014
चन्द्रमा	09:01:2015
मंगल	02:02:2015
राहु	19:02:2015
गुरू	04:04:2015
शनि	13:05:2015
बुध	28:06:2015
केतु	09:08:2015
शुक्र	26:08:2015

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	13:10:2015
मंगल	23:11:2015
राहु	21:12:2015
गुरू	04:03:2016
शनि	08:05:2016
बुध	24:07:2016
केतु	01:10:2016
शुक्र	29:10:2016
सूर्य	19:01:2017

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	12:02:2017
राहु	04:03:2017
गुरू	24:04:2017
शनि	08:06:2017
बुध	01:08:2017
केतु	19:09:2017
शुक्र	09:10:2017
सूर्य	04:12:2017
चन्द्रमा	21:12:2017

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	19:01:2018
गुरू	30:05:2018
शनि	24:09:2018
बुध	10:02:2019
केतु	14:06:2019
शुक्र	04:08:2019
सूर्य	28:12:2019
चन्द्रमा	10:02:2020
मंगल	23:04:2020

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

शनि महादशा (13:06:2020 से 14:06:2039)

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:06:2020
बुध	05:12:2020
केतु	09:05:2021
शुक्र	12:07:2021
सूर्य	11:01:2022
चन्द्रमा	07:03:2022
मंगल	07:06:2022
राहु	10:08:2022
गुरू	21:01:2023

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	17:06:2023
केतु	03:11:2023
शुक्र	30:12:2023
सूर्य	11:06:2024
चन्द्रमा	31:07:2024
मंगल	21:10:2024
राहु	17:12:2024
गुरू	14:05:2025
शनि	22:09:2025

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	24:02:2026
शुक्र	20:03:2026
सूर्य	26:05:2026
चन्द्रमा	16:06:2026
मंगल	19:07:2026
राहु	12:08:2026
गुरू	12:10:2026
शनि	04:12:2026
बुध	07:02:2027

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	05:04:2027
सूर्य	14:10:2027
चन्द्रमा	11:12:2027
मंगल	17:03:2028
राहु	23:05:2028
गुरू	13:11:2028
शनि	16:04:2029
बुध	16:10:2029
केतु	29:03:2030

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	05:06:2030
चन्द्रमा	22:06:2030
मंगल	21:07:2030
राहु	10:08:2030
गुरू	01:10:2030
शनि	16:11:2030
बुध	10:01:2031
केतु	28:02:2031
शुक्र	21:03:2031

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	17:05:2031
मंगल	05:07:2031
राहु	07:08:2031
गुरू	02:11:2031
शनि	18:01:2032
बुध	19:04:2032
केतु	10:07:2032
शुक्र	13:08:2032
सूर्य	17:11:2032

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	16:12:2032
राहु	09:01:2033
गुरू	11:03:2033
शनि	04:05:2033
बुध	07:07:2033
केतु	02:09:2033
शुक्र	25:09:2033
सूर्य	02:12:2033
चन्द्रमा	22:12:2033

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	25:01:2034
गुरू	30:06:2034
शनि	16:11:2034
बुध	29:04:2035
केतु	24:09:2035
शुक्र	23:11:2035
सूर्य	15:05:2036
चन्द्रमा	06:07:2036
मंगल	01:10:2036

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	01:12:2036
शनि	03:04:2037
बुध	28:08:2037
केतु	06:01:2038
शुक्र	01:03:2038
सूर्य	02:08:2038
चन्द्रमा	17:09:2038
मंगल	03:12:2038
राहु	26:01:2039

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

बुध महादशा (14:06:2039 से 13:06:2056)

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	14:06:2039
केतु	16:10:2039
शुक्र	07:12:2039
सूर्य	01:05:2040
चन्द्रमा	14:06:2040
मंगल	27:08:2040
राहु	17:10:2040
गुरू	26:02:2041
शनि	24:06:2041

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	10:11:2041
शुक्र	01:12:2041
सूर्य	30:01:2042
चन्द्रमा	17:02:2042
मंगल	20:03:2042
राहु	10:04:2042
गुरू	03:06:2042
शनि	21:07:2042
बुध	16:09:2042

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	07:11:2042
सूर्य	28:04:2043
चन्द्रमा	19:06:2043
मंगल	13:09:2043
राहु	12:11:2043
गुरू	16:04:2044
शनि	01:09:2044
बुध	12:02:2045
केतु	09:07:2045

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	07:09:2045
चन्द्रमा	22:09:2045
मंगल	18:10:2045
राहु	05:11:2045
गुरू	22:12:2045
शनि	01:02:2046
बुध	22:03:2046
केतु	05:05:2046
शुक्र	23:05:2046

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	14:07:2046
मंगल	26:08:2046
राहु	25:09:2046
गुरू	12:12:2046
शनि	19:02:2047
बुध	12:05:2047
केतु	24:07:2047
शुक्र	23:08:2047
सूर्य	17:11:2047

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	13:12:2047
राहु	03:01:2048
गुरू	27:02:2048
शनि	15:04:2048
बुध	12:06:2048
केतु	02:08:2048
शुक्र	23:08:2048
सूर्य	23:10:2048
चन्द्रमा	10:11:2048

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	10:12:2048
गुरू	29:04:2049
शनि	31:08:2049
बुध	25:01:2050
केतु	06:06:2050
शुक्र	30:07:2050
सूर्य	02:01:2051
चन्द्रमा	17:02:2051
मंगल	06:05:2051

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	29:06:2051
शनि	17:10:2051
बुध	25:02:2052
केतु	22:06:2052
शुक्र	09:08:2052
सूर्य	26:12:2052
चन्द्रमा	05:02:2053
मंगल	15:04:2053
राहु	02:06:2053

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	04:10:2053
बुध	09:03:2054
केतु	26:07:2054
शुक्र	21:09:2054
सूर्य	04:03:2055
चन्द्रमा	22:04:2055
मंगल	13:07:2055
राहु	08:09:2055
गुरू	03:02:2056

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

केतु महादशा (13:06:2056 से 14:06:2063)

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	13:06:2056
शुक्र	22:06:2056
सूर्य	17:07:2056
चन्द्रमा	24:07:2056
मंगल	06:08:2056
राहु	14:08:2056
गुरू	06:09:2056
शनि	26:09:2056
बुध	20:10:2056

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	10:11:2056
सूर्य	20:01:2057
चन्द्रमा	10:02:2057
मंगल	18:03:2057
राहु	11:04:2057
गुरू	14:06:2057
शनि	10:08:2057
बुध	16:10:2057
केतु	16:12:2057

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	10:01:2058
चन्द्रमा	16:01:2058
मंगल	27:01:2058
राहु	03:02:2058
गुरू	22:02:2058
शनि	11:03:2058
बुध	01:04:2058
केतु	19:04:2058
शुक्र	26:04:2058

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	17:05:2058
मंगल	04:06:2058
राहु	17:06:2058
गुरू	18:07:2058
शनि	16:08:2058
बुध	19:09:2058
केतु	19:10:2058
शुक्र	31:10:2058
सूर्य	06:12:2058

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	16:12:2058
राहु	25:12:2058
गुरू	16:01:2059
शनि	05:02:2059
बुध	01:03:2059
केतु	22:03:2059
शुक्र	31:03:2059
सूर्य	24:04:2059
चन्द्रमा	02:05:2059

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	14:05:2059
गुरू	11:07:2059
शनि	31:08:2059
बुध	31:10:2059
केतु	24:12:2059
शुक्र	15:01:2060
सूर्य	19:03:2060
चन्द्रमा	08:04:2060
मंगल	10:05:2060

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	01:06:2060
शनि	17:07:2060
बुध	09:09:2060
केतु	27:10:2060
शुक्र	16:11:2060
सूर्य	12:01:2061
चन्द्रमा	29:01:2061
मंगल	26:02:2061
राहु	18:03:2061

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	08:05:2061
बुध	11:07:2061
केतु	07:09:2061
शुक्र	30:09:2061
सूर्य	07:12:2061
चन्द्रमा	27:12:2061
मंगल	30:01:2062
राहु	22:02:2062
गुरू	24:04:2062

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	17:06:2062
केतु	07:08:2062
शुक्र	28:08:2062
सूर्य	28:10:2062
चन्द्रमा	15:11:2062
मंगल	15:12:2062
राहु	05:01:2063
गुरू	28:02:2063
शनि	17:04:2063

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

शुक्र महादशा (14:06:2063 से 14:06:2083)

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	14:06:2063
सूर्य	03:01:2064
चन्द्रमा	04:03:2064
मंगल	13:06:2064
राहु	23:08:2064
गुरू	22:02:2065
शनि	03:08:2065
बुध	12:02:2066
केतु	03:08:2066

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	13:10:2066
चन्द्रमा	01:11:2066
मंगल	01:12:2066
राहु	22:12:2066
गुरू	15:02:2067
शनि	05:04:2067
बुध	02:06:2067
केतु	23:07:2067
शुक्र	14:08:2067

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	13:10:2067
मंगल	03:12:2067
राहु	08:01:2068
गुरू	08:04:2068
शनि	28:06:2068
बुध	03:10:2068
केतु	28:12:2068
शुक्र	02:02:2069
सूर्य	14:05:2069

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	14:06:2069
राहु	09:07:2069
गुरू	10:09:2069
शनि	06:11:2069
बुध	13:01:2070
केतु	14:03:2070
शुक्र	08:04:2070
सूर्य	18:06:2070
चन्द्रमा	09:07:2070

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	14:08:2070
गुरू	25:01:2071
शनि	20:06:2071
बुध	10:12:2071
केतु	14:05:2072
शुक्र	17:07:2072
सूर्य	16:01:2073
चन्द्रमा	11:03:2073
मंगल	11:06:2073

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	14:08:2073
शनि	21:12:2073
बुध	24:05:2074
केतु	09:10:2074
शुक्र	05:12:2074
सूर्य	16:05:2075
चन्द्रमा	04:07:2075
मंगल	23:09:2075
राहु	19:11:2075

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	13:04:2076
बुध	14:10:2076
केतु	27:03:2077
शुक्र	02:06:2077
सूर्य	12:12:2077
चन्द्रमा	08:02:2078
मंगल	15:05:2078
राहु	21:07:2078
गुरू	11:01:2079

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	14:06:2079
केतु	07:11:2079
शुक्र	07:01:2080
सूर्य	27:06:2080
चन्द्रमा	18:08:2080
मंगल	13:11:2080
राहु	12:01:2081
गुरू	16:06:2081
शनि	01:11:2081

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	14:04:2082
शुक्र	09:05:2082
सूर्य	19:07:2082
चन्द्रमा	09:08:2082
मंगल	14:09:2082
राहु	08:10:2082
गुरू	11:12:2082
शनि	06:02:2083
बुध	14:04:2083

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

विंशोत्तरी दशा

सूर्य महादशा (14:06:2083 से 14:06:2089)

सूर्य अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
सूर्य	14:06:2083
चन्द्रमा	19:06:2083
मंगल	28:06:2083
राहु	05:07:2083
गुरू	21:07:2083
शनि	05:08:2083
बुध	22:08:2083
केतु	07:09:2083
शुक्र	13:09:2083

चन्द्रमा अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
चन्द्रमा	01:10:2083
मंगल	16:10:2083
राहु	27:10:2083
गुरू	24:11:2083
शनि	18:12:2083
बुध	16:01:2084
केतु	11:02:2084
शुक्र	21:02:2084
सूर्य	23:03:2084

मंगल अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
मंगल	01:04:2084
राहु	08:04:2084
गुरू	28:04:2084
शनि	15:05:2084
बुध	04:06:2084
केतु	22:06:2084
शुक्र	30:06:2084
सूर्य	21:07:2084
चन्द्रमा	27:07:2084

राहु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
राहु	07:08:2084
गुरू	26:09:2084
शनि	08:11:2084
बुध	31:12:2084
केतु	15:02:2085
शुक्र	06:03:2085
सूर्य	30:04:2085
चन्द्रमा	16:05:2085
मंगल	13:06:2085

गुरू अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
गुरू	02:07:2085
शनि	10:08:2085
बुध	25:09:2085
केतु	06:11:2085
शुक्र	23:11:2085
सूर्य	10:01:2086
चन्द्रमा	25:01:2086
मंगल	18:02:2086
राहु	07:03:2086

शनि अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शनि	20:04:2086
बुध	14:06:2086
केतु	02:08:2086
शुक्र	22:08:2086
सूर्य	19:10:2086
चन्द्रमा	05:11:2086
मंगल	04:12:2086
राहु	25:12:2086
गुरू	15:02:2087

बुध अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
बुध	02:04:2087
केतु	16:05:2087
शुक्र	03:06:2087
सूर्य	25:07:2087
चन्द्रमा	09:08:2087
मंगल	04:09:2087
राहु	22:09:2087
गुरू	08:11:2087
शनि	19:12:2087

केतु अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
केतु	06:02:2088
शुक्र	14:02:2088
सूर्य	06:03:2088
चन्द्रमा	12:03:2088
मंगल	23:03:2088
राहु	30:03:2088
गुरू	19:04:2088
शनि	06:05:2088
बुध	26:05:2088

शुक्र अन्तर्दशा

प्रत्यन्तर्दशा	से –
शुक्र	13:06:2088
सूर्य	13:08:2088
चन्द्रमा	01:09:2088
मंगल	01:10:2088
राहु	22:10:2088
गुरू	16:12:2088
शनि	03:02:2089
बुध	02:04:2089
केतु	23:05:2089

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

क0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ---------- तक
1	♂ मंगल दशा	7 y.1 m.5 d.	18:12:1973--22:01:1981
2	☿ बुध दशा	17 y.0 m.0 d.	22:01:1981--22:01:1998
3	♄ शनि दशा	10 y.0 m.0 d.	22:01:1998--22:01:2008
4	♃ गुरू दशा	19 y.0 m.0 d.	22:01:2008--22:01:2027
5	☊ राहु दशा	12 y.0 m.0 d.	22:01:2027--22:01:2039
6	♀ शुक्र दशा	21 y.0 m.0 d.	22:01:2039--22:01:2060
7	☉ सूर्य दशा	6 y.0 m.0 d.	22:01:2060--22:01:2066
8	☽ चन्द्रमा दशा	15 y.0 m.0 d.	22:01:2066--22:01:2081

अष्टोत्तरी दशा की अर्न्तदशाएं

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	
बुध	18:12:1973
शनि	29:11:1974
गुरू	27:08:1975
राहु	22:01:1977
शुक्र	13:12:1977
सूर्य	03:07:1979
चन्द्रमा	13:12:1979

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	22:01:1981
शनि	26:09:1983
गुरू	23:04:1985
राहु	19:04:1988
शुक्र	11:03:1990
सूर्य	30:06:1993
चन्द्रमा	10:06:1994
मंगल	19:10:1996

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	22:01:1998
गुरू	26:12:1998
राहु	29:09:2000
शुक्र	09:11:2001
सूर्य	20:10:2003
चन्द्रमा	10:05:2004
मंगल	29:09:2005
बुध	27:06:2006

गुरू दशा

अन्तर्दशा	से
गुरू	22:01:2008
राहु	27:05:2011
शुक्र	07:07:2013
सूर्य	17:03:2017
चन्द्रमा	07:04:2018
मंगल	26:11:2020
बुध	23:04:2022
शनि	20:04:2025

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	22:01:2027
शुक्र	23:05:2028
सूर्य	23:09:2030
चन्द्रमा	24:05:2031
मंगल	22:01:2033
बुध	13:12:2033
शनि	02:11:2035
गुरू	13:12:2036

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	22:01:2039
सूर्य	22:02:2043
चन्द्रमा	23:04:2044
मंगल	24:03:2047
बुध	13:10:2048
शनि	01:02:2052
गुरू	12:01:2054
राहु	23:09:2057

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	22:01:2060
चन्द्रमा	23:05:2060
मंगल	24:03:2061
बुध	02:09:2061
शनि	13:08:2062
गुरू	04:03:2063
राहु	23:03:2064
शुक्र	22:01:2064

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	22:01:2066
मंगल	22:02:2068
बुध	03:04:2069
शनि	13:08:2071
गुरू	02:01:2073
राहु	23:08:2075
शुक्र	23:04:2077
सूर्य	23:03:2080

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

चन्द्रमा दशा (22:01:2066 –– 22:01:2081)

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	22:01:2066
मंगल	08:05:2066
बुध	03:07:2066
शनि	31:10:2066
गुरू	09:01:2067
राहु	23:05:2067
शुक्र	16:08:2067
सूर्य	10:01:2068

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:02:2068
बुध	23:03:2068
शनि	26:05:2068
गुरू	03:07:2068
राहु	12:09:2068
शुक्र	27:10:2068
सूर्य	14:01:2069
चन्द्रमा	06:02:2069

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	03:04:2069
शनि	17:08:2069
गुरू	05:11:2069
राहु	05:04:2070
शुक्र	10:07:2070
सूर्य	25:12:2070
चन्द्रमा	10:02:2071
मंगल	10:06:2071

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	13:08:2071
गुरू	29:09:2071
राहु	27:12:2071
शुक्र	22:02:2072
सूर्य	30:05:2072
चन्द्रमा	28:06:2072
मंगल	06:09:2072
बुध	14:10:2072

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	02:01:2073
राहु	20:06:2073
शुक्र	05:10:2073
सूर्य	11:04:2074
चन्द्रमा	03:06:2074
मंगल	15:10:2074
बुध	25:12:2074
शनि	26:05:2075

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:08:2075
शुक्र	30:10:2075
सूर्य	25:02:2076
चन्द्रमा	30:03:2076
मंगल	23:06:2076
बुध	07:08:2076
शनि	11:11:2076
गुरू	06:01:2077

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:04:2077
सूर्य	16:11:2077
चन्द्रमा	15:01:2078
मंगल	12:06:2078
बुध	29:08:2078
शनि	13:02:2079
गुरू	23:05:2079
राहु	26:11:2079

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:03:2080
चन्द्रमा	09:04:2080
मंगल	22:05:2080
बुध	13:06:2080
शनि	31:07:2080
गुरू	28:08:2080
राहु	21:10:2080
शुक्र	24:11:2080

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

मंगल दशा (18:12:1973 –– 22:01:1981)

प्रत्यंतर	से

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	18:12:1973
गुरू	19:12:1973
राहु	10:03:1974
शुक्र	30:04:1974
सूर्य	29:07:1974
चन्द्रमा	23:08:1974
मंगल	26:10:1974

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	29:11:1974
गुरू	24:12:1974
राहु	10:02:1975
शुक्र	12:03:1975
सूर्य	03:05:1975
चन्द्रमा	18:05:1975
मंगल	25:06:1975
बुध	15:07:1975

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	27:08:1975
राहु	25:11:1975
शुक्र	21:01:1976
सूर्य	30:04:1976
चन्द्रमा	29:05:1976
मंगल	08:08:1976
बुध	16:09:1976
शनि	06:12:1976

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	22:01:1977
शुक्र	27:02:1977
सूर्य	01:05:1977
चन्द्रमा	19:05:1977
मंगल	03:07:1977
बुध	28:07:1977
शनि	17:09:1977
गुरू	17:10:1977

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	13:12:1977
सूर्य	02:04:1978
चन्द्रमा	04:05:1978
मंगल	21:07:1978
बुध	02:09:1978
शनि	30:11:1978
गुरू	21:01:1979
राहु	01:05:1979

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	03:07:1979
चन्द्रमा	12:07:1979
मंगल	04:08:1979
बुध	16:08:1979
शनि	11:09:1979
गुरू	26:09:1979
राहु	24:10:1979
शुक्र	11:11:1979

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	13:12:1979
मंगल	07:02:1980
बुध	08:03:1980
शनि	11:05:1980
गुरू	18:06:1980
राहु	28:08:1980
शुक्र	13:10:1980
सूर्य	31:12:1980

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

बुध दशा (22:01:1981 –– 22:01:1998)

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	22:01:1981
शनि	25:06:1981
गुरू	23:09:1981
राहु	14:03:1982
शुक्र	01:07:1982
सूर्य	07:01:1983
चन्द्रमा	02:03:1983
मंगल	16:07:1983

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	26:09:1983
गुरू	18:11:1983
राहु	27:02:1984
शुक्र	01:05:1984
सूर्य	21:08:1984
चन्द्रमा	22:09:1984
मंगल	11:12:1984
बुध	23:01:1985

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	23:04:1985
राहु	02:11:1985
शुक्र	03:03:1986
सूर्य	01:10:1986
चन्द्रमा	01:12:1986
मंगल	01:05:1987
बुध	21:07:1987
शनि	09:01:1988

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	19:04:1988
शुक्र	05:07:1988
सूर्य	17:11:1988
चन्द्रमा	25:12:1988
मंगल	31:03:1989
बुध	21:05:1989
शनि	06:09:1989
गुरू	09:11:1989

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	11:03:1990
सूर्य	31:10:1990
चन्द्रमा	06:01:1991
मंगल	23:06:1991
बुध	20:09:1991
शनि	28:03:1992
गुरू	18:07:1992
राहु	16:02:1993

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	30:06:1993
चन्द्रमा	19:07:1993
मंगल	05:09:1993
बुध	01:10:1993
शनि	24:11:1993
गुरू	26:12:1993
राहु	24:02:1994
शुक्र	04:04:1994

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:06:1994
मंगल	08:10:1994
बुध	10:12:1994
शनि	25:04:1995
गुरू	14:07:1995
राहु	12:12:1995
शुक्र	17:03:1996
सूर्य	01:09:1996

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	19:10:1996
बुध	23:11:1996
शनि	03:02:1997
गुरू	18:03:1997
राहु	06:06:1997
शुक्र	28:07:1997
सूर्य	25:10:1997
चन्द्रमा	19:11:1997

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

शनि दशा (22:01:1998 –– 22:01:2008)

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	22:01:1998
गुरू	23:02:1998
राहु	23:04:1998
शुक्र	31:05:1998
सूर्य	04:08:1998
चन्द्रमा	23:08:1998
मंगल	09:10:1998
बुध	03:11:1998

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	26:12:1998
राहु	18:04:1999
शुक्र	29:06:1999
सूर्य	31:10:1999
चन्द्रमा	06:12:1999
मंगल	04:03:2000
बुध	21:04:2000
शनि	31:07:2000

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	29:09:2000
शुक्र	13:11:2000
सूर्य	31:01:2001
चन्द्रमा	23:02:2001
मंगल	20:04:2001
बुध	20:05:2001
शनि	23:07:2001
गुरू	30:08:2001

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	09:11:2001
सूर्य	27:03:2002
चन्द्रमा	05:05:2002
मंगल	12:08:2002
बुध	03:10:2002
शनि	23:01:2003
गुरू	30:03:2003
राहु	02:08:2003

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	20:10:2003
चन्द्रमा	31:10:2003
मंगल	28:11:2003
बुध	13:12:2003
शनि	14:01:2004
गुरू	02:02:2004
राहु	09:03:2004
शुक्र	31:03:2004

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	10:05:2004
मंगल	19:07:2004
बुध	26:08:2004
शनि	14:11:2004
गुरू	31:12:2004
राहु	30:03:2005
शुक्र	26:05:2005
सूर्य	01:09:2005

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	29:09:2005
बुध	19:10:2005
शनि	01:12:2005
गुरू	26:12:2005
राहु	12:02:2006
शुक्र	14:03:2006
सूर्य	05:05:2006
चन्द्रमा	20:05:2006

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	27:06:2006
शनि	25:09:2006
गुरू	17:11:2006
राहु	26:02:2007
शुक्र	01:05:2007
सूर्य	21:08:2007
चन्द्रमा	22:09:2007
मंगल	11:12:2007

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

गुरू दशा (22:01:2008 — 22:01:2027)

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	22:01:2008
राहु	25:08:2008
शुक्र	07:01:2009
सूर्य	02:09:2009
चन्द्रमा	08:11:2009
मंगल	27:04:2010
बुध	26:07:2010
शनि	03:02:2011

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	27:05:2011
शुक्र	21:08:2011
सूर्य	18:01:2012
चन्द्रमा	01:03:2012
मंगल	16:06:2012
बुध	12:08:2012
शनि	12:12:2012
गुरू	21:02:2013

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	07:07:2013
सूर्य	26:03:2014
चन्द्रमा	09:06:2014
मंगल	13:12:2014
बुध	23:03:2015
शनि	21:10:2015
गुरू	23:02:2016
राहु	18:10:2016

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	17:03:2017
चन्द्रमा	08:04:2017
मंगल	31:05:2017
बुध	29:06:2017
शनि	28:08:2017
गुरू	03:10:2017
राहु	10:12:2017
शुक्र	22:01:2018

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	07:04:2018
मंगल	18:08:2018
बुध	29:10:2018
शनि	29:03:2019
गुरू	27:06:2019
राहु	13:12:2019
शुक्र	29:03:2020
सूर्य	03:10:2020

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	26:11:2020
बुध	03:01:2021
शनि	25:03:2021
गुरू	11:05:2021
राहु	10:08:2021
शुक्र	06:10:2021
सूर्य	14:01:2022
चन्द्रमा	11:02:2022

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	23:04:2022
शनि	12:10:2022
गुरू	21:01:2023
राहु	01:08:2023
शुक्र	01:12:2023
सूर्य	30:06:2024
चन्द्रमा	30:08:2024
मंगल	29:01:2025

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	20:04:2025
गुरू	19:06:2025
राहु	10:10:2025
शुक्र	20:12:2025
सूर्य	24:04:2026
चन्द्रमा	29:05:2026
मंगल	27:08:2026
बुध	13:10:2026

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

राहु दशा (22:01:2027 –– 22:01:2039)

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	22:01:2027
शुक्र	17:03:2027
सूर्य	20:06:2027
चन्द्रमा	17:07:2027
मंगल	23:09:2027
बुध	29:10:2027
शनि	13:01:2028
गुरू	27:02:2028

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:05:2028
सूर्य	05:11:2028
चन्द्रमा	23:12:2028
मंगल	20:04:2029
बुध	22:06:2029
शनि	03:11:2029
गुरू	21:01:2030
राहु	20:06:2030

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:09:2030
चन्द्रमा	06:10:2030
मंगल	09:11:2030
बुध	27:11:2030
शनि	04:01:2031
गुरू	27:01:2031
राहु	11:03:2031
शुक्र	07:04:2031

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	24:05:2031
मंगल	16:08:2031
बुध	30:09:2031
शनि	04:01:2032
गुरू	01:03:2032
राहु	16:06:2032
शुक्र	23:08:2032
सूर्य	19:12:2032

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:01:2033
बुध	15:02:2033
शनि	07:04:2033
गुरू	07:05:2033
राहु	03:07:2033
शुक्र	09:08:2033
सूर्य	11:10:2033
चन्द्रमा	29:10:2033

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	13:12:2033
शनि	31:03:2034
गुरू	03:06:2034
राहु	02:10:2034
शुक्र	18:12:2034
सूर्य	01:05:2035
चन्द्रमा	08:06:2035
मंगल	12:09:2035

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	02:11:2035
गुरू	10:12:2035
राहु	19:02:2036
शुक्र	04:04:2036
सूर्य	22:06:2036
चन्द्रमा	15:07:2036
मंगल	10:09:2036
बुध	10:10:2036

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	13:12:2036
राहु	27:04:2037
शुक्र	22:07:2037
सूर्य	19:12:2037
चन्द्रमा	31:01:2038
मंगल	18:05:2038
बुध	14:07:2038
शनि	12:11:2038

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

शुक्र दशा (22:01:2039 — 22:01:2060)

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	22:01:2039
सूर्य	08:11:2039
चन्द्रमा	30:01:2040
मंगल	25:08:2040
बुध	13:12:2040
शनि	05:08:2041
गुरू	21:12:2041
राहु	09:09:2042

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	22:02:2043
चन्द्रमा	17:03:2043
मंगल	15:05:2043
बुध	16:06:2043
शनि	22:08:2043
गुरू	30:09:2043
राहु	14:12:2043
शुक्र	31:01:2044

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	23:04:2044
मंगल	18:09:2044
बुध	06:12:2044
शनि	23:05:2045
गुरू	29:08:2045
राहु	05:03:2046
शुक्र	01:07:2046
सूर्य	24:01:2047

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	24:03:2047
बुध	05:05:2047
शनि	03:08:2047
गुरू	24:09:2047
राहु	02:01:2048
शुक्र	05:03:2048
सूर्य	24:06:2048
चन्द्रमा	26:07:2048

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	13:10:2048
शनि	21:04:2049
गुरू	10:08:2049
राहु	11:03:2050
शुक्र	23:07:2050
सूर्य	14:03:2051
चन्द्रमा	20:05:2051
मंगल	04:11:2051

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	01:02:2052
गुरू	07:04:2052
राहु	11:08:2052
शुक्र	29:10:2052
सूर्य	16:03:2053
चन्द्रमा	24:04:2053
मंगल	01:08:2053
बुध	22:09:2053

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	12:01:2054
राहु	06:09:2054
शुक्र	03:02:2055
सूर्य	23:10:2055
चन्द्रमा	06:01:2056
मंगल	12:07:2056
बुध	20:10:2056
शनि	21:05:2057

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:09:2057
शुक्र	26:12:2057
सूर्य	10:06:2058
चन्द्रमा	27:07:2058
मंगल	22:11:2058
बुध	24:01:2059
शनि	08:06:2059
गुरू	25:08:2059

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

सूर्य दशा (22:01:2060 –– 22:01:2066)

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	22:01:2060
चन्द्रमा	29:01:2060
मंगल	15:02:2060
बुध	24:02:2060
शनि	14:03:2060
गुरू	26:03:2060
राहु	16:04:2060
शुक्र	30:04:2060

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	23:05:2060
मंगल	05:07:2060
बुध	27:07:2060
शनि	13:09:2060
गुरू	12:10:2060
राहु	04:12:2060
शुक्र	07:01:2061
सूर्य	07:03:2061

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	24:03:2061
बुध	05:04:2061
शनि	01:05:2061
गुरू	16:05:2061
राहु	13:06:2061
शुक्र	01:07:2061
सूर्य	02:08:2061
चन्द्रमा	11:08:2061

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	02:09:2061
शनि	27:10:2061
गुरू	27:11:2061
राहु	27:01:2062
शुक्र	06:03:2062
सूर्य	12:05:2062
चन्द्रमा	01:06:2062
मंगल	18:07:2062

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	13:08:2062
गुरू	01:09:2062
राहु	06:10:2062
शुक्र	29:10:2062
सूर्य	07:12:2062
चन्द्रमा	19:12:2062
मंगल	16:01:2063
बुध	31:01:2063

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	04:03:2063
राहु	11:05:2063
शुक्र	22:06:2063
सूर्य	05:09:2063
चन्द्रमा	27:09:2063
मंगल	19:11:2063
बुध	18:12:2063
शनि	17:02:2064

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:03:2064
शुक्र	19:04:2064
सूर्य	06:06:2064
चन्द्रमा	19:06:2064
मंगल	23:07:2064
बुध	10:08:2064
शनि	18:09:2064
गुरू	10:10:2064

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	22:11:2064
सूर्य	13:02:2065
चन्द्रमा	09:03:2065
मंगल	07:05:2065
बुध	08:06:2065
शनि	14:08:2065
गुरू	22:09:2065
राहु	06:12:2065

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व. 1 मा. 5 दि.

चन्द्रमा दशा (22:01:2066 –– 22:01:2081)

चन्द्रमा अन्तर

प्रत्यंतर	से
चन्द्रमा	22:01:2066
मंगल	08:05:2066
बुध	03:07:2066
शनि	31:10:2066
गुरू	09:01:2067
राहु	23:05:2067
शुक्र	16:08:2067
सूर्य	10:01:2068

मंगल अन्तर

प्रत्यंतर	से
मंगल	22:02:2068
बुध	23:03:2068
शनि	26:05:2068
गुरू	03:07:2068
राहु	12:09:2068
शुक्र	27:10:2068
सूर्य	14:01:2069
चन्द्रमा	06:02:2069

बुध अन्तर

प्रत्यंतर	से
बुध	03:04:2069
शनि	17:08:2069
गुरू	05:11:2069
राहु	05:04:2070
शुक्र	10:07:2070
सूर्य	25:12:2070
चन्द्रमा	10:02:2071
मंगल	10:06:2071

शनि अन्तर

प्रत्यंतर	से
शनि	13:08:2071
गुरू	29:09:2071
राहु	27:12:2071
शुक्र	22:02:2072
सूर्य	30:05:2072
चन्द्रमा	28:06:2072
मंगल	06:09:2072
बुध	14:10:2072

गुरू अन्तर

प्रत्यंतर	से
गुरू	02:01:2073
राहु	20:06:2073
शुक्र	05:10:2073
सूर्य	11:04:2074
चन्द्रमा	03:06:2074
मंगल	15:10:2074
बुध	25:12:2074
शनि	26:05:2075

राहु अन्तर

प्रत्यंतर	से
राहु	23:08:2075
शुक्र	30:10:2075
सूर्य	25:02:2076
चन्द्रमा	30:03:2076
मंगल	23:06:2076
बुध	07:08:2076
शनि	11:11:2076
गुरू	06:01:2077

शुक्र अन्तर

प्रत्यंतर	से
शुक्र	23:04:2077
सूर्य	16:11:2077
चन्द्रमा	15:01:2078
मंगल	12:06:2078
बुध	29:08:2078
शनि	13:02:2079
गुरू	23:05:2079
राहु	26:11:2079

सूर्य अन्तर

प्रत्यंतर	से
सूर्य	23:03:2080
चन्द्रमा	09:04:2080
मंगल	22:05:2080
बुध	13:06:2080
शनि	31:07:2080
गुरू	28:08:2080
राहु	21:10:2080
शुक्र	24:11:2080

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अष्टोत्तरी दशा

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से –— तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	मंगल (हस्ता)	1 y.1 m.5 d.	18:12:1973 -- 22:01:1975	170:43:15
2	मंगल (चित्रा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1975 -- 22:01:1977	009:24:36
3	मंगल (स्वाति)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1977 -- 22:01:1979	249:52:53
4	मंगल (विशाखा)	2 y.0 m.0 d.	22:01:1979 -- 22:01:1981	292:38:57
5	बुध (अनुराधा)	5 y.8 m.0 d.	22:01:1981 -- 23:09:1986	298:03:58
6	बुध (ज्येष्ठा)	5 y.8 m.0 d.	23:09:1986 -- 23:05:1992	099:42:48
7	बुध (मूला)	5 y.8 m.0 d.	23:05:1992 -- 22:01:1998	295:01:59
8	शनि (पूर्वाषाढ़)	2 y.6 m.0 d.	22:01:1998 -- 23:07:2000	351:12:50
9	शनि (उत्तराषाढ़)	2 y.6 m.0 d.	23:07:2000 -- 22:01:2003	310:28:22
10	शनि (अभिजीत)	2 y.6 m.0 d.	22:01:2003 -- 24:07:2005	310:28:22
11	शनि (श्रवण)	2 y.6 m.0 d.	24:07:2005 -- 22:01:2008	234:13:31
12	गुरू (धनिष्ठा)	6 y.4 m.0 d.	22:01:2008 -- 24:05:2014	292:38:57
13	गुरू (शतभिषा)	6 y.4 m.0 d.	24:05:2014 -- 22:09:2020	173:07:14
14	गुरू (पूर्वाभाद्र)	6 y.4 m.0 d.	22:09:2020 -- 22:01:2027	215:53:18
15	राहु (उत्तरभाद्र)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2027 -- 22:01:2030	313:23:08
16	राहु (रेवाति)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2030 -- 22:01:2033	115:01:59
17	राहु (अश्विनी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2033 -- 22:01:2036	310:21:10
18	राहु (भरणी)	3 y.0 m.0 d.	22:01:2036 -- 22:01:2039	168:10:51
19	शुक्र (कृतिका)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2039 -- 22:01:2046	165:16:05
20	शुक्र (रोहिणी)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2046 -- 22:01:2053	089:01:14
21	शुक्र (मृगशिरा)	7 y.0 m.0 d.	22:01:2053 -- 22:01:2060	287:42:34
22	सूर्य (अरिद्रा)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2060 -- 24:07:2061	127:26:24
23	सूर्य (पुनर्वसु)	1 y.6 m.0 d.	24:07:2061 -- 22:01:2063	170:12:28
24	सूर्य (पुष्य)	1 y.6 m.0 d.	22:01:2063 -- 23:07:2064	310:28:22
25	सूर्य (अश्लेषा)	1 y.6 m.0 d.	23:07:2064 -- 22:01:2066	112:07:13
26	चन्द्रमा (मघा)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2066 -- 22:01:2071	231:11:32
27	चन्द्रमा (पुर्वफाल्गुनी)	5 y.0 m.0 d.	22:01:2071 -- 22:01:2076	089:01:14

(विशेष नोट – घटनाओं के समय की सटीक जानकारी और स्पष्ट परिणाम के लिए इस दशा के लिए केवल एन. सी. लाहिरी अयनांश का प्रयोग करना चाहिए।)

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

योगिनी दशा चक्र –1
(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व. 4 मा. 21 दि.

संकटा (राहु) (हस्ता) दशा 18:12:1973 ज्व 09:05:1978	
अवधि	4 y.4 m.21 d.
सिद्धी बिन्दु	051:11:32
अन्तर्दशा	से
संकटा (राहु)	09:05:1970
मंगला (चन्द्रमा)	17:02:1972
पिंगला (सुर्य)	08:05:1972
धन्या (बृहस्पति)	18:10:1972
भ्रमरी (मंगल)	19:06:1973
भद्रिका (बुध)	09:05:1974
उल्का (शनि)	19:06:1975
सिद्धा (शुक्र)	18:10:1976

मंगला (चन्द्रमा) (चित्रा) दशा 09:05:1978 ज्व 09:05:1979	
अवधि	1 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	170:43:15
अन्तर्दशा	से
मंगला (चन्द्रमा)	09:05:1978
पिंगला (सुर्य)	19:05:1978
धन्या (बृहस्पति)	09:06:1978
भ्रमरी (मंगल)	09:07:1978
भद्रिका (बुध)	19:08:1978
उल्का (शनि)	08:10:1978
सिद्धा (शुक्र)	08:12:1978
संकटा (राहु)	17:02:1979

पिंगला (सुर्य) (स्वाति) दशा 09:05:1979 ज्व 09:05:1981	
अवधि	2 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	127:26:24
अन्तर्दशा	से
पिंगला (सुर्य)	09:05:1979
धन्या (बृहस्पति)	19:06:1979
भ्रमरी (मंगल)	19:08:1979
भद्रिका (बुध)	08:11:1979
उल्का (शनि)	17:02:1980
सिद्धा (शुक्र)	18:06:1980
संकटा (राहु)	07:11:1980
मंगला (चन्द्रमा)	19:04:1981

धन्या (बृहस्पति) (विशाखा) दशा 09:05:1981 ज्व 08:05:1984	
अवधि	3 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	215:53:18
अन्तर्दशा	से
धन्या (बृहस्पति)	09:05:1981
भ्रमरी (मंगल)	08:08:1981
भद्रिका (बुध)	08:12:1981
उल्का (शनि)	09:05:1982
सिद्धा (शुक्र)	08:11:1982
संकटा (राहु)	09:06:1983
मंगला (चन्द्रमा)	07:02:1984
पिंगला (सुर्य)	08:03:1984

भ्रमरी (मंगल) (अनुराधा) दशा 08:05:1984 ज्व 08:05:1988	
अवधि	4 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	072:54:51
अन्तर्दशा	से
भ्रमरी (मंगल)	08:05:1984
भद्रिका (बुध)	18:10:1984
उल्का (शनि)	09:05:1985
सिद्धा (शुक्र)	07:01:1986
संकटा (राहु)	18:10:1986
मंगला (चन्द्रमा)	08:09:1987
पिंगला (सुर्य)	18:10:1987
धन्या (बृहस्पति)	07:01:1988

भद्रिका (बुध) (ज्येष्ठा) दशा 08:05:1988 ज्व 09:05:1993	
अवधि	5 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	099:42:48
अन्तर्दशा	से
भद्रिका (बुध)	08:05:1988
उल्का (शनि)	18:01:1989
सिद्धा (शुक्र)	18:11:1989
संकटा (राहु)	08:11:1990
मंगला (चन्द्रमा)	18:12:1991
पिंगला (सुर्य)	07:02:1992
धन्या (बृहस्पति)	19:05:1992
भ्रमरी (मंगल)	18:10:1992

उल्का (शनि) (मूला) दशा 09:05:1993 ज्व 09:05:1999	
अवधि	6 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	133:23:08
अन्तर्दशा	से
उल्का (शनि)	09:05:1993
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1994
संकटा (राहु)	09:07:1995
मंगला (चन्द्रमा)	07:11:1996
पिंगला (सुर्य)	07:01:1997
धन्या (बृहस्पति)	09:05:1997
भ्रमरी (मंगल)	08:11:1997
भद्रिका (बुध)	09:07:1998

सिद्धा (शुक्र) (पूर्वाषाढ़) दशा 09:05:1999 ज्व 09:05:2006	
अवधि	7 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	206:00:33
अन्तर्दशा	से
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1999
संकटा (राहु)	18:09:2000
मंगला (चन्द्रमा)	09:04:2002
पिंगला (सुर्य)	19:06:2002
धन्या (बृहस्पति)	08:11:2002
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2003
भद्रिका (बुध)	19:03:2004
उल्का (शनि)	09:03:2005

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

योगिनी दशा चक्र –2
(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व. 4 मा. 21 दि.

संकटा (राहु) (उत्तराषाढ़) दशा 09:05:2006 ज्व 09:05:2014	
अवधि	8 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	127:26:24
अन्तर्दशा	से
संकटा (राहु)	09:05:2006
मंगला (चन्द्रमा)	17:02:2008
पिंगला (सुर्य)	08:05:2008
धन्या (बृहस्पति)	18:10:2008
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2009
भद्रिका (बुध)	09:05:2010
उल्का (शनि)	19:06:2011
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2012

मंगला (चन्द्रमा) (श्रवण) दशा 09:05:2014 ज्व 09:05:2015	
अवधि	1 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	332:01:54
अन्तर्दशा	से
मंगला (चन्द्रमा)	09:05:2014
पिंगला (सुर्य)	19:05:2014
धन्या (बृहस्पति)	09:06:2014
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2014
भद्रिका (बुध)	19:08:2014
उल्का (शनि)	08:10:2014
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2014
संकटा (राहु)	17:02:2015

पिंगला (सुर्य) (धनिष्ठा) दशा 09:05:2015 ज्व 09:05:2017	
अवधि	2 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	246:58:07
अन्तर्दशा	से
पिंगला (सुर्य)	09:05:2015
धन्या (बृहस्पति)	19:06:2015
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2015
भद्रिका (बुध)	08:11:2015
उल्का (शनि)	17:02:2016
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2016
संकटा (राहु)	07:11:2016
मंगला (चन्द्रमा)	19:04:2017

धन्या (बृहस्पति) (शतभिषा) दशा 09:05:2017 ज्व 08:05:2020	
अवधि	3 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	173:07:14
अन्तर्दशा	से
धन्या (बृहस्पति)	09:05:2017
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2017
भद्रिका (बुध)	08:12:2017
उल्का (शनि)	09:05:2018
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2018
संकटा (राहु)	09:06:2019
मंगला (चन्द्रमा)	07:02:2020
पिंगला (सुर्य)	08:03:2020

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा 08:05:2020 ज्व 08:05:2024	
अवधि	4 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	292:38:57
अन्तर्दशा	से
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2020
भद्रिका (बुध)	18:10:2020
उल्का (शनि)	09:05:2021
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2022
संकटा (राहु)	18:10:2022
मंगला (चन्द्रमा)	08:09:2023
पिंगला (सुर्य)	18:10:2023
धन्या (बृहस्पति)	07:01:2024

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा 08:05:2024 ज्व 09:05:2029	
अवधि	5 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	298:03:58
अन्तर्दशा	से
भद्रिका (बुध)	08:05:2024
उल्का (शनि)	18:01:2025
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2025
संकटा (राहु)	08:11:2026
मंगला (चन्द्रमा)	18:12:2027
पिंगला (सुर्य)	07:02:2028
धन्या (बृहस्पति)	19:05:2028
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2028

उल्का (शनि) (रेवति) दशा 09:05:2029 ज्व 09:05:2035	
अवधि	6 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	298:03:58
अन्तर्दशा	से
उल्का (शनि)	09:05:2029
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2030
संकटा (राहु)	09:07:2031
मंगला (चन्द्रमा)	07:11:2032
पिंगला (सुर्य)	07:01:2033
धन्या (बृहस्पति)	09:05:2033
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2033
भद्रिका (बुध)	09:07:2034

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा 09:05:2035 ज्व 09:05:2042	
अवधि	7 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	348:10:51
अन्तर्दशा	से
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2035
संकटा (राहु)	18:09:2036
मंगला (चन्द्रमा)	09:04:2038
पिंगला (सुर्य)	19:06:2038
धन्या (बृहस्पति)	08:11:2038
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2039
भद्रिका (बुध)	19:03:2040
उल्का (शनि)	09:03:2041

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

योगिनी दशा चक्र –3
(प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व. 4 मा. 21 दि.

संकटा (राहु) (भरणी) दशा 09:05:2042 ज्व 09:05:2050	
अवधि	8 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	168:10:51
अन्तर्दशा	से
संकटा (राहु)	09:05:2042
मंगला (चन्द्रमा)	17:02:2044
पिंगला (सुर्य)	08:05:2044
धन्या (बृहस्पति)	18:10:2044
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2045
भद्रिका (बुध)	09:05:2046
उल्का (शनि)	19:06:2047
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2048

मंगला (चन्द्रमा) (कृतिका) दशा 09:05:2050 ज्व 09:05:2051	
अवधि	1 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	048:16:46
अन्तर्दशा	से
मंगला (चन्द्रमा)	09:05:2050
पिंगला (सुर्य)	19:05:2050
धन्या (बृहस्पति)	09:06:2050
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2050
भद्रिका (बुध)	19:08:2050
उल्का (शनि)	08:10:2050
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2050
संकटा (राहु)	17:02:2051

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा 09:05:2051 ज्व 09:05:2053	
अवधि	2 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	048:16:46
अन्तर्दशा	से
पिंगला (सुर्य)	09:05:2051
धन्या (बृहस्पति)	19:06:2051
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2051
भद्रिका (बुध)	08:11:2051
उल्का (शनि)	17:02:2052
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2052
संकटा (राहु)	07:11:2052
मंगला (चन्द्रमा)	19:04:2053

धन्या (बृहस्पति) (मृगशिरा) दशा 09:05:2053 ज्व 08:05:2056	
अवधि	3 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	292:38:57
अन्तर्दशा	से
धन्या (बृहस्पति)	09:05:2053
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2053
भद्रिका (बुध)	08:12:2053
उल्का (शनि)	09:05:2054
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2054
संकटा (राहु)	09:06:2055
मंगला (चन्द्रमा)	07:02:2056
पिंगला (सुर्य)	08:03:2056

भ्रमरी (मंगल) (अरिद्रा) दशा 08:05:2056 ज्व 08:05:2060	
अवधि	4 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	249:52:53
अन्तर्दशा	से
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2056
भद्रिका (बुध)	18:10:2056
उल्का (शनि)	09:05:2057
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2058
संकटा (राहु)	18:10:2058
मंगला (चन्द्रमा)	08:09:2059
पिंगला (सुर्य)	18:10:2059
धन्या (बृहस्पति)	07:01:2060

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा 08:05:2060 ज्व 09:05:2065	
अवधि	5 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	157:48:03
अन्तर्दशा	से
भद्रिका (बुध)	08:05:2060
उल्का (शनि)	18:01:2061
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2061
संकटा (राहु)	08:11:2062
मंगला (चन्द्रमा)	18:12:2063
पिंगला (सुर्य)	07:02:2064
धन्या (बृहस्पति)	19:05:2064
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2064

उल्का (शनि) (पुष्य) दशा 09:05:2065 ज्व 09:05:2071	
अवधि	6 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	136:25:07
अन्तर्दशा	से
उल्का (शनि)	09:05:2065
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2066
संकटा (राहु)	09:07:2067
मंगला (चन्द्रमा)	07:11:2068
पिंगला (सुर्य)	07:01:2069
धन्या (बृहस्पति)	09:05:2069
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2069
भद्रिका (बुध)	09:07:2070

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेषा) दशा 09:05:2071 ज्व 09:05:2078	
अवधि	7 y.0 m.0 d.
सिद्धी बिन्दु	152:51:40
अन्तर्दशा	से
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2071
संकटा (राहु)	18:09:2072
मंगला (चन्द्रमा)	09:04:2074
पिंगला (सुर्य)	19:06:2074
धन्या (बृहस्पति)	08:11:2074
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2075
भद्रिका (बुध)	19:03:2076
उल्का (शनि)	09:03:2077

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

योगिनी दशा

क्र.स.	ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से-—तक	पूर्णता (सिद्धी बिन्दु)
1	संकटा (राहु)(हस्ता)	4 y.4 m.21 d.	18:12:1973 - 09:05:1978	051:11:32
2	मंगला (चन्द्रमा)(चित्रा)	1 y.0 m.0 d.	09:05:1978 - 09:05:1979	170:43:15
3	पिंगला (सूर्य)(स्वाति)	2 y.0 m.0 d.	09:05:1979 - 09:05:1981	127:26:24
4	धन्या (गुरू)(विशाखा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:1981 - 08:05:1984	215:53:18
5	भ्रमरी (मंगल)(अनुराधा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:1984 - 08:05:1988	072:54:51
6	भद्रीका (बुध)(ज्येष्ठा)	5 y.0 m.0 d.	08:05:1988 - 09:05:1993	099:42:48
7	उल्का (शनि)(मूला)	6 y.0 m.0 d.	09:05:1993 - 09:05:1999	133:23:08
8	सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाषाढ़)	7 y.0 m.0 d.	09:05:1999 - 09:05:2006	206:00:33
9	संकटा (राहु)(उत्तराषाढ़)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2006 - 09:05:2014	127:26:24
10	मंगला (चन्द्रमा)(श्रवण)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2014 - 09:05:2015	332:01:54
11	पिंगला (सूर्य)(धनिष्ठा)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2015 - 09:05:2017	246:58:07
12	धन्या (गुरू)(शतभिषा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2017 - 08:05:2020	173:07:14
13	भ्रमरी (मंगल)(पूर्वाभाद्र)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2020 - 08:05:2024	292:38:57
14	भद्रीका (बुध)(उत्तरभाद्र)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2024 - 09:05:2029	298:03:58
15	उल्का (शनि)(रेवति)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2029 - 09:05:2035	298:03:58
16	सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2035 - 09:05:2042	348:10:51
17	संकटा (राहु)(भरणी)	8 y.0 m.0 d.	09:05:2042 - 09:05:2050	168:10:51
18	मंगला (चन्द्रमा)(कृतिका)	1 y.0 m.0 d.	09:05:2050 - 09:05:2051	048:16:46
19	पिंगला (सूर्य)(रोहिणी)	2 y.0 m.0 d.	09:05:2051 - 09:05:2053	048:16:46
20	धन्या (गुरू)(मृगशिरा)	3 y.0 m.0 d.	09:05:2053 - 08:05:2056	292:38:57
21	भ्रमरी (मंगल)(अरिद्रा)	4 y.0 m.0 d.	08:05:2056 - 08:05:2060	249:52:53
22	भद्रीका (बुध)(पुनर्वसु)	5 y.0 m.0 d.	08:05:2060 - 09:05:2065	157:48:03
23	उल्का (शनि)(पुष्य)	6 y.0 m.0 d.	09:05:2065 - 09:05:2071	136:25:07
24	सिद्धा (शुक्र)(अश्लेषा)	7 y.0 m.0 d.	09:05:2071 - 09:05:2078	152:51:40

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु अष्टोत्तरी दशा –1

जन्म के समय भृगु भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : बुध : 2 व. 2 मा. 10 दि.

बुध (हस्ता) दशा 27:02:1972 – 26:02:1976	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:1972
वृष	27:02:1973
मिथुन	27:02:1974
कर्क	27:02:1975

शुक्र (चित्रा) दशा 27:02:1976 – 26:02:1980	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:1976
कन्या	27:02:1977
तुला	27:02:1978
वृश्चिक	27:02:1979

चन्द्रमा (स्वाति) दशा 27:02:1980 – 26:02:1984	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:1980
मकर	27:02:1981
कुम्भ	27:02:1982
मीन	27:02:1983

बुध (विशाखा) दशा 27:02:1984 – 26:02:1988	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:1984
वृष	27:02:1985
मिथुन	27:02:1986
कर्क	27:02:1987

शुक्र (अनुराधा) दशा 27:02:1988 – 26:02:1992	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:1988
कन्या	27:02:1989
तुला	27:02:1990
वृश्चिक	27:02:1991

शनि (ज्येष्ठा) दशा 27:02:1992 – 26:02:1996	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:1992
मकर	27:02:1993
कुम्भ	27:02:1994
मीन	27:02:1995

शनि (मूला) दशा 27:02:1996 – 26:02:2000	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:1996
वृष	27:02:1997
मिथुन	27:02:1998
कर्क	27:02:1999

मंगल (पूर्वाषाढ़) दशा 27:02:2000 – 26:02:2004	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2000
कन्या	27:02:2001
तुला	27:02:2002
वृश्चिक	27:02:2003

सूर्य (उत्तराषाढ़) दशा 27:02:2004 – 26:02:2008	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2004
मकर	27:02:2005
कुम्भ	27:02:2006
मीन	27:02:2007

चन्द्रमा (श्रवण) दशा 27:02:2008 – 26:02:2012	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2008
वृष	27:02:2009
मिथुन	27:02:2010
कर्क	27:02:2011

चन्द्रमा (धनिष्ठा) दशा 27:02:2012 – 26:02:2016	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2012
कन्या	27:02:2013
तुला	27:02:2014
वृश्चिक	27:02:2015

चन्द्रमा (शतभिषा) दशा 27:02:2016 – 26:02:2020	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2016
मकर	27:02:2017
कुम्भ	27:02:2018
मीन	27:02:2019

मंगल (पूर्वाभाद्र) दशा 27:02:2020 – 26:02:2024	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2020
वृष	27:02:2021
मिथुन	27:02:2022
कर्क	27:02:2023

सूर्य (उत्तरभाद्र) दशा 27:02:2024 – 26:02:2028	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2024
कन्या	27:02:2025
तुला	27:02:2026
वृश्चिक	27:02:2027

शुक्र (रेवति) दशा 27:02:2028 – 26:02:2032	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2028
मकर	27:02:2029
कुम्भ	27:02:2030
मीन	27:02:2031

भृगु अष्टोत्तरी दशा –2

जन्म के समय भृगु भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : बुध : 2 व. 2 मा. 10 दि.

गुरू (अश्विनी) दशा 27:02:2032 – 26:02:2036	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2032
वृष	27:02:2033
मिथुन	27:02:2034
कर्क	27:02:2035

मंगल (भरणी) दशा 27:02:2036 – 26:02:2040	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2036
कन्या	27:02:2037
तुला	27:02:2038
वृश्चिक	27:02:2039

बुध (कृतिका) दशा 27:02:2040 – 26:02:2044	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2040
मकर	27:02:2041
कुम्भ	27:02:2042
मीन	27:02:2043

सूर्य (रोहिणी) दशा 27:02:2044 – 26:02:2048	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2044
वृष	27:02:2045
मिथुन	27:02:2046
कर्क	27:02:2047

शुक्र (मृगशिरा) दशा 27:02:2048 – 26:02:2052	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2048
कन्या	27:02:2049
तुला	27:02:2050
वृश्चिक	27:02:2051

शनि (अरिद्रा) दशा 27:02:2052 – 26:02:2056	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2052
मकर	27:02:2053
कुम्भ	27:02:2054
मीन	27:02:2055

चन्द्रमा (पुनर्वसु) दशा 27:02:2056 – 26:02:2060	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2056
वृष	27:02:2057
मिथुन	27:02:2058
कर्क	27:02:2059

गुरू (पुष्य) दशा 27:02:2060 – 26:02:2064	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2060
कन्या	27:02:2061
तुला	27:02:2062
वृश्चिक	27:02:2063

शनि (अश्लेषा) दशा 27:02:2064 – 26:02:2068	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2064
मकर	27:02:2065
कुम्भ	27:02:2066
मीन	27:02:2067

मंगल (मघा) दशा 27:02:2068 – 26:02:2072	
अन्तर	से ...
मेष	27:02:2068
वृष	27:02:2069
मिथुन	27:02:2070
कर्क	27:02:2071

मंगल (पुर्वफाल्गुनी) दशा 27:02:2072 – 26:02:2076	
अन्तर	से ...
सिहं	27:02:2072
कन्या	27:02:2073
तुला	27:02:2074
वृश्चिक	27:02:2075

सूर्य (उत्तरफाल्गुनी) दशा 27:02:2076 – 26:02:2080	
अन्तर	से ...
धनु	27:02:2076
मकर	27:02:2077
कुम्भ	27:02:2078
मीन	27:02:2079

अन्तर	से ...

अन्तर	से ...

अन्तर	से ...

भृगु नैसर्गिक दशा

क्र.स.	दशापति	दशा अवधि	से––तक	उम्र
1	चन्द्रमा दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1973 To 17:12:1977	0.0
2	मंगल दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1977 To 17:12:1981	4.0
3	बुध दशा	5 y.0 m.0 d.	18:12:1981 To 17:12:1986	8.0
4	शुक्र दशा	3 y.0 m.0 d.	18:12:1986 To 17:12:1989	13.0
5	गुरू दशा	6 y.0 m.0 d.	18:12:1989 To 17:12:1995	16.0
6	सूर्य दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:1995 To 17:12:1997	22.0
7	चन्द्रमा/शुक्र दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:1997 To 17:12:2001	24.0
8	मंगल दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2001 To 17:12:2005	28.0
9	बुध दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2005 To 17:12:2009	32.0
10	शनि दशा	6 y.0 m.0 d.	18:12:2009 To 17:12:2015	36.0
11	राहु दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2015 To 17:12:2019	42.0
12	चन्द्रमा/राहु दशा	2 y.0 m.0 d.	18:12:2019 To 17:12:2021	46.0
13	सूर्य/चन्द्रमा दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2021 To 17:12:2025	48.0
14	मंगल दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2025 To 17:12:2029	52.0
15	गुरू दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2029 To 17:12:2033	56.0
16	शुक्र/सूर्य दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2033 To 17:12:2037	60.0
17	बुध दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2037 To 17:12:2041	64.0
18	शनि दशा	4 y.0 m.0 d.	18:12:2041 To 17:12:2045	68.0
19	राहु दशा	6 y.0 m.0 d.	18:12:2045 To 17:12:2051	72.0
20	केतु दशा	6 y.0 m.0 d.	18:12:2051 To 17:12:2057	78.0

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ज्योतिष सारिणी

	Sample	Transit
जन्म दिन :	18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)	14 जनवरी 2021 (वृहस्पतिवार)
ज्योतिषिय वार :	सोमवार	वृहस्पतिवार
जन्म समयः	01:45:00AM	11:16:22AM
जन्म स्थान :	Ballia (up) , INDIA	New Delhi , INDIA
रेखांश :	084:10:00E	077:12:00E
अक्षांश :	025:45:00N	028:36:00N
समयक्षेत्र :	-05:30:00 hrs	-05:30:00 hrs
समय संशोधन :	00:00:00 hrs	00:00:00 hrs
जी. एम. टी. समयः	20:15:00 hrs	05:46:22 hrs
स्थानीय समय संस्कार :	00:06:40 hrs	-00:21:12 hrs
स्थानीय समयः	01:51:40 hrs	10:55:10 hrs
इष्टकाल :	47: 52: 16 घटी	09: 56: 08 घटी

लग्न :	कन्या	मीन
लग्नाधिपति :	बुध	गुरू
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या	मकर
राशिपति :	बुध	शनि
नक्षत्र :	हस्त	श्रवण
नक्षत्रपति :	चन्द्रमा	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण :	2	1
पाया :	स्वर्ण	स्वर्ण
ऋतु :	हेमन्त	शिशिर
मास :	पौष	माघ
पक्ष :	कृष्ण	शुक्ल
तिथि :	नवमी	द्वितिया
तिथि श्रेणी :	रिक्ता	भद्रा
तिथि पति :	सूर्य	चन्द्रमा
करण :	गरिज	बल्लव
करण श्रेणी :	चर	चर
करणपति :	वासुदेव	ब्रहमा
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य	वज्र
तत्व :	अग्नि	वायु
तत्वाधिपति :	मंगल	शनि
विहग :	वायस	कुक्कुट
वेध :	शतभिषा	आर्द्रा
आद्याक्षर :	श	जु

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

लग्न कुण्डली

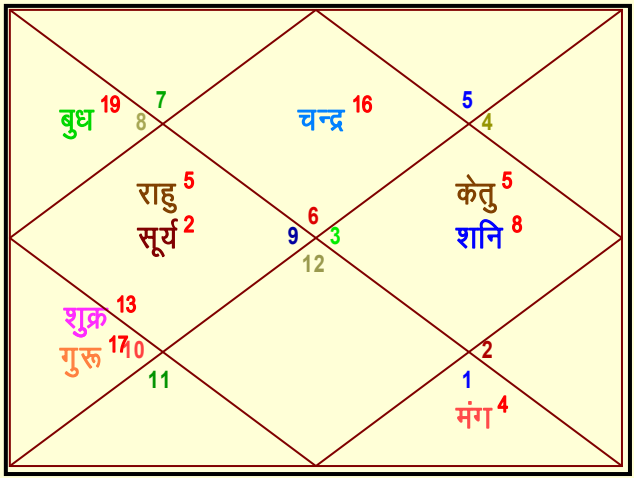

गोचर कुण्डली

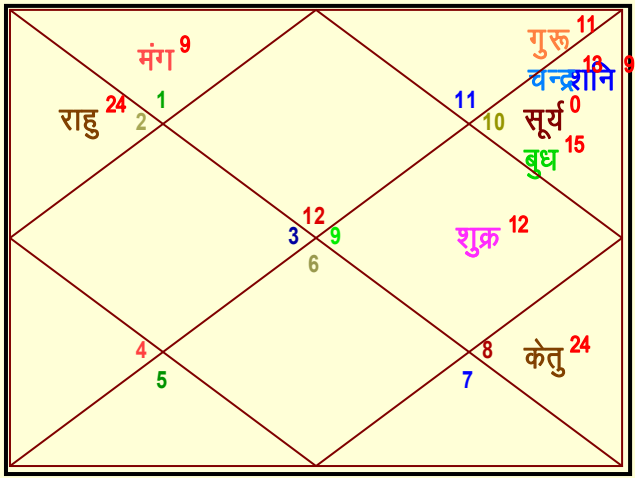

ग्रह स्थिति

जन्म समय					गोचर समय				
ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	विशेष	ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र(पद)	विशेष
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा–2	——	लग्न	मीन	16:48:40	रेवति–1	——
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला–1	मित्र राशि	सूर्य	मकर	00:07:43	उत्तराषाढ़–2	स्व नक्षत्र
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता–2	स्व नक्षत्र	चन्द्रमा	मकर	13:18:34	श्रवण–1	स्व नक्षत्र
मंगल	मेष	04:42:18	अश्विनी–2	स्व राशि	मंगल	मेष	09:18:16	अश्विनी–3	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा–1	स्व नक्षत्र	बुध	मकर	15:09:38	श्रवण–2	सम राशि
गुरू	मकर	17:56:39	श्रवण–3	नीच राशि	गुरू	मकर	11:42:24	श्रवण–1	नीच राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रवण–1	मित्र राशि	शुक्र	धनु	12:51:27	मूला–4	सम राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरिद्रा–1	मित्र राशि	शनि अ.	मकर	09:01:05	उत्तराषाढ़–4	स्व राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला–2	सम राशि	राहु व.	वृष	24:00:38	मृगशिरा–1	उच्च राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृगशिरा–4	सम राशि	केतु व.	वृश्चिक	24:00:38	ज्येष्ठा–3	उच्च राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा–4	सम राशि	हर्षल व.	मेष	12:34:30	अश्विनी–4	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा–4	सम राशि	नेपच्यून	कुम्भ	24:36:55	पूर्वाभाद्र–2	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता–1	सम राशि	प्लूटो अ.	मकर	00:28:45	उत्तराषाढ़–2	सम राशि

नाड़ी ग्रह स्थिति

जन्म समय				गोचर समय			
ग्रह	नाड्यांश	नाड़ीभाग	नक्षत्रांश	ग्रह	नाड्यांश	नाड़ीभाग	नक्षत्रांश
लग्न	गदहरा (67)	पूर्वार्ध	नपुंशकांश	लग्न	सुरा (9)	पूर्वार्ध	उत्पन्नांश
सूर्य	सुमनोहरा (88)	उत्तरार्ध	तस्करांश	सूर्य	वसुधा (1)	पूर्वार्ध	पापांश
चन्द्रमा	सुधाकरी (6)	उत्तरार्ध	भोग्यांश	चन्द्रमा	गदहरा (67)	उत्तरार्ध	मंगलांश
मंगल	मुसला (24)	पूर्वार्ध	भोग्यांश	मंगल	अमृतप्लावनी (47)	उत्तरार्ध	पंडितांश
बुध अ.	कुन्दिनी (52)	उत्तरार्ध	उत्पन्नांश	बुध अ.	सुशीतला (76)	उत्तरार्ध	भोग्यांश
गुरू	मङ्गला (91)	पूर्वार्ध	वित्तछिन्नांश	गुरू	प्रीता (59)	उत्तरार्ध	मंगलांश
शुक्र	भूपा (66)	उत्तरार्ध	मंगलांश	शुक्र	कामिनी (140)	उत्तरार्ध	धनांश
शनि व.	मदिरा (115)	पूर्वार्ध	कृपांश	शनि व.	अमृतप्लावनी (47)	उत्तरार्ध	
राहु व.	सारा (100)	उत्तरार्ध	भोग्यांश	राहु व.	कलुषा (30)	पूर्वार्ध	राज्यांश
केतु व.	सारा (100)	उत्तरार्ध	नीचांश	केतु व.	कलुषा (30)	पूर्वार्ध	पापांश
हर्षल	प्रभा (17)	पूर्वार्ध	दरिद्रांश	हर्षल	दुर्भगा (62)	उत्तरार्ध	धनांश
नेपच्यून	शोभा (79)	पूर्वार्ध	नीचांश	नेपच्यून	चंपका (27)	पूर्वार्ध	भोग्यांश
प्लूटो	वीरप्रसू (142)	उत्तरार्ध	बलिष्टांश	प्लूटो	वसुधा (1)	पूर्वार्ध	पापांश

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

जन्म कुण्डली पर ग्रह गोचर

सूर्य (00 मकर)

स्व नक्षत्र, गति.01:01:09()

14:01:2021 - 12:02:2021 , 100.00% Left

एक राशि मे	गुरू (17), नीचस्थ : शुक्र (13)
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)

चन्द्रमा (13 मकर)

स्व नक्षत्र, गति.13:38:12()

13:01:2021 - 15:01:2021 , 50.00% Left

एक राशि मे	गुरू (17), नीचस्थ : शुक्र (13)
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)

मंगल (09 मेष)

स्व राशि, गति.00:29:10(सम)

24:12:2020 - 22:02:2021 , 65.02% Left

एक राशि मे	मंग. (04), स्व राशि
राशि से (5,9)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (2,12)	
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र :: बुध अ. (19), स्व नक्षत्र

बुध (15 मकर)

सम राशि, गति.01:35:07(अतिचार)

05:01:2021 - 25:01:2021 , 55.00% Left

एक राशि मे	गुरू (17), नीचस्थ : शुक्र (13)
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)

गुरू (11 मकर)

नीच राशि, गति.00:14:06(अतिचार)

20:11:2020 - 06:04:2021 , 59.90% Left

एक राशि मे	गुरू (17), नीचस्थ : शुक्र (13)
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)

शुक्र (12 धनु)

सम राशि, गति.01:15:13(अतिचार)

13:10:2020 - 22:06:2021 , 63.15% Left

एक राशि मे	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (5,9)	मंग. (04), स्व राशि
राशि से (2,12)	बुध अ. (19), स्व नक्षत्र : गुरू (17), नीचस्थ :: शुक्र (13)
राशि से (7)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)
राशि से (6,8)	

शनि (09 मकर)

अस्त,स्व राशि, गति.00:07:05(अतिचार)

24:01:2020 - 29:04:2022 , 56.97% Left

एक राशि मे	गुरू (17), नीचस्थ : शुक्र (13)
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	शनि व. (08) :: केतु व. (05)

राहु (24 वृष)

वक्री,उच्च राशि, गति.00:03:11()

23:09:2020 - 12:04:2022 , 80.07% Left

एक राशि मे	
राशि से (5,9)	चन्द्र (16), स्व नक्षत्र :: गुरू (17), नीचस्थ :: शुक्र (13)
राशि से (2,12)	मंग. (04), स्व राशि :: शनि व. (08) :: केतु व. (05)
राशि से (7)	बुध अ. (19), स्व नक्षत्र
राशि से (6,8)	सूर्य (02) : राहु व. (05)

केतु (24 वृश्चिक)

वक्री,उच्च राशि, गति.00:03:11()

23:09:2020 - 12:04:2022 , 80.07% Left

एक राशि मे	बुध अ. (19), स्व नक्षत्र
राशि से (5,9)	
राशि से (2,12)	सूर्य (02) : राहु व. (05)
राशि से (7)	
राशि से (6,8)	मंग. (04), स्व राशि :: शनि व. (08) :: केतु व. (05)

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

जन्म कुण्डली पर ग्रह गोचर

सूर्य (00)

नक्षत्र – उत्तराषाढ़ पद 2 ()	
नवतारा (अति मित्र), स्व नक्षत्र, गति –01:01:09 ()	
नक्षत्र में	
पर लत्ता	मृगशिरा (नवशुभ अर्क (सन्निपात नक्षत्र))
ग्रह अंग	छाती (कार्य में सफलता)

चन्द्रमा (13)

नक्षत्र – श्रवण पद 1 (सन्नड़ि (कर्म नक्षत्र) आर्कचतुष्टय (कर्म नक्षत्र))	
नवतारा (जन्म), स्व नक्षत्र, गति –13:38:12 ()	
नक्षत्र में	गुरू, शुक्र
पर लत्ता	अश्विनी (सन्नड़ि (संघातिक नक्षत्र))
ग्रह अंग	दोनो आँखे (नये अवसर)

मंगल (09)

नक्षत्र – अश्विनी पद 3 (सन्नड़ि (संघातिक नक्षत्र))	
नवतारा (निधन), स्व राशि, गति –00:29:10 (सम)	
नक्षत्र में	मंगल
पर लत्ता	कृतिका (सन्नड़ि (समुदय नक्षत्र) आर्कचतुष्टय (आधान नक्षत्र))
ग्रह अंग	सिर (लाभ में वृद्धि)

बुध (15)

नक्षत्र – श्रवण पद 2 (सन्नड़ि (कर्म नक्षत्र) आर्कचतुष्टय (कर्म नक्षत्र))	
नवतारा (जन्म), सम राशि, गति –01:35:07 (अतिचार)	
नक्षत्र में	गुरू, शुक्र
पर लत्ता	विशाखा ()
ग्रह अंग	दोनो हाथ (अप्रिय घटनाएँ)

गुरू (11)

नक्षत्र – श्रवण पद 1 (सन्नड़ि (कर्म नक्षत्र) आर्कचतुष्टय (कर्म नक्षत्र))	
नवतारा (जन्म), नीच राशि, गति –00:14:06 (अतिचार)	
नक्षत्र में	गुरू, शुक्र
पर लत्ता	रेवति ()
ग्रह अंग	दोनो हाथ (अप्रिय घटनाएँ) जन्मकालिक बुध के नक्षत्र से 5वां।

शुक्र (12)

नक्षत्र – मूला पद 4 (कंटक स्थुन नक्षत्र नवशुभ अर्क (दग्ध नक्षत्र))	
नवतारा (निधन), सम राशि, गति –01:15:13 (अतिचार)	
नक्षत्र में	सूर्य, राहु
पर लत्ता	स्वाति (नवशुभ अर्क (निर्घात नक्षत्र))
ग्रह अंग	दोनो हाथ (अप्रिय घटनाएँ)

शनि (09)

नक्षत्र – उत्तराषाढ़ पद 4 ()	
नवतारा (अति मित्र), अस्त, स्व राशि, गति –00:07:05 (अतिचार)	
नक्षत्र में	
पर लत्ता	अश्विनी (सन्नड़ि (संघातिक नक्षत्र))
ग्रह अंग	बांया पैर (धन की कमी/हानि)

राहु (24)

नक्षत्र – मृगशिरा पद 1 (नवशुभ अर्क (सन्निपात नक्षत्र))	
नवतारा (सम्पत), वक्री, उच्च राशि, गति –00:03:11 ()	
नक्षत्र में	केतु
पर लत्ता	शतभिषा ()
ग्रह अंग	पेट (शारीरिक घनिष्टता)

केतु (24)

नक्षत्र – ज्येष्ठा पद 3 ()	
नवतारा (साधक), वक्री, उच्च राशि, गति –00:03:11 ()	
नक्षत्र में	बुध
पर लत्ता	मघा (सन्नड़ि (मानस नक्षत्र) रक्त स्थुन नक्षत्र जाति नक्षत्र)
ग्रह अंग	दाहिना पैर (दूरस्थ स्थान की यात्रा)

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ग्रह गोचर अवधि

ग्रह	राशि	अवधि	तारा	मूर्ति
सूर्य (00)	मकर	14:01:2021 - 12:02:2021	अति मित्र	रूपया
चन्द्रमा (13)	मकर	13:01:2021 - 15:01:2021	जन्म	रूपया
मंगल (09)	मेष	24:12:2020 - 22:02:2021	निधन	लौह
बुध (15)	मकर	05:01:2021 - 25:01:2021	जन्म	स्वर्ण
गुरू (11)	मकर	20:11:2020 - 06:04:2021	जन्म	रूपया
शुक्र (12)	धनु	13:10:2020 - 22:06:2021	निधन	स्वर्ण
शनि अ.	मकर	24:01:2020 - 29:04:2022	अति मित्र	रूपया
राहु व. (24)	वृष	23:09:2020 - 12:04:2022	सम्पत	ताम्र
केतु व.	वृश्चिक	23:09:2020 - 12:04:2022	साधक	ताम्र

वेध

ग्रह	भाव	वेध	विपरीत वेध	नक्षत्रवेध
सूर्य	पंचम (अति			
चन्द्रमा	पंचम (अशुभ)			
मंगल	अष्टम (अशुभ)			
बुध	पंचम (अशुभ)			
गुरू	पंचम (शुभ)	शुक्र		
शुक्र	चतुर्थ (शुभ)			
शनि	पंचम (अशुभ)			
राहु	नवम (अति			
केतु	तृतीय (शुभ)			

अष्टकवर्ग और गोचर

ग्रह	अष्टकवर्ग	सर्वाष्टक	कक्ष	शुभ ?	बल
सूर्य	4	26	शनि	1	4
चन्द्रमा	3	26	सूर्य	0	3
मंगल	4	27	मंगल	1	5
बुध	4	26	शुक्र	1	3
गुरू	5	26	सूर्य	1	3
शुक्र	3	24	सूर्य	0	3
शनि	2	26	मंगल	1	7
राहु	3	21	गुरू	1	2

ग्रह चाल

ग्रह	दिन	समय	राशि(अंश)	गति
गुरू				
सीधा	01:01:2021	00:00	मकर (08:35)	00:13:41
वक्री	20:06:2021	20:38	कुम्भ (08:01)	00:00:00
सीधा	18:10:2021	10:45	मकर (28:10)	00:00:00
शनि				
सीधा	01:01:2021	00:00	मकर (07:27)	00:06:49
वक्री	23:05:2021	15:08	मकर (19:21)	00:00:00
सीधा	11:10:2021	08:14	मकर (12:43)	00:00:00
मंगल				
सीधा	01:01:2021	00:00	मेष (03:06)	00:25:50
बुध				
सीधा	01:01:2021	00:00	धनु (23:11)	01:37:37
वक्री	30:01:2021	21:23	कुम्भ (02:20)	00:00:00
सीधा	21:02:2021	06:24	मकर (16:52)	00:00:00
वक्री	03:06:2021	02:01	मिथुन (00:00)	00:16:38
सीधा	23:06:2021	03:32	वृष (21:58)	00:00:00
वक्री	27:09:2021	10:42	तुला (01:19)	00:00:00
सीधा	18:10:2021	20:48	कन्या (15:58)	00:00:00
शुक्र				
सीधा	01:01:2021	00:00	वृश्चिक (25:58)	01:15:08
वक्री	19:12:2021	16:06	मकर (02:19)	00:00:00

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

सामान्य भविष्यफल

कन्या राशि, राशि चक्र की छठी राशि है, इस राशि का स्वामी बुध है। इस राशि में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के दूसरे, तीसरे तथा चौथे चरण, हस्त नक्षत्र तथा चित्रा नक्षत्र के पहले व दूसरे चरण आते हैं। इस लग्न में जन्म होने से आप मध्यम कद, गेहुँए रंग, तथा सामान्य शारीरिक बनावट वाले व्यक्ति होंगे। आप अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपका व्यक्तित्व सम्मोहक रहेगा।

आपका स्वास्थ्य प्रायः कमजोर रहेगा, जिस कारण फेफड़े के रोग, सूजन, पेट सम्बन्धी रोग, सर्दी–जुखाम, बुख़ार, कफ सम्बन्धी बीमारियाँ आदि रोग आपको कष्ट पहुँचा सकते हैं। आपकी बुद्धिप्रखर रहेगी और आपकी अध्ययन में रुचि रहेगी तथा आप उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे, साथ ही आप में कलाकारों की सी प्रवृत्तियाँ भी रहेंगी और आप अपनी सजावट की ओर विशेष ध्यान रखेंगे तथा बातचीत करने में भी आप कुशल रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन प्रायः सुखी रहेगा और सन्तान की ओर से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

आप हँसमुख, चतुर तथा मित्र बनाने में कुशल होंगे, आप भावना प्रधान व्यक्ति होंगे। आप में मनुष्य को परखने की शक्ति विद्यमान रहेगी। आप अपने सिद्धान्तों को सर्वोपरी समझेंगे तथा आप चाहेंगे कि दूसरे भी उन सिद्धान्तों का अनुसरण करें और हिंसा तथा युद्ध जैसे कार्यों से आप दूर रहना पसन्द करेंगे। क्रोध आपको शीघ्र नहीं आयेगा, परन्तु क्रोधित होने पर आप शान्त भी देर से ही होंगे,लकिन क्रोध शान्त होने पर आप सम्बंन्धित व्यक्ति से खेद भी प्रकट करेंगे। आप में भावुकता, स्नेह, लज्जा, ईमानदारी, आदि गुण पर्याप्त मात्रा में होंगे। दृढ़ता की कमी तथा हीन भावना जैसे अवगुणों पर आप काबू पा सकेंगे। आप शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम करना अधिक पसन्दकरेंगे। आप कलाकार, मनोवैज्ञानिक, डॉक्टर, कम्पाउन्डर, अध्यापक, लेखक, सम्पादक आदि बनेंगे। यदि आपकी राजनीति में रुचि रहेगी तो आपको उसमें सामान्य सफलता ही प्राप्त हो पायेगी।

आपका जन्म कन्या लग्न में 26 अंश 40 कला से 30 अंश 00 कला तक होने से आप मध्यम कद,गेहुँए रंग तथा स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आप अधिक बलवान नहीं होंगे, किन्तु आपका व्यक्तित्व सम्मोहक रहेगा। आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा और आपको पेट सम्बन्धी रोग, सूजन, वातरोग, छाती के रोग आदि से कष्ट हो सकता है और शरीर में कमज़ोरी हो सकती है, इसके अलावा चिन्तनशील व्यक्तित्व होने से आप मानसिक रुप से भी पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी और कला, संगीत, नाटक, काव्य तथा साहित्य के प्रति आप में रुचि तथातत्परता भी रहेगी। आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा तथा सन्तान सुख भी आपको प्राप्त होगा। आप कल्पना प्रिय व्यक्ति होंगे, न्यायप्रियता तथा करुणा आपके प्रधान गुण रहेंगे। आप में विचारशीलता तथा बुद्धिमत्ता बहुत रहेगी तथा नम्रता एवं लज्जा का गुण भी आप में होगा। आपको प्रायः क्रोध नहीं आयेगा, परन्तु क्रोध आने पर आप सरलता से शान्त भी नहीं हो पायेंगे।

आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा उच्च शिक्षा, नौकरी या व्यवसाय के कारण आपके जीवन में विदेश यात्राएँ भी सम्भावित है और समाज में आप सम्मानीय स्थान रखेंगे। जीवन के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी, किन्तु उत्तरार्द्ध में आप आर्थिक रूप से समृद्ध हो जायेंगे। आपकी निर्णय शक्ति तीव्र होने के कारण किसी भी कार्य में आ रही कठिनाइयों को दूर करने में आप

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

समर्थ होंगे।

आप अपने परिश्रम से उन्नति करेंगे और प्रोफेसर, सम्पादक, प्रेस रिपोर्टर, बीमा एजेन्ट, लेखक, कलाकार तथा लिपिक के कार्य में आप अधिक सफल रहेंगे, साथ ही व्यापार के क्षेत्र में भी आप धीरे–धीरे प्रगति करेंगे।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

सूर्य

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। आपके लिये सूर्य शुभफल दायक सिद्ध होगा। आप आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले होंगे परन्तु आपके स्वभाव में कुछ कठोरता रहेगी। आप बुद्धिमान, परोपकारी तथा कार्यकुशल होंगे। सन्तान सुख में कमी हो सकती है। अपनी माता से आपको प्रेम रहेगा और विशेष परिश्रम से ही जीवन में प्रगति सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप साहसी रहेंगे तथा शत्रु आपसे घबरायेंगे। आपको हृदय सम्बन्धी बीमारी तथा रक्तचाप (ब्लड़ प्रेशर) होने की सम्भावनायें बनती है। धन कमाने के लिये आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा भी कर सकते हैं। संगीत, कला, काव्य, लेखन में आपकी विशेष रुचि रहेगी और आप इन विद्याओं की उन्नति में अपना योगदान भी देंगे।

मध्य आयु तक आप भूमि, मकान, वाहन आदि प्राप्त कर सम्पन्न बन सकते हैं, किन्तु मानसिक सुख शान्ति में कमी हो सकती है। सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में स्थित मिथुन राशि में पड़ रही है जो सूर्य के मित्र बुध की राशि है अतः आपको दशम स्थान से सम्बन्धित शुभ फल प्राप्त होंगे और आपको अच्छे पद की प्राप्ति होगी। आपको राजकीय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी, साथ ही आपको आर्थिक उन्नति के नये अवसर प्राप्त होंगे। अपने पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नही रहेंगे, परन्तु सत्ता पक्ष आपके पक्ष में रहेगा और सत्ता पक्ष द्वारा आपको सम्मान प्रदान किये जाने की भी प्रबल सम्भावना है।

भास्वान्कश्यपगोत्रजो ऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपु कलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

यदि आपको सूर्य ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से दूर रहें।
4- अकारण ही क्रोध करने से बचें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

चन्द्रमा

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान (जन्म लग्न) में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्रमा की मित्रता है। सामान्यतः चन्द्रमा प्रथम स्थान में अच्छे फल प्रदान करता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल प्रदान करेगा। आप मध्यम कद गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप शारीरिक रूप से अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपके व्यक्तित्व में आकर्षण होने से लोग आपसे मित्रता करने के इच्छुक रहेंगे। आपके मधुर स्वभाव के कारण भी आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा-कदा सामान्य रोगों से आप ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु क्षीण तथा पापाक्रान्त चन्द्रमा आपके स्वास्थ्य के लिये अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है, यह आयु भी कम करता है तथा सिर, नेत्र, गले के विभिन्न रोगों से भी आपको पीड़ित कर सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आप अच्छी प्रगति कर सकते हैं। शैक्षणिक विषयों के अतिरिक्त आप साहित्य, ज्योतिष, शास्त्रीय विषयों का भी अध्ययन कर सकते हैं।

आप वाचाल प्रवृत्ति के तथा वाद-विवाद, आदि में चतुर रहेंगे। आप अच्छे वक्ता भी बन सकते हैं। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपकी आय के एक से अधिक साधन हो सकते हैं। सर्विस की अपेक्षा व्यापार आपके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आपकी प्रवृत्ति मितव्ययी होगी। चन्द्रमा की सप्तम् पूर्ण दृष्टि सप्तम् स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से चन्द्रमा की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा तथा आपकी पत्नी, सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान होंगी। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु पिता का आपको स्नेह मिलेगा। साझेदारी का व्यापार आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होगा तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख आपको प्राप्त होगा।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरश्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्कें गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

यदि आपको चन्द्रमा ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा-धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस-मदिरा का सेवन ना करें।

1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से बचना चाहिए।
4- अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

मंगल

ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो मंगल की स्वराशि है। सामान्यतः अष्टमस्थ मंगल शुभफल नही देता है। तृतीयेश तथा अष्टमेश मंगल अष्टम स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। मंगल आपको मांगलिक बनायेगा। आपका स्वभाव राजसी तथा कठोर हो सकता है और आपके मित्र और परिजन आपकी नाराज़गी से भयभीत हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप बचपन में रोगग्रस्त रह सकते हैं, परन्तु आपका स्वास्थ्य युवावस्था में सामान्य रहेगा। कभी-कभी आपको त्वचा रोग हो सकते हैं। आपके हाथ में कोई कमी आ सकती है तथा शस्त्र का भी खतरा हो सकता है। आपकी धर्म में रुचि कम हो सकती है और अपने भाई-बहनों से भी आपकी कम ही बनेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आप दोनों पति-पत्नि के बीच में उत्पन्न वैचारिक मतभेद तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है और आपका दूसरा विवाह भी हो सकता है।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप सैन्य सेवा, गुप्तचर विभाग, फायर मैन, मैकेनिक, खान विभाग आदि में सर्विस कर सकते हैं। आपका मनोबल तथा कार्य-कुशलता अच्छी रहने में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलेगी। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आप आय बढ़ाने के लिये किये गये प्रयत्नों में कम ही सफल हो पायेंगे। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के साथ सम व्यवहार रखता है। आप धनार्जन के लिये कठोर परिश्रम करेंगे। आपको अचानक धन की प्राप्ति भी होगी और कुटुम्ब का सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़ती है, जो मंगल की स्वराशि है। आप साहसी तथा उद्यमी व्यक्ति होंगे, किन्तु अपने भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

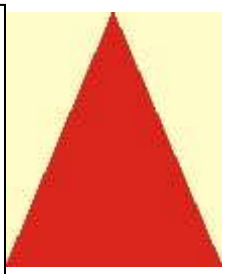

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

यदि आपको मंगल ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

बुध

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिनके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। सामान्यतः तृतीय स्थान में बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, लग्नेश तथा दशमेश बुध तृतीयस्थ होकर आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। बुध आपको पुरुषार्थी, पराक्रमी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होगा किन्तु व्यवहार कुशल होने से आपका व्यवहार मित्रों तथा परिजनों से सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा परिजन भी आपका सम्मान करेंगे। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा और कभी-कभी आपको आँखों के रोग तथा माँसपेशियों की कमज़ोरी की समस्या हो सकती है।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और आपको साहित्य, गणित, यान्त्रिकी, भूगर्भशास्त्र आदि में रुचि रहेगी। आपका रुझान गूढ़ विषयों जैसे ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, धर्मशास्त्र आदि में रहेगा। आपको देशाटन का शौक भी रहेगा। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, और सत्ता पक्ष से भी प्रतिकूल सम्बन्धों के कारण आपके कार्यों में अनावश्यक विलम्ब हो सकता है। भाई-बहनों से आपका स्नेह कम ही रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। आप लेखक, प्रोफेसर, साहित्यकार, गणितज्ञ, भूगर्भशास्त्री बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है, किन्तु व्यापार में आपको लाभ कम ही प्राप्त हो पायेगा। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिनके स्वामी शुक्र की बुध से मित्रता है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे तथा 32वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होने की सम्भावना है।

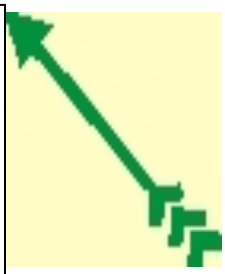

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुह्रच्चनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

यदि आपको बुध ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1- बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2- अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3- किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

गुरु

ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थित है जो गुरु की नीच राशि है। सामान्यतः पंचमस्थ गुरु शुभफल प्रदान करता है। चतुर्थेश तथा सप्तमेश गुरु पंचम स्थान में आपको अच्छे फल देगा। गुरु आपको जनप्रिय, प्रतिष्ठित, उद्यमी, पुरुषार्थी तथा दीर्घायु व्यक्ति बनाता है। आप स्वाभिमानी तथा रुखे स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु आप व्यवहार कुशल रहेंगे, अतः अपनी व्यवहारकुशलता से मित्रों तथा परिजनों को प्रसन्न रखने में आप सफल रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही रहेगा और कभी-कभी आपको पेट तथा पाचन तंत्र, सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, दर्शन, भाषा, पुरातत्व आदि में होगा, साथ ही पुरातन तथा गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि रहेगी, किन्तु अनेक प्रकार की बाधाओं तथा कठिनाइयों से शिक्षा पूरी करने में आपको विलम्ब हो सकता है। अपनी माता से आपके सामान्य सम्बन्ध रहेंगे।

आपका वैवाहिक जीवन सामान्य होगा। आपकी पत्नी सामान्य रंग-रूप युक्त, कार्यकुशल परन्तु कुछ गर्म स्वभाव की हो सकती हैं और कभी-कभी होने वाले मतभेदों के अलावा अपनी पत्नी से आपका सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान की ओर से सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन कमायेंगे, इसके अलावा आपको राजकीय नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है, किन्तु व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव जैसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि सुख-सुविधायें प्राप्त करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका धर्म में रुझान कम हो सकता है और भाग्य चमकने में कुछ विलम्ब हो सकता है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आप अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से आय के नये साधन खोज सकते हैं। गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। अपनी व्यवहारकुशलता से आप सबको प्रसन्न रखने में समर्थ रहेंगे।

जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।
सप्तांकद्विभवः शुभः सुगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।

यदि आपको गुरू ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1- शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2- कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

शुक्र

ओं भृगुपुत्राय विद्‌महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः पंचमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। धनेश तथा नवमेश शुक्र पंचम स्थान में आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। शुक्र आपको कृपण, यशस्वी, विद्वान, परोपकारी तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आप स्वभाव से अभिमानी हो सकते हैं तथा मित्रों और परिजनों के साथ आपका व्यवहार कटु हो सकता है, आपके मित्रों की संख्या सीमित रहेगी तथा परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा और कभी-कभी पेट सम्बन्धी बीमारियों तथा वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा तथा इनमें आप अच्छी सफलता भी प्राप्त करेंगे और इसके अतिरिक्त संगीत, गायन-वादन, पुरातत्व, नाट्य, चलचित्र आदि विद्याओं में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा।

आपकी धर्म में आस्था रहेगी किन्तु धार्मिक कर्मकाण्ड, तीर्थयात्रा आदि में आपका विश्वास कम हो सकता है और 25वें वर्ष में आपका भाग्य उदय हो सकता है। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध साधारण ही रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम या कुछ कृष शारीरिक गठन वाली स्त्री हो सकती हैं। संगीत, कला, गायन आदि क्षेत्रों में उनकी रुचि रहेगी। आपके साथ उनका स्नेह व सामंजस्य रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य रहेगा और आपकी प्रथम सन्तान पुत्री होना सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप प्राध्यापक, लेखक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, संगीतकार, कला मर्मज्ञ, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में भी आपको लाभ उत्तम रहेगा। शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शुक्र की शत्रुता है। आपको आमदनी के एक से अधिक स्रोत प्राप्त होंगे तथा अर्थ संचय करने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानु भौ बु ध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

यदि आपको शुक्र ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1- अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2- कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

शनि

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः दशमस्थ शनि अच्छे फल प्रदान करता है। पंचमेश तथा षष्टेश शनि दशम स्थान में आपके लिए उत्तम फलप्रद रहेगा। शनि आपको सुखी, अधिकार सम्पन्न, धैर्यवान, यशस्वी तथा कार्यकुशल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपको स्नेह रहेगा और मित्रों से आपको अपने व्यवसाय में कई प्रकार से सहायता भी प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, किन्तु कभी-कभी आपको वात सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, विधि, इलेक्ट्रोनिक्स, भाषा, विज्ञान आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपको पठन-पाठन का शौक रहेगा।

अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको सन्तान सुख कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान से आपका मतभेद रह सकता है। शत्रु आपको व्यावसायिक हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर सकते हैं, परन्तु आप उनका दमन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप प्राध्यापक, वकील, मजिस्ट्रेट, तकनीकी अधिकारी, लेखक, अर्थ विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में आपको उत्तम लाभ रहेगा। यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आपका खर्च बढ़ सकता है तथा आयात-निर्यात के व्यापार में आपको विशेष लाभ प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। अपनी माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि के सुख प्राप्ति में विलम्ब या बाधाएँ आ सकती हैं। शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में मीन राशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं बीतेगा। आपकी पत्नी का स्वभाव तेज़ हो सकता है और अपनी पत्नी से आपके वैचारिक मतभेद रहने से आप दोनों पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य नहीं बन पायेगा।

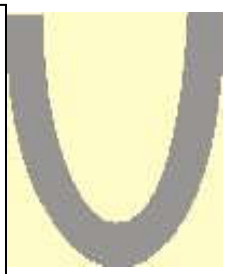

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे
समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्पतिर्यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।

यदि आपको शनि ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

राहु

ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में स्थित है, जो राहु की नीच राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, चतुर्थ स्थान में धनु राशि (नीच राशि) का राहु आपको अशुभ फल देगा। राहु आपको उद्दण्ड, आलसी, प्रवासी तथा चिन्ताग्रस्त व्यक्ति बना सकता है तथा माता-पिता के लिए कष्ट कारक हो सकता है। आप अभिमानी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं तथा क्रोधित होने पर आप हिंसक भी हो सकते हैं। समाज सेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है तथा परिजनों एवं मित्रों से आपके सम्बन्धों में कटुता आ सकती है। आपका स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा तथा रक्त-पित्त, वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको क्षय रोग का भी खतरा हो सकता है और शस्त्र या विष प्रयोग से अपघात हो सकता है।

आपकी बुद्धि अधिक तीव्र नहीं रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विधि, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगा और इसके अतिरिक्त ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों में भी आपकी रुचि होगी। आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा प्रवास भी कर सकते हैं। माता का सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा और यह राहु कभी-कभी सौतेली माता का भी योग बनाता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी और आप शिक्षक, लेखक, वकील, इतिहासकार, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में उतार-चढ़ाव रहने से लाभ कम हो सकता है तथा राजनीति के क्षेत्र में आपके लिए सफलता की सम्भावना कम ही है। जमीन, मकान एवं वाहन आदि की प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती है।

राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की राहु से शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा कभी-कभी आपको आकस्मिक हानि भी हो सकती है। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से दशम् स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो राहु की उच्च राशि है। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा सत्ता पक्ष से प्रतिकूल सम्बन्धों के चलतें आपको हानि उठानी पड़ सकती है। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आपका खर्च भार बढ़ सकता है तथा आयात-निर्यात के व्यापार से मिलने वाले लाभ में कमी हो सकती है।

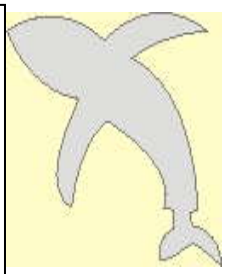

राहुः सिंह्लदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।।
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्च सिंह्किासुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

यदि आपको राहु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1- अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
2- सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

केतु

ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से दशम् स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जो केतु की नीच राशि है। सामान्यतः दशम् स्थान में केतु शुभ फल देता है, दशम् स्थान में मिथुन राशि (नीच राशि) का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। केतु आपको अभिमानी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञाता, प्रवासी, वाहनों से कष्ट पाने वाला, सम्पन्न तथा विजयी पुरुष बनाता है। आप मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे, किन्तु आपमें कुछ हठी या दुराग्रही प्रवृत्ति हो सकती हैं, जिसके कारण कभी-कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे, किन्तु मित्रों का सहयोग आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। कार्य पूर्ति में अनपेक्षित कारणों से विलम्ब हो सकता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका योगदान सीमित हो सकता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी-कभी वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है, इसके अलावा वाहन से दुर्घटना होने का खतरा भी हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स, अर्थशास्त्र, दर्शन, विधि आदि विषयों में रहेगा, साथ ही ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि गूढ़ विषयों के ग्रन्थों के अध्ययन में आपकी रुचि होगी। आपको पर्यटन का शौक रहेगा, किन्तु यात्रा में आपको कष्ट तथा धन हानि का खतरा हो सकता है, आपका प्रवास लाभदायक नहीं रहेगा। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा या उनसे आपके अच्छे सम्बन्ध नही रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप अर्थशास्त्री, वकील, न्यायाधीश, प्राध्यापक, लेखक, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, बैंक, बीमा अधिकारी आदि बनकर धनार्जन करेंगे। केतु से नौकरी में आपको सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, किन्तु कुछ समय बाद आपको पद छोड़ना भी पड़ सकता है। व्यापार में विशेष लाभ सम्भावित नहीं है, जबकि राजनीति में आपको सफलता कम ही मिल पायेगी।

केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। धीरे-धीरे अर्थसंचय में आपको सफलता मिलेगी तथा कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि पर पड़ती है, जो केतु की उच्च राशि है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे और ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से षष्ठम् स्थान में कुम्भ राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रुओं द्वारा आपकी मानहानि के लिए रचे गए कुचक्र विफल रहेंगे तथा शत्रुओं को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।

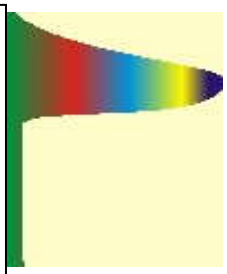

केतु र्जैमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः।
चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहे यो
दक्षिणाशामुखः।।
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा
मङ्गलम्।।

यदि आपको केतु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस-पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1- अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
2- सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ग्रहों का भावस्थिति के अनुसार फल

सूर्य ग्रह का फल

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम् ।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। आपके लिये सूर्य शुभफल दायक सिद्ध होगा। आप आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले होंगे परन्तु आपके स्वभाव में कुछ कठोरता रहेगी। आप बुद्धिमान, परोपकारी तथा कार्यकुशल होंगे। सन्तान सुख में कमी हो सकती है। अपनी माता से आपको प्रेम रहेगा और विशेष परिश्रम से ही जीवन में प्रगति सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप साहसी रहेंगे तथा शत्रु आपसे घबरायेंगे। आपको हृदय सम्बन्धी बीमारी तथा रक्तचाप (ब्लड़ प्रेशर) होने की सम्भावनायें बनती है। धन कमाने के लिये आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा भी कर सकते हैं। संगीत, कला, काव्य, लेखन में आपकी विशेष रुचि रहेगी और आप इन विद्याओं की उन्नति में अपना योगदान भी देंगे।

मध्य आयु तक आप भूमि, मकान, वाहन आदि प्राप्त कर सम्पन्न बन सकते हैं, किन्तु मानसिक सुखशान्ति में कमी हो सकती है। सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में स्थित मिथुन राशि में पड़ रही है जो सूर्य के मित्र बुध की राशि है अतः आपको दशम स्थान से सम्बन्धित शुभ फल प्राप्तहोंगे और आपको अच्छे पद की प्राप्ति होगी। आपको राजकीय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्तहोगी, साथ ही आपको आर्थिक उन्नति के नये अवसर प्राप्त होंगे। अपने पिता से आपके

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु सत्ता पक्ष आपके पक्ष में रहेगा और सत्ता पक्ष द्वारा आपको सम्मान प्रदान किये जाने की भी प्रबल सम्भावना है।

यदि आपको सूर्य ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा ग्रह का फल

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्कों गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान (जन्म लग्न) में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्रमा की मित्रता है। सामान्यतः चन्द्रमा प्रथम स्थान में अच्छे फल प्रदान करता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल प्रदान करेगा। आप मध्यम कद गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप शारीरिक रूप से अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपके व्यक्तित्व में आकर्षण होने से लोग आपसे मित्रता करने के इच्छुक रहेंगे। आपकेमधुर स्वभाव के कारण भी आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा–कदा सामान्य रोगों से आप ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु क्षीण तथा पापाक्रान्त चन्द्रमा आपके स्वास्थ्य के लिये अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है, यह आयु भी कम करता है तथा सिर, नेत्र,गले के विभिन्न रोगों से भी आपको पीड़ित कर सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आप अच्छी प्रगति कर सकते हैं। शैक्षणिक विषयों के अतिरिक्त आप साहित्य, ज्योतिष, शास्त्रीय विषयों का भी अध्ययन कर सकते हैं।

आप वाचाल प्रवृत्ति के तथा वाद–विवाद, आदि में चतुर रहेंगे। आप अच्छे वक्ता भी बन सकते हैं। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपकी आय के एक से अधिक साधन हो सकते हैं। सर्विस की अपेक्षा व्यापार आपके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आपकी प्रवृत्ति मितव्ययी होगी। चन्द्रमा की सप्तम् पूर्ण दृष्टि सप्तम् स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से चन्द्रमा की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा तथा आपकी पत्नी, सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान होंगी। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु पिता का आपको स्नेह मिलेगा। साझेदारी का व्यापार आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होगा तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख आपको प्राप्त होगा।

यदि आपको चन्द्रमा ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल ग्रह का फल

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो मंगल की स्वराशि है। सामान्यतः अष्टमस्थ मंगल शुभफल नहीं देता है। तृतीयेश तथा अष्टमेश मंगल अष्टम स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। मंगल आपको मांगलिक बनायेगा। आपका स्वभाव राजसी तथा कठोर हो सकता है और आपके मित्र और परिजन आपकी नाराज़गी सेभयभीत हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप बचपन में रोगग्रस्त रह सकते हैं, परन्तुआपका स्वास्थ्य युवावस्था में सामान्य रहेगा। कभी–कभी आपको त्वचा रोग हो सकते हैं। आपके हाथ में कोई कमी आ सकती है तथा शस्त्र का भी खतरा हो सकता है। आपकी धर्म में रुचि कम हो सकती है और अपने भाई–बहनों से भी आपकी कम ही बनेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आप दोनों पति–पत्नि के बीच में उत्पन्न वैचारिक मतभेद तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है और आपका दूसरा विवाह भी हो सकता है।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप सैन्य सेवा, गुप्तचर विभाग, फायर मैन, मैकेनिक, खान विभाग आदि में सर्विस कर सकते हैं। आपका मनोबल तथा कार्य–कुशलता अच्छी रहने में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलेगी। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आप आय बढ़ाने के लिये किये गये प्रयत्नों में कम ही सफल हो पायेंगे। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के साथ सम व्यवहार रखता है। आप धनार्जन केलिये कठोर परिश्रम करेंगे। आपको अचानक धन की प्राप्ति भी होगी और कुटुम्ब का सुख

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़तीहै, जो मंगल की स्वराशि है। आप साहसी तथा उद्यमी व्यक्ति होंगे, किन्तु अपने भाई–बहनों सेआपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

यदि आपको मंगल ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध ग्रह का फल

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिनके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। सामान्यतः तृतीय स्थान में बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, लग्नेश तथा दशमेश बुध तृतीयस्थ होकर आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। बुध आपको पुरुषार्थी, पराक्रमी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होगा किन्तु व्यवहार कुशल होने से आपका व्यवहार मित्रों तथा परिजनों से सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा परिजन भी आपका सम्मान करेंगे। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा और कभी–कभी आपको आँखों के रोग तथा माँसपेशियों की कमज़ोरी की समस्या हो सकती है।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और आपको साहित्य, गणित, यान्त्रिकी, भूगर्भशास्त्र आदि में रुचि रहेगी। आपका रुझान गूढ़ विषयों जैसे ज्योतिष, तंत्र–मंत्र, धर्मशास्त्र आदि में रहेगा। आपको देशाटन का शौक भी रहेगा। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, और सत्ता पक्ष से भी प्रतिकूल सम्बन्धों के कारण आपके कार्यों में अनावश्यक विलम्ब हो सकता है। भाई–बहनों से आपका स्नेह कम ही रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। आप लेखक, प्रोफेसर, साहित्यकार, गणितज्ञ, भूगर्भशास्त्री बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है, किन्तु व्यापार में आपकोलाभ कम ही प्राप्त हो पायेगा। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में वृष राशि में पड़ती है,जिनके स्वामी शुक्र की बुध से मित्रता है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे तथा 32वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होने की सम्भावना है।

यदि आपको बुध ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

गुरू ग्रह का फल

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।
सप्तांकद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थितहै जो गुरु की नीच राशि है। सामान्यतः पंचमस्थ गुरु शुभफल प्रदान करता है। चतुर्थेश तथा सप्तमेश गुरु पंचम स्थान में आपको अच्छे फल देगा। गुरु आपको जनप्रिय, प्रतिष्ठित, उद्यमी, पुरुषार्थी तथा दीर्घायु व्यक्ति बनाता है। आप स्वाभिमानी तथा रुखे स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु आप व्यवहार कुशल रहेंगे, अतः अपनी व्यवहारकुशलता से मित्रों तथा परिजनों को प्रसन्न रखने में आप सफल रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहेगा और कभी–कभी आपको पेट तथा पाचन तंत्र, सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, दर्शन, भाषा, पुरातत्व आदि में होगा, साथ ही पुरातन तथा गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि रहेगी, किन्तु अनेक प्रकार की बाधाओं तथा कठिनाइयों से शिक्षा पूरी करने में आपको विलम्ब हो सकता है। अपनी माता से आपके सामान्य सम्बन्ध रहेंगे।

आपका वैवाहिक जीवन सामान्य होगा। आपकी पत्नी सामान्य रंग–रूप युक्त, कार्यकुशल परन्तु कुछगर्म स्वभाव की हो सकती हैं और कभी–कभी होने वाले मतभेदों के अलावा अपनी पत्नी से आपका सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान की ओर से सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकीसन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन कमायेंगे, इसके अलावा आपको राजकीय नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है, किन्तु व्यापार में आपको उतार–चढ़ाव जैसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि सुख–सुविधायें प्राप्त करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका धर्म मेंरुझान कम हो सकता है और भाग्य चमकने में कुछ विलम्ब हो सकता है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आप अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से आय के नये साधन खोज सकते हैं। गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कन्याराशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। अपनी व्यवहारकुशलता से आप सबको प्रसन्न रखने में समर्थ रहेंगे।

यदि आपको गुरू ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र ग्रह का फल

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थितहै, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः पंचमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। धनेश तथा नवमेश शुक्र पंचम स्थान में आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। शुक्र आपको कृपण, यशस्वी, विद्वान, परोपकारी तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आप स्वभाव से अभिमानी हो सकते हैं तथा मित्रों और परजिनों के साथ आपका व्यवहार कटु हो सकता है, आपके मित्रों की संख्या सीमित रहेगी तथा परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा और कभी–कभी पेट सम्बन्धी बीमारियों तथा वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकीबुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा तथा इनमें आप अच्छी सफलता भी प्राप्त करेंगे और इसके अतिरिक्त संगीत, गायन–वादन, पुरातत्व, नाट्य, चलचित्र आदि विद्याओं में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी आपको शौक

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

रहेगा।

आपकी धर्म में आस्था रहेगी किन्तु धार्मिक कर्मकाण्ड, तीर्थयात्रा आदि में आपका विश्वास कम हो सकता है और 25वें वर्ष में आपका भाग्य उदय हो सकता है। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध साधारण ही रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम या कुछ कृष शारीरिक गठन वाली स्त्री हो सकती हैं। संगीत, कला, गायन आदि क्षेत्रों में उनकी रुचि रहेगी। आपके साथ उनका स्नेह व सामंजस्य रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य रहेगा और आपकी प्रथम सन्तान पुत्री होना सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।आप प्राध्यापक, लेखक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, संगीतकार, कला मर्मज्ञ, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में भी आपको लाभ उत्तम रहेगा। शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शुक्र की शत्रुता है। आपको आमदनी के एक से अधिक स्रोत प्राप्त होंगे तथा अर्थ संचय करने में आपको सफलता प्राप्तहोगी।

यदि आपको शुक्र ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि ग्रह का फल

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः दशमस्थ शनि अच्छे फल प्रदान करता है। पंचमेश तथा षष्ठेश शनि दशम स्थान में आपके लिए उत्तम फलप्रद रहेगा। शनि आपको सुखी, अधिकार सम्पन्न, धैर्यवान, यशस्वी तथा कार्यकुशल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपको स्नेह रहेगा और मित्रों से आपको अपने व्यवसाय में कई प्रकार से सहायता भी प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, किन्तु कभी–कभी आपको वात सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, विधि, इलेक्ट्रोनिक्स, भाषा, विज्ञान आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपको पठन–पाठन का शौक रहेगा।

अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको सन्तान सुख कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान से आपका मतभेद रह सकता है। शत्रु आपको व्यावसायिक हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर सकते हैं, परन्तु आप उनका दमन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप प्राध्यापक, वकील, मजिस्ट्रेट, तकनीकी अधिकारी, लेखक, अर्थ विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में आपको उत्तम लाभ रहेगा। यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आपका खर्च बढ़ सकता है तथा आयात–निर्यात के व्यापार में आपको विशेष लाभ प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। अपनी माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि के सुख प्राप्ति में विलम्ब या बाधाएँ आ सकती हैं। शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में मीनराशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं बीतेगा। आपकी पत्नी का स्वभाव तेज़ हो सकता है और अपनी पत्नी से आपके वैचारिक मतभेद रहने से आप दोनों पति–पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य नहीं बन पायेगा।

यदि आपको शनि ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

राहु ग्रह का फल

ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

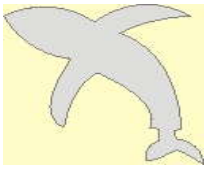

राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।।
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में स्थित है, जो राहु की नीच राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, चतुर्थ स्थान में धनुराशि (नीच राशि) का राहु आपको अशुभ फल देगा। राहु आपको उद्दण्ड, आलसी, प्रवासी तथा चिन्ताग्रस्त व्यक्ति बना सकता है तथा माता–पिता के लिए कष्ट कारक हो सकता है। आप अभिमानी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं तथा क्रोधित होने पर आप हिंसक भी हो सकते हैं। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है तथा परिजनों एवं मित्रों से आपके सम्बन्धों में कटुता आ सकती है। आपका स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा तथा रक्त–पित्त, वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको क्षय रोग का भी खतरा हो सकता है और शस्त्र या विष प्रयोग से अपघात हो सकता है।

आपकी बुद्धि अधिक तीव्र नहीं रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विधि, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगा और इसके अतिरिक्त ज्योतिष, तंत्र–मंत्र आदि गूढ़विषयों में भी आपकी रुचि होगी। आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा प्रवास भी कर सकते हैं। माताका सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा और यह राहु कभी–कभी सौतेली माता का भी योग बनाता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी और आप शिक्षक, लेखक, वकील, इतिहासकार, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में उतार–चढ़ाव रहने सेलाभ कम हो सकता है तथा राजनीति के क्षेत्र में आपके लिए सफलता की सम्भावना कम ही

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

है। ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि की प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती है।

राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की राहु से शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा कभी–कभी आपको आकस्मिक हानि भी हो सकती है। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से दशम् स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो राहु की उच्च राशि है। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा सत्ता पक्ष से प्रतिकूल सम्बन्धों के चलतें आपको हानि उठानी पड़ सकती है। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आपका खर्च भार बढ़ सकता है तथा आयात–निर्यात के व्यापार से मिलने वाले लाभ में कमी हो सकती है।

यदि आपको राहु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

केतु ग्रह का फल

ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः।
चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः।।
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से दशम् स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जो केतु की नीच राशि है। सामान्यतः दशम् स्थान में केतु शुभ फल देता है, दशम् स्थान में मिथुन राशि (नीच राशि) का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। केतु आपको अभिमानी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञाता, प्रवासी, वाहनों से कष्ट पाने वाला, सम्पन्न तथा विजयी पुरुष बनाता है। आपमिलनसार स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे, किन्तु आपमें कुछ हठी या दुराग्रही प्रवृत्ति हो सकती हैं, जिसके कारण कभी–कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे, किन्तु मित्रों का सहयोग आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। कार्य पूर्ति में अनपेक्षित कारणों से विलम्ब हो सकता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका योगदान सीमित हो सकता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी–कभी वात आदि रोगों से आपकोकष्ट हो सकता है, इसके अलावा वाहन से दुर्घटना होने का खतरा भी हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स, अर्थशास्त्र, दर्शन, विधि आदि विषयों में रहेगा, साथ ही ज्योतिष, तंत्र–मंत्र आदि गूढ़ विषयों के ग्रन्थोंके अध्ययन में आपकी रुचि होगी। आपको पर्यटन का शौक रहेगा, किन्तु यात्रा में आपको कष्ट तथा धन हानि का खतरा हो सकता है, आपका प्रवास लाभदायक नहीं रहेगा। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा या उनसे आपके अच्छे सम्बन्ध नहीं रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप अर्थशास्त्री, वकील, न्यायाधीश,प्राध्यापक, लेखक, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, बैंक, बीमा अधिकारी आदि बनकर धनार्जनकरेंगे। केतु से नौकरी में आपको सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, किन्तु कुछ समय बाद आपको पद छोड़ना भी पड़ सकता है। व्यापार में विशेष लाभ सम्भावित नहीं है, जबकि राजनीति मेंआपको सफलता कम ही मिल पायेगी।

केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। धीरे–धीरे अर्थसंचय में आपको सफलता मिलेगी तथा कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि पर पड़ती है, जो केतु की उच्च राशि है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे और ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से षष्ठम् स्थान में कुम्भ राशि कोदेखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रुओंद्वारा आपकी मानहानि के लिए रचे गए कुचक्र विफल रहेंगे तथा शत्रुओं को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।

यदि आपको केतु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ग्रहों का भावस्थिति के अनुसार फल

सूर्य ग्रह का फल

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ।

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरुशशीभौमेषु मित्र सदा।
शुक्रो मंदरिपुकलिङ्गजनितश्चाऽग्नीश्वरो देवता
मध्येवर्तुल पूर्वादिग् दिनकरः कुर्यात् सदा मंगलम् ।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में है जिसका स्वामी गुरु सूर्य का मित्र है। आपके लिये सूर्य शुभफल दायक सिद्ध होगा। आप आकर्षक तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले होंगे परन्तु आपके स्वभाव में कुछ कठोरता रहेगी। आप बुद्धिमान, परोपकारी तथा कार्यकुशल होंगे। सन्तान सुख में कमी हो सकती है। अपनी माता से आपको प्रेम रहेगा और विशेष परिश्रम से ही जीवन में प्रगति सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप साहसी रहेंगे तथा शत्रु आपसे घबरायेंगे। आपको हृदय सम्बन्धी बीमारी तथा रक्तचाप (ब्लड़ प्रेशर) होने की सम्भावनायें बनती है। धन कमाने के लिये आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा भी कर सकते हैं। संगीत, कला, काव्य, लेखन में आपकी विशेष रुचि रहेगी और आप इन विद्याओं की उन्नति में अपना योगदान भी देंगे।

मध्य आयु तक आप भूमि, मकान, वाहन आदि प्राप्त कर सम्पन्न बन सकते हैं, किन्तु मानसिक सुखशान्ति में कमी हो सकती है। सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि दशम स्थान में स्थित मिथुन राशि में पड़ रही है जो सूर्य के मित्र बुध की राशि है अतः आपको दशम स्थान से सम्बन्धित शुभ फल प्राप्तहोंगे और आपको अच्छे पद की प्राप्ति होगी। आपको राजकीय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्तहोगी, साथ ही आपको आर्थिक उन्नति के नये अवसर प्राप्त होंगे। अपने पिता से आपके

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु सत्ता पक्ष आपके पक्ष में रहेगा और सत्ता पक्ष द्वारा आपको सम्मान प्रदान किये जाने की भी प्रबल सम्भावना है।

नाड़ी ग्रंथो में सूर्य से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु से सातवें भाव में केतु स्थित है। आपके पिता का विवाह दबाव में आकर हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। आपके पिता का विवाह मजबूरी में या दबाव में हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य से द्वितीयेश केतु या शुक्र के साथ स्थित है। आपके पिता चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। आपका जन्म किसी मंदिर के पास हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। आपके पिता आपके बचपन में आपकी देखभाल नहीं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य धनु राशि में है। आपका जन्म गणेश भगवान या साईं बाबा के मंदिर के पास हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य धनु राशि में है। आपकी जांघों एवं कमर का आकार सुन्दर होगा।

यदि आपको सूर्य ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्कों गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से प्रथम स्थान (जन्म लग्न) में कन्या राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्रमा की मित्रता है। सामान्यतः चन्द्रमा प्रथम स्थान में अच्छे फल प्रदान करता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल प्रदान करेगा। आप मध्यम कद गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप शारीरिक रूप से अधिक बलिष्ठ नहीं होंगे, किन्तु आपके व्यक्तित्व में आकर्षण होने से लोग आपसे मित्रता करने के इच्छुक रहेंगे। आपकेमधुर स्वभाव के कारण भी आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदा–कदा सामान्य रोगों से आप ग्रसित हो सकते हैं। किन्तु क्षीण तथा पापाक्रान्त चन्द्रमा आपके स्वास्थ्य के लिये अनिष्टकारी सिद्ध हो सकता है, यह आयु भी कम करता है तथा सिर, नेत्र,गले के विभिन्न रोगों से भी आपको पीड़ित कर सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी। शैक्षणिक जीवन में आप अच्छी प्रगति कर सकते हैं। शैक्षणिक विषयों के अतिरिक्त आप साहित्य, ज्योतिष, शास्त्रीय विषयों का भी अध्ययन कर सकते हैं।

आप वाचाल प्रवृत्ति के तथा वाद–विवाद, आदि में चतुर रहेंगे। आप अच्छे वक्ता भी बन सकते हैं। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपकी आय के एक से अधिक साधन हो सकते हैं। सर्विस की अपेक्षा व्यापार आपके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आपकी प्रवृत्ति मितव्ययी होगी। चन्द्रमा की सप्तम् पूर्ण दृष्टि सप्तम् स्थान में मीन राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से चन्द्रमा की मित्रता है। आपका वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा तथा आपकी पत्नी, सुन्दर, सुशिक्षित तथा गुणवान होंगी। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, परन्तु पिता का आपको स्नेह मिलेगा। साझेदारी का व्यापार आपके लिये लाभप्रद सिद्ध होगा

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख आपको प्राप्त होगा।

नाड़ी ग्रंथो में चन्द्रमा से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्र के पीछे स्थित है। आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा सूर्य से दशेमश है। आपके पिता खाद्य पदार्थों का क्रय–विकय करेंगेएवं एक रेस्तरां चला सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा से चौथे भाव में राहु स्थित है। आपको माता–पिता का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा बृहस्पति से नौवें भाव में स्थित है। आप विदेश यात्रायें करेंगे।

यदि आपको चन्द्रमा ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल ग्रह का फल

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में मेष राशि में स्थित है, जो मंगल की स्वराशि है। सामान्यतः अष्टमस्थ मंगल शुभफल नहीं देता है। तृतीयेश तथा अष्टमेश मंगल अष्टम स्थान में आपको अच्छे फल नहीं देगा। मंगल आपको मांगलिक बनायेगा। आपका स्वभाव राजसी तथा कठोर हो सकता है और आपके मित्र और परिजन आपकी नाराज़गी सेभयभीत हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप बचपन में रोगग्रस्त रह सकते हैं, परन्तुआपका स्वास्थ्य युवावस्था में सामान्य रहेगा। कभी–कभी आपको त्वचा रोग हो सकते हैं। आपके हाथ में कोई कमी आ सकती है तथा शस्त्र का भी खतरा हो सकता है। आपकी धर्म में रुचि कम हो सकती है और अपने भाई–बहनों से भी आपकी कम ही बनेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आप दोनों पति–पत्नि के बीच में उत्पन्न वैचारिक मतभेद तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है और आपका दूसरा विवाह भी हो सकता है।

आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप सैन्य सेवा, गुप्तचर विभाग, फायर मैन, मैकेनिक, खान विभाग आदि में सर्विस कर सकते हैं। आपका मनोबल तथा कार्य–कुशलता अच्छी रहने में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी तथा राजनीति के क्षेत्र में भी आपको सफलता मिलेगी। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आप आय बढ़ाने के लिये किये गये प्रयत्नों में कम ही सफल हो पायेंगे। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में तुला राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी शुक्र मंगल के साथ सम व्यवहार रखता है। आप धनार्जन केलिये कठोर परिश्रम करेंगे। आपको अचानक धन की प्राप्ति भी होगी और कुटुम्ब का सुख

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में पड़तीहै, जो मंगल की स्वराशि है। आप साहसी तथा उद्यमी व्यक्ति होंगे, किन्तु अपने भाई–बहनों सेआपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

नाड़ी ग्रंथो में मंगल से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल और बृहस्पति मकर राशि में स्थित हैं। आपको अचल–संपत्ति प्राप्त होगी और आप कृषि कार्य को अपने पेशे के रूप में अपनायेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शनि और राहु के मध्य स्थित है। किसी दुर्घटना में आपके भाई की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल से दसवें भाव में बृहस्पति स्थित है। 28 या 40 वर्ष की आयु में आपएक घर बनवायेंगे या भूमि खरीदेंगे।

यदि आपको मंगल ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध ग्रह का फल

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से तृतीय स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिनके स्वामी मंगल की बुध से शत्रुता है। सामान्यतः तृतीय स्थान में बुध मिश्रित फल प्रदान करता है, लग्नेश तथा दशमेश बुध तृतीयस्थ होकर आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। बुध आपको पुरुषार्थी, पराक्रमी तथा सम्पन्न व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव स्वाभिमानी होगा किन्तु व्यवहार कुशल होने से आपका व्यवहार मित्रों तथा परिजनों से सौहार्द्रपूर्ण रहेगा। आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा परिजन भी आपका सम्मान करेंगे। आपका स्वास्थ्य साधारण रहेगा और कभी–कभी आपको आँखों के रोग तथा माँसपेशियों की कमज़ोरी की समस्या हो सकती है।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और आपको साहित्य, गणित, यान्त्रिकी, भूगर्भशास्त्र आदि में रुचि रहेगी। आपका रुझान गूढ़ विषयों जैसे ज्योतिष, तंत्र–मंत्र, धर्मशास्त्र आदि में रहेगा। आपको देशाटन का शौक भी रहेगा। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, और सत्ता पक्ष से भी प्रतिकूल सम्बन्धों के कारण आपके कार्यों में अनावश्यक विलम्ब हो सकता है। भाई–बहनों से आपका स्नेह कम ही रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। आप लेखक, प्रोफेसर, साहित्यकार, गणितज्ञ, भूगर्भशास्त्री बन सकते हैं। आपको राजकीय सर्विस भी प्राप्त हो सकती है, किन्तु व्यापार में आपकोलाभ कम ही प्राप्त हो पायेगा। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में वृष राशि में पड़ती है,जिनके स्वामी शुक्र की बुध से मित्रता है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे तथा 32वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होने की सम्भावना है।

नाड़ी ग्रंथो में बुध से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध से अगले भाव में शनि और केतु स्थित हैं। आपके शैक्षिणिक जीवन में बाधायें आ सकती हैं।

यदि आपको बुध ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

गुरू ग्रह का फल

ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रूममाश्चापरे।
सप्तांकद्भिवः शुभः सुगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थितहै जो गुरु की नीच राशि है। सामान्यतः पंचमस्थ गुरु शुभफल प्रदान करता है। चतुर्थेश तथा सप्तमेश गुरु पंचम स्थान में आपको अच्छे फल देगा। गुरु आपको जनप्रिय, प्रतिष्ठित, उद्यमी, पुरुषार्थी तथा दीर्घायु व्यक्ति बनाता है। आप स्वाभिमानी तथा रुखे स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु आप व्यवहार कुशल रहेंगे, अतः अपनी व्यवहारकुशलता से मित्रों तथा परिजनों को प्रसन्न रखने में आप सफल रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहेगा और कभी–कभी आपको पेट तथा पाचन तंत्र, सम्बन्धी बीमारियों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी। आपका रुझान साहित्य, दर्शन, भाषा, पुरातत्व आदि में होगा, साथ ही पुरातन तथा गूढ़ विद्याओं में आपकी रुचि रहेगी, किन्तु अनेक प्रकार की बाधाओं तथा कठिनाइयों से शिक्षा पूरी करने में आपको विलम्ब हो सकता है। अपनी माता से आपके सामान्य सम्बन्ध रहेंगे।

आपका वैवाहिक जीवन सामान्य होगा। आपकी पत्नी सामान्य रंग–रूप युक्त, कार्यकुशल परन्तु

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

कुछ गर्म स्वभाव की हो सकती हैं और कभी–कभी होने वाले मतभेदों के अलावा अपनी पत्नी से आपका सामंजस्य बना रहेगा। सन्तान की ओर से सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकीसन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, साहित्यकार, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन कमायेंगे, इसके अलावा आपको राजकीय नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है, किन्तु व्यापार में आपको उतार–चढ़ाव जैसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा ज़मीन, मकान, वाहन आदि सुख–सुविधायें प्राप्त करने में आपको बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में वृष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। आपका धर्म मेंरुझान कम हो सकता है और भाग्य चमकने में कुछ विलम्ब हो सकता है। इस गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि एकादश स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो गुरु की उच्च राशि है। आप अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से आय के नये साधन खोज सकते हैं। गुरु की नवम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कन्याराशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा। अपनी व्यवहारकुशलता से आप सबको प्रसन्न रखने में समर्थ रहेंगे।

नाड़ी ग्रंथो में गुरू से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति शुक्र के साथ स्थित है। आपका विवाह 12 वर्ष की आयु में हो सकता है अथवा 12 वर्ष की आयु में आप प्रौढ जैसे हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति शुक्र के साथ स्थित है। आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से दसवें भाव पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। आप मुद्रण व मशीनरी का कार्य करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बाद के भावों में शनि और मंगल स्थित हैं। आपके पास घर, वाहन, विलासिता की वस्तुए आदि होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से द्वितीयेश पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपनी आजीविका के लिए कठिन संघर्ष करना होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति सूर्य से दूसरे भाव में स्थित है। आप उत्तम नैतिकता वाले व चरित्रवान व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक ही भाव में स्थित हैं। आप और आपकी पत्नी एक ही गांव या कस्बे के रहने वाले होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ हैं। आपको मानसिक शांति की प्राप्ति नहीं होसकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। 36, 42 और 47 वर्ष की आयु

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

में आपको यश व ख्याति प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से छठे भाव में केतु स्थित है। 6 30, 42 और 53 वर्ष की आयु मेंआपको खतरों का सामना करना पड़ सकता है अथवा आप उसकी आशंका से भयभीत हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से छठे भाव में शनि स्थित है। 50 वर्ष की आयु में आप स्थान परिवर्तन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति लग्नेश होकर पाँचवें भाव में स्थित है। 17, 29, 41 व 53 वर्ष कीआयु में आपको ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से द्वितीयेश बृहस्पति से छठें भाव में स्थित है। 18–19 वर्ष की आयु में आप अपने नौकरों के माध्यम से धनोपार्जन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से चतुर्थेश बृहस्पति से चौथे भाव में स्थित है। 40 वर्ष की आयु में आप भूमि का क्रय करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से षष्ठेश बृहस्पति से ग्यारहवें भाव में स्थित है। 21, 34, 46, 58और 70 वर्ष की आयु में आप बदनामी और शर्म से बीमार पड सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से सप्तमेश बृहस्पति से नौवें भाव में स्थित है। 33, 45, 57/58 और 69 वर्ष की आयु में आपका अपने जीवनसाथी के साथ संबंध विच्छेद हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से अष्टमेश बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। 48, 60 या 72 वर्ष की आयु में किसी गुप्त स्थान पर अथवा कैद में मृत्यु होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से नवमेश बृहस्पति से ग्यारहवें भाव में स्थित है। 35, 47, 53 और 59 वर्ष की आयु में आपके धनी मित्र होंगे एवं आपको उनके माध्यम से उत्तम आय प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से एकादशेश बृहस्पति से चौथे भाव में स्थित है। 28, 40, 52 और 64 वर्ष की आयु में पैतृक संपत्ति प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु बृहस्पति के बाद स्थित है। आप घबराहट व बेचैनी से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु से दूसरे भाव में बृहस्पति स्थित है। आपका कोई भाई नहीं हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बृहस्पति के साथ है तथा मंगल शनि से सातवें भाव में स्थित है। आपके भाई का आपके साथ उत्तम संबंध नहीं हो सकता

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति की दृष्टि शनि से दूसरे भाव पर पड़ रही है। आपके पेशे का संबंध शिक्षण के क्षेत्र से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु शनि के साथ स्थित है। आप एक मशीनों वाली फैक्ट्री में कार्य कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है। 12 वर्ष की आयु में आपका विवाह हो सकता हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। आपके पिता एक धर्मात्मा व्यक्तिहोंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है। आप जन्म से ही धनी होंगे।

यदि आपको गुरू ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र ग्रह का फल

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से पंचम स्थान में मकर राशि में स्थितहै, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः पंचमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। धनेश तथा नवमेश शुक्र पंचम स्थान में आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। शुक्र आपको कृपण, यशस्वी, विद्वान, परोपकारी तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आप स्वभाव से अभिमानी हो सकते हैं तथा मित्रों और परजिनों के साथ आपका व्यवहार कटु हो सकता है, आपके मित्रों की संख्या सीमित रहेगी तथा परिजनों के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा और कभी–कभी पेट सम्बन्धी बीमारियों तथा वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकीबुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा तथा इनमें आप अच्छी सफलता भी प्राप्त करेंगे और इसके अतिरिक्त संगीत, गायन–वादन, पुरातत्व, नाट्य, चलचित्र आदि विद्याओं में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा।

आपकी धर्म में आस्था रहेगी किन्तु धार्मिक कर्मकाण्ड, तीर्थयात्रा आदि में आपका विश्वास कम हो सकता है और 25वें वर्ष में आपका भाग्य उदय हो सकता है। कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध साधारण ही रहेंगे। आपका वैवाहिक जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। आपकी पत्नी लम्बे कद, गेहुँए वर्ण तथा मध्यम या कुछ कृष शारीरिक गठन वाली स्त्री हो सकती हैं। संगीत, कला, गायन आदि क्षेत्रों में उनकी रुचि रहेगी। आपके साथ उनका स्नेह व सामंजस्य रहेगा। आपका सन्तान सुख सामान्य रहेगा और आपकी प्रथम सन्तान पुत्री होना सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।आप प्राध्यापक, लेखक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, संगीतकार, कला मर्मज्ञ, पुरातत्ववेत्ता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में भी आपको लाभ उत्तम रहेगा। शुक्र अपनी सप्तम पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में कर्क राशि को देखता है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शुक्र की शत्रुता है। आपको आमदनी के एक से अधिक स्रोत प्राप्त होंगे तथा अर्थ संचय करने में आपको सफलता प्राप्तहोगी।

नाड़ी ग्रंथो में शुक्र से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बुध से दूसरे भाव में स्थित है। आपकी रूचि ललित कलाओं में होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बुध एवं केतु के साथ स्थित है। आप शराब के आदी हो सकते हैं।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

यदि आपको शुक्र ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि ग्रह का फल

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से दशम स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः दशमस्थ शनि अच्छे फल प्रदान करता है। पंचमेश तथा षष्ठेश शनि दशम स्थान में आपके लिए उत्तम फलप्रद रहेगा। शनि आपको सुखी, अधिकार सम्पन्न, धैर्यवान, यशस्वी तथा कार्यकुशल व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा। अपने मित्रों तथा परिजनों से आपको स्नेह रहेगा और मित्रों से आपको अपने व्यवसाय में कई प्रकार से सहायता भी प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, किन्तु कभी–कभी आपको वात सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, विधि, इलेक्ट्रोनिक्स, भाषा, विज्ञान आदि विषयों में रहेगा,

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

इसके अलावा ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपको पठन–पाठन का शौक रहेगा।

अपने पिता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको सन्तान सुख कम ही प्राप्त हो पायेगा या आपकी सन्तान से आपका मतभेद रह सकता है। शत्रु आपको व्यावसायिक हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर सकते हैं, परन्तु आप उनका दमन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप प्राध्यापक, वकील, मजिस्ट्रेट, तकनीकी अधिकारी, लेखक, अर्थ विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे तथा व्यापार में आपको उत्तम लाभ रहेगा। यह शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वादश स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आपका खर्च बढ़ सकता है तथा आयात–निर्यात के व्यापार में आपको विशेष लाभ प्राप्त होने की सम्भावना नहीं है। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। अपनी माता से आपके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपको ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि के सुख प्राप्ति में विलम्ब या बाधाएँ आ सकती हैं। शनि अपनी दशम पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में मीनराशि को देखता है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं बीतेगा। आपकी पत्नी का स्वभाव तेज़ हो सकता है और अपनी पत्नी से आपके वैचारिक मतभेद रहने से आप दोनों पति–पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य नहीं बन पायेगा।

नाड़ी ग्रंथो में शनि से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि सूर्य से अगले भाव में स्थित है। आपको सरकारी नौकरी प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से अगले भाव पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आपके पेशे का संबंध किसी शैक्षिणिक संस्थान से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन या कन्या राशि में स्थित है। आप व्यावसायी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन राशि में तथा चंद्रमा कर्क राशि (जलीय राशि) में स्थित है। आपशराब के व्यापार में संलग्न हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि केतु के साथ स्थित है। आपके पेशे का संबंध मशीनरी से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि और केतु की युति है। आपको अपने जीवन के प्रारम्भिक अवस्था में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि केतु के साथ स्थित है। आप एक बार अपनी नौकरी गवां सकते हैं या बर्खास्त किये जा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप पेशे के रूप में व्यापार को अपना सकते

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से आठवें भाव में शुक्र स्थित है। आप 20 वर्ष की आयु में अपने पेशे का प्रारम्भ करेंगे तथा 31 वर्ष की आयु में अपना पेशा बदल सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आपकी 32 वर्ष की आयु में आपके पिता की मृत्यु अथवा उनको मृत्युतुल्य कष्ट होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से चौथे भाव में चंद्रमा स्थित है। आपकी 32 वर्ष की आयु में आपकीमाता की मृत्यु अथवा उनको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में राहु स्थित है। आपके 17 वर्ष की आयु में आपके दादा–दादी/नाना–नानी की मृत्यु हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आप 45 वर्ष की आयु में समारोहों या अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से ग्यारहवें भाव में मंगल स्थित है। आप 29, 45 व 57 वर्ष की आयुमें अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से छठे भाव में बुध स्थित है। आप 40 वर्ष की आयु में समारोहों या अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से दूसरे और बारहवें भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है। आप एक स्वतंत्र व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बृहस्पति से छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह स्थिति रोग, शत्रुता, पिता की मृत्यु, माता की यात्रा आदि को दर्शाता है। यद्यपि आप दीर्घायु होंगे, किन्तु आप लम्बे समय तकरोग से पीड़ित रह सकते हैं अथवा आपको रोगादि के कारण मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप यकृत या बड़ी आंत से संबंधित रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपके अनेक शक्तिशाली शत्रु होसकते हैं, जिनसे आपको हानि या भय हो सकता है। आपको जानवरों या पालतु पशुओं से खतराहो सकता है। आपके नौकर–चाकर बहुत असभ्य व रूखे बर्ताव वाले होंगे तथा उनसे आपकोपरेशानी हो सकती है। आप शैक्षणिक संस्थान में कार्यरत हो सकते हैं अथवा आपके व्यवसायका संबंध इससे हो सकता है। आपके पेशे का संबंध जानवरों या उनके चर्म व खाल के क्रय–विक्रय से भी हो सकता है अथवा आप श्रम का निर्यात कर सकते हैं। आपके पिता की मृत्यु किसी तीर्थस्थल पर अथवा दूरस्थ स्थान में हो सकती है। आपकी माता दूरस्थ स्थानों की यात्राएं अधिक करेंगी तथा उनको इन यात्राओं से हानि या परेशानी हो सकती है। आपका भाई अपने पारिवारिक जीवन के संदर्भ में खुशहाल नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आप किसी लोक संबंधी कम्पनी के प्रबंधक या किसी सार्वजनिक संस्थान के प्रमुख हो सकते हैं अथवा आप उत्तम व्यवसाय का संचालन कर सकते है एवं संभवतः आपके व्यवसाय में शक्तिशाली लोग सम्मिलित हो सकते हैं।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आप किसी ऐसे पेशे से जुड़े हो सकते हैं, जिसमें आपके अधीन अनेक कार्य करने वाले कर्मचारी हो सकते हैं अथवा संस्थान के प्रमुख के रूप में कार्य कर सकते हैं। आप आर्किटेक्चर/वास्तुविद या डिजायनर के रूप में भी सफल हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु शनि से सातवें भाव में स्थित है। आप शल्यचिकित्सा संबंधी वस्तुओं काक्रय–विक्रय कर सकते हैं अथवा आपरेशन थियेटर में कार्य कर सकते हैं। आप विद्युत विभाग मेंभी कार्य कर सकते हैं। आप प्रकाश में किए जाने वाले कार्य कर सकते हैं अथवा फोटो स्टुडियों में कार्यरत हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि से दसवें भाव में मीन राशि है। आप मूलतः गरीब व जरूरतमंद लोगों के उद्धार व सामाजिक कल्याण के लिए कार्य कर सकते हैं। आप पर्यटन विभाग में नौकरी कर सकते हैं अथवा टूरिस्ट गाइड के रूप में कार्य कर सकते हैं। आप पीड़ित व जरूरतमंदों की सहायता के लिए अथवा समाज में नीहित समस्याओं पर सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए पत्रकारिता या मीडिया के क्षेत्र में जा सकते हैं। संभवतः आप किसी सामाजिक संगठन के कार्य करसकते हैं अथवा सामाजिक विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। आपके पास आय के दो स्रोत हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में स्थित है, तो आप विदेशी भूमि पर दलित लोगों के उत्थान के लिए निर्मित संगठन में निम्न आय पर कार्य कर सकते हैं।यदि शनि सुव्यवस्थित है, तो आप पॉयलेट या एयर होस्टेस के रूप में कार्य कर सकते हैं अथवा आप वायुयान विभाग से संबंधित कार्य में संलग्न हो सकते हैं।

यदि आपको शनि ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

राहु ग्रह का फल

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

ओं नीलवर्णाय विद्महे सैंहिकेयाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

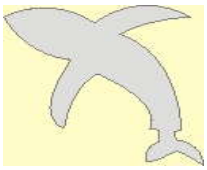

राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो।
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।।
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिंस्थः शुभकृच सिंहिकासुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से चतुर्थ स्थान में धनु राशि में स्थित है, जो राहु की नीच राशि है। सामान्यतः चतुर्थस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, चतुर्थ स्थान में धनुराशि (नीच राशि) का राहु आपको अशुभ फल देगा। राहु आपको उद्दण्ड, आलसी, प्रवासी तथा चिन्ताग्रस्त व्यक्ति बना सकता है तथा माता–पिता के लिए कष्ट कारक हो सकता है। आप अभिमानी स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं तथा क्रोधित होने पर आप हिंसक भी हो सकते हैं। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है तथा परिजनों एवं मित्रों से आपके सम्बन्धों में कटुता आ सकती है। आपका स्वास्थ्य अस्थिर रहेगा तथा रक्त–पित्त, वात आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको क्षय रोग का भी खतरा हो सकता है और शस्त्र या विष प्रयोग से अपघात हो सकता है।

आपकी बुद्धि अधिक तीव्र नहीं रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, विधि, भाषा, दर्शन आदि विषयों में रहेगा और इसके अतिरिक्त ज्योतिष, तंत्र–मंत्र आदि गूढ़विषयों में भी आपकी रुचि होगी। आप पर्यटन में रुचि रखेंगे तथा प्रवास भी कर सकते हैं। माताका सुख आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा और यह राहु कभी–कभी सौतेली माता का भी योग बनाता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी और आप शिक्षक, लेखक, वकील, इतिहासकार, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में उतार–चढ़ाव रहने सेलाभ कम हो सकता है तथा राजनीति के क्षेत्र में आपके लिए सफलता की सम्भावना कम ही है।ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि की प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत की आवश्यकता पड़ सकती

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

है।

राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि अष्टम् स्थान में मेष राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल की राहु से शत्रुता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा कभी–कभी आपको आकस्मिक हानि भी हो सकती है। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से दशम् स्थान में मिथुन राशि को देखता है, जो राहु की उच्च राशि है। पिता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे तथा सत्ता पक्ष से प्रतिकूल सम्बन्धों के चलतें आपको हानि उठानी पड़ सकती है। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से राहु की शत्रुता है। आपका खर्च भार बढ़ सकता है तथा आयात–निर्यात के व्यापार से मिलने वाले लाभ में कमी हो सकती है।

नाड़ी ग्रंथो में राहु से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म जिस घर में हुआ है, उस घर के सामने की सड़क पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म जिस घर में हुआ है, उसका प्रमुख द्वार पूर्व दिशा की ओर होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म गांव, कस्बे या शहर के पूर्वी भागमें हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपको जांघ या नितम्ब से संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु से पाँचवें भाव में मंगल स्थित है। 3, 31 और 49 वर्ष की आयु में आपएक दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। 11–12 वर्ष की आयु में आपको खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पेशे में काफी हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपकी पत्नी को गिरने से चोट लग सकती है अथवा दुर्घटना का शिकार हो सकती हैं। आपकी एक संतान की मृत्यु कम आयु में ही हो सकती है। आप अपने घर अथवा माता से दूररह सकते हैं। आप अपनी अचल संपत्ति भी खो सकते हैं। एक विधवा स्त्री आपकी गुप्त शत्रु होसकती है। आपके सहोदर विदेश में व्यापार या नौकरी कर सकते हैं। आप भी विदेश में उन्नति करेंगे तथा विदेश में संपत्ति भी खरीद सकते हैं। आपको अपने घर में पर्याप्त शैय्या सुख प्राप्त नहींहो सकता है अथवा आपके गोपनीय प्रेम–प्रसंग हो सकते हैं। आप धर्म के विरूद्ध जा सकते हैंअथवा धार्मिक लोगों के साथ शत्रुता उत्पन्न कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु और सूर्य एक साथ स्थित हैं। आपको दृष्टि से संबंधी परेशानी हो सकती है अथवा आप रोगग्रस्त शरीर से पीड़ित रह सकते हैं। पूर्व जन्म में आपको अपने पिता से अभिशाप मिला होगा। आपके पिता का जीवन समस्याप्रद हो सकता है। आपके पिता की मृत्यु काफी कम आयु में ही हो सकती है। आपको सरकार से अथवा धनी व शक्ति संपन्न लोगों से

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

परेशानियां हो सकती हैं। परोक्ष रूप से/अप्रकट रूप से आपका सम्मान व आपकी सराहना की जायेगी। आप एक ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं, जो अपनी झूठी शान बनाये रखना चाहे, अभिमानी एवं अपनी शेखी बघारने वाला हो। आपके पिता स्वतंत्र रूप से रहने वाले व्यक्ति हो सकते हैं तथा उनका अपने परिवार के प्रति अधिक लगाव नहीं हो सकता है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक स्तर परबहुत कष्ट व दुख हो सकता है।

यह योग आपके पूर्व जन्म में पिता द्वारा दिये गये अभिशाप को सूचित करता है। पुत्र संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपको दृष्टि से संबंधित परेशानी हो सकती है। इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको सूर्य भगवान की आराधना करनी चाहिए तथा सात चांदी के सर्पो को 11 दिन तक कच्चे दूध से स्नान करवाना चाहिए। गौ दान करने से और 100 ब्राह्मणों/संतों को भोजन करवाने से इस अभिशाप का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त हो जायेगा।

यदि आपको राहु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिक संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

केतु ग्रह का फल

ओं धूम्रवर्णाय विद्महे कपोतवाहनाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

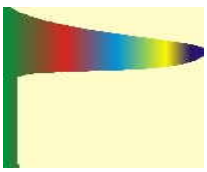

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमृद् वायव्यकोणे स्थितः।
चित्राङ्गध्वज लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः।।
ब्रह्मा चैव सचित्र चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा।
षट्त्रिस्थः शुभकृच बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ।।

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से दशम् स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जो केतु की नीच राशि है। सामान्यतः दशम् स्थान में केतु शुभ फल देता है, दशम् स्थान में मिथुन राशि (नीच राशि) का केतु आपको मिश्रित फल प्रदान करेगा। केतु आपको अभिमानी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञाता, प्रवासी, वाहनों से कष्ट पाने वाला, सम्पन्न तथा विजयी पुरुष बनाता है। आपमिलनसार स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे, किन्तु आपमें कुछ हठी या दुराग्रही प्रवृत्ति हो सकती हैं, जिसके कारण कभी–कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है। परिजनों तथा मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे, किन्तु मित्रों का सहयोग आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा। कार्य पूर्ति में अनपेक्षित कारणों से विलम्ब हो सकता है। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपका योगदान सीमित हो सकता है। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी–कभी वात आदि रोगों से आपकोकष्ट हो सकता है, इसके अलावा वाहन से दुर्घटना होने का खतरा भी हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, भाषा, इलेक्ट्रॉनिक्स, अर्थशास्त्र, दर्शन, विधि आदि विषयों में रहेगा, साथ ही ज्योतिष, तंत्र–मंत्र आदि गूढ़ विषयों के ग्रन्थोंके अध्ययन में आपकी रुचि होगी। आपको पर्यटन का शौक रहेगा, किन्तु यात्रा में आपको कष्ट तथा धन हानि का खतरा हो सकता है, आपका प्रवास लाभदायक नहीं रहेगा। पिता का सुख आपको कम ही प्राप्त होगा या उनसे आपके अच्छे सम्बन्ध नहीं रहेंगे, जबकि सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप अर्थशास्त्री, वकील, न्यायाधीश,प्राध्यापक, लेखक, भाषाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, बैंक, बीमा अधिकारी आदि बनकर धनार्जनकरेंगे। केतु से नौकरी में आपको सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा, किन्तु कुछ समय बाद आपको पद छोड़ना भी पड़ सकता है। व्यापार में विशेष लाभ सम्भावित नहीं है, जबकि राजनीति मेंआपको सफलता कम ही मिल पायेगी।

केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु के सम्बन्ध सम हैं। धीरे–धीरे अर्थसंचय में आपको सफलता मिलेगी तथा कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि चतुर्थ स्थान में धनु राशि पर पड़ती है, जो केतु की उच्च राशि है। माता से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे और ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि से षष्ठम् स्थान में कुम्भ राशि कोदेखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। शत्रुओंद्वारा आपकी मानहानि के लिए रचे गए कुचक्र विफल रहेंगे तथा शत्रुओं को परास्त करने में आप सफल रहेंगे।

नाड़ी ग्रंथो में केतु से संबंधित योग

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु मंगल से तीसरे भाव में स्थित है। आपका भाई धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु बृहस्पति से छठें भाव में स्थित है। 6–7 वर्ष की आयु में आपकी मृत्युया आपको मृत्युतुल्य कष्ट होने का खतरा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु मिथुन राशि में स्थित है। आपको मस्तिष्क से संबंधित रोगों अथवा ऊँचाई से गिरने का भय हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बृहस्पति से छठे भाव में स्थित है। 6–7 वर्ष की आयु में आपके जीवनको खतरा हो सकता है। 65 वर्ष की आयु भी आपके जीवन के लिए घातक हो सकती है। आपको अपने नौकर–चाकर या पालतू पशुओं से कष्ट हो सकता है। आपकी माता को उनके 44 वर्ष की आयु में गंभीर समस्याओं से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपकी माता बहुत अधिक तीर्थयात्रायें करेंगी। आपके पारिवारिक सदस्यों को सट्टे आदि के कारण हानि हो सकती है। आपको शैय्या सुख की प्राप्ति अधिक नहीं हो सकती है। आपको मित्रता का आनन्द बहुत थोड़े समय के लिए प्राप्त हो सकता है। आप आध्यात्मिक दीक्षा प्राप्त करने अथवा उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। मृत लोगों के अभिशाप के कारण आप बीमार पड़ सकतेहैं। आपकी संतान ककर्श वाणी एवं कठोर व्यवहार वाली हो सकती है एवं उनका दाम्पत्य जीवन अधिक खुशहाल नहीं हो सकता है। आपके सहादरों का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। आप एक सम्मानित व महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे तथा आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु शनि के साथ स्थित है। आपको अपने प्रारम्भिक जीवन में बहुत अधिककठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बिजली, आग या रसायन से खतरा हो सकता है तथा संभवतः आपकी मृत्यु अप्राकृतिक रूप से अथवा आत्महत्या के कारण हो सकती है।आपकी रूचि वैदिक अध्ययन में हो सकती है। आपके व्यापार/पेशे में समस्यायें आ सकती हैं। आपको बार–बार अपने व्यापार/पेशे में परिवर्तन करना पड़ सकता है। सामान्यतः केतु और शनि केएक साथ होने पर आप के लिए शिक्षक अथवा उपदेशक आदि का पेशा उपयुक्त रहेगा। किन्तु इस योग के साथ सूर्य के स्थित होने पर आप चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापार या व्यवसाय कर सकतेहैं। जबकि केतु और शनि के साथ चंद्रमा के स्थित होने पर आप रेस्तरां या होटल के व्यापारया पेशे में हो सकते हैं। आपको एक बार अपनी नौकरी से निलंबित किया जा सकता है अथवा आप नौकरी छोड़ सकते हैं एवं दूसरी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं। आप मशीनरी का व्यापार कर सकते हैं अथवा इससे संबंधित कार्य कर सकते हैं। आपको अपने कर्तव्य को निभाने अथवा कार्य को पूरा करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आप कभी–कभी मृतकोंके संस्कार का संचालन करने के आध्यात्मिक पेशे को भी अपना सकते हैं। केतु के साथ शनि की युति होने पर अभिशाप के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको 42 दिनों तक प्रतिदिन भैरो की पूजा करनी चाहिए अथवा भैरो को मदिरा अर्पित करना चाहिए।

यदि आपको केतु ग्रह के लिखे हुए फल में कोई अशुभ बातें लिखी हुई हैं, तो आपको निम्न बातों को ध्यान रखना है।

स्नान करते समय अपनी नाभि में खुशबुदार तेल का लेप करके पूर्वाभिमुख होकर स्नान करें। विष्णु, शिव

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

या दुर्गा का स्मरण कर दिनचर्या शुरू करें। ग्रहण के दौरान, सूर्यास्त से ठीक पहले या बाद में तथा आस–पास में किसी की मृत्यु के बाद शव उठने तक भोजन, मैथुन और कटु वाणी का प्रयोग ना करें। भोजन करते समय अपना सिर ढक कर ना रखें और दक्षिण की ओर मुँह करके भोजन ना करें।

1– अस्पतालों, अनाथालयों अथवा सैनिकों संस्थानों में कार सेवा करें।
2– सफाई कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार ना करें।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु ज्योतिष में ग्रहों का फल

कन्या लग्न में चतुर्थ भाव के सूर्य के केन्द्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित होने से आपको मातृ–सुख तथा भूमि, भवन आदि का लाभ कम रहेगा। बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से आपको सुख प्राप्त होगा, जिससे आपका खर्च चल पायेगा। यहाँ से सूर्य अपनी सातवीं मित्र–दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशम भाव को देखता है, अतः आपको पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कमी तथा असन्तोष का अनुभव होगा।

कन्या लग्न में प्रथम भाव के चन्द्रमा के केन्द्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि परस्थित होने से आपको शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप शारीरिक–श्रम के द्वारा धन का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करेंगे तथा यशस्वी एवं प्रभावशाली बने रहेंगे। यहाँ से चन्द्रमा अपनी सातवीं मित्र–दृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तम भाव को देखता है, अतः आपको सुन्दर स्त्री की प्राप्ति होगी तथा उससे लाभ भी प्राप्त होगा। इसी प्रकार व्यवसाय के द्वारा भी आपको यथेष्ट लाभ प्राप्त होगा। आपका गृहस्थ जीवन सुख एवं सन्तोषपूर्ण बना रहेगा।

कन्या लग्न में अष्टम भाव के मंगल के आयु एवं पुरातत्व के स्थान में अपनी मेष राशि पर स्थित होने से आपको आयु एवं पुरातत्व का लाभ प्राप्त होगा, परन्तु आपके भाई–बहिन के सुख में कमी आ सकती है। यहाँ से मंगल अपनी चौथी नीच–दृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आपको आमदनी के पक्ष में कुछ कमी रह सकती है। मंगल के अपनी सातवीं शत्रु–दृष्टि से द्वितीय भाव कोदेखने से आपको धन–संचय तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ असन्तोष रहेगा। मंगल के अपनी आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीय भाव को देखने के कारण आपके पराक्रम तथा भाई–बहिनके सुख में कुछ वृद्धि होगी तथा गुप्त–हिम्मत भी आप में अधिक बनी रहेगी।

कन्या लग्न में तृतीय भाव के बुध के भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित होने से आपको भाई–बहिनों का सुख प्राप्त होगा तथा आपके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको पिता, राज्य व व्यवसाय के पक्ष से भी सफलता मिलेगी। यहाँ से बुध अपनी सातवीं मित्र–दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में नवम भाव को देखता है, अतः आपके भाग्य की उन्नति होगी तथा आप धर्म का पालन भी करेंगे। आप सुखी, यशस्वी, धनी, धार्मिक, पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

कन्या लग्न में पंचम भाव के गुरु के नीच का होकर त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको सन्तान–पक्ष से कष्ट का अनुभव हो सकता है तथा आप विद्या–बुद्धि के क्षेत्र में भी त्रुटि प्राप्त कर सकते हैं। आपको स्त्री एवं माता के पक्ष से भीकमजोरी मिल सकती है। यहाँ से गुरु अपनी पाँचवीं शत्रु–दृष्टि से नवम भाव को देखता है, अतःआपके भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होगी। गुरु के अपनी सातवीं उच्च–दृष्टि से एकादश भाव को देखने के कारण आप अपनी दिमागी शक्ति से आय को बढ़ाने का प्रयत्न करते रहेंगे तथा आपके लाभ में भी वृद्धि होगी, परन्तु मस्तिष्क में परेशानियाँ बनी रह सकती हैं। गुरु के अपनी नवींमित्र–दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के कारण आपको शारीरिक–शक्ति, मान, प्रभाव एवं कार्यकुशलता की प्राप्ति होगी।

कन्या लग्न में पंचम भाव के शुक्र के भाग्येश होकर त्रिकोण, विद्या एवं सन्तान के भवन में अपने

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित होने से आपको सन्तान के द्वारा श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होगा तथा विद्या–बुद्धि की वृद्धि के साथ ही आपके धन, भाग्य एवं धर्म की भी उन्नति होगी। यहाँ से शुक्र अपनी सातवीं शत्रु–दृष्टि से चन्द्रमा की मकर राशि में एकादश भाव को देखता है, अतः आपकी आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होगी। आप बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर निरन्तर उन्नति करते रहेंगे।

कन्या लग्न में दशम भाव के शनि के केन्द्र, पिता एवं राज्य के स्थान में बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपको पिता के पक्ष से कुछ परेशानी हो सकती है, परन्तु आप राज्य–पक्ष से सम्मानएवं व्यवसाय–पक्ष से लाभ उठायेंगे। आपको विद्या एवं सन्तान–पक्ष से भी लाभ मिलेगा। यहाँसे शनि अपनी तीसरी शत्रु–दृष्टि से द्वादश भाव को देखता है, अतः आपको खर्च के मामले में असन्तोष रह सकता है तथा आपका बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी सुखद नहीं होता है। शनि के अपनी सातवीं शत्रु–दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से आपको माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी आ सकती है। शनि के अपनी दसवीं शत्रु–दृष्टि से सप्तम भाव को देखने के कारण आपको स्त्री के सुख में कमी मिल सकती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिन परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी।

कन्या लग्न में चतुर्थ भाव के राहु के केन्द्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु के धनु राशि पर स्थित होने से आपको माता का सुख खूब प्राप्त होगा, परन्तु भूमि, मकान एवं घरेलू सुख–शान्तिमें कमी बनी रह सकती है। कभी–कभी आपको घरेलू कारणों से भी घोर संकटों का सामना करना पड़ सकता है। आपको मातृ–भूमि से वियोग अर्थात् परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होगा। आपको मातृ–भूमि में कष्ट मिलेंगे, परन्तु बाहरी स्थानों में जाकर अपनी गुप्त योजनाओं के द्वारा आप सुख को प्राप्त करेंगे।

कन्या लग्न में दशम भाव के केतु के केन्द्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित होने से आपको पिता के क्षेत्र में हानि एवं कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। राज्य के क्षेत्र में आपका प्रभाव एवं सम्मान अधिक नहीं रहेगा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में आपको अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको कभी–कभी मान–हानि का शिकार भी बनना पड़ सकता है, तो कभी आप किसी संकट, झगड़े अथवा परेशानी में भी फँस सकते हैं।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

नक्षत्रानुसार फल

आप हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी आद्य, योनि महिष्, वर्ण वैश्य तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का प्रारम्भ 'ष' अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से दानशील पुरुष होंगे तथा यथा शक्ति जरूरतमंद लोगों को जीवन में दान देते रहेंगे। समाज में आप लोकप्रिय होंगे तथा आपकी ख्याति दूर–दूर तक व्याप्त रहेगी। समाज के सभी वर्गों के प्रतिआपके मन में सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य जन भी आपको हार्दिक मान–सम्मान प्रदान करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अगााध श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनके पूजन एवं सत्कार में आप सदैव तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को अर्जित करकेसुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राहमणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पत्ति से सदैव युक्त रहता है।

आप सांसारिक तथा भौतिक भोग्य पदार्थों का अपने जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे तथा परलौकिक कर्मो के लिए दान पुण्य इत्यादि धार्मिक क्रियाकलापों को भी सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप इस लोक तथा परलोक दोनों जगह आनन्द की प्राप्ति करेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा आपकीबुद्धि भी अत्यन्त तीव्रता से युक्त रहेगी। फलतः बुद्धिचातुर्य से अपने सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। समाज के सभी वर्गों के परोपकार सम्बन्धी कार्यों में आप पूर्णतया समर्पित रहेंगे तथा तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप विपुल धन के स्वामी भी बनेंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अर्थात् हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मों को करने वाला तथा धनवान होता है।

उत्साह से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा आपके समस्त कार्य उत्साहपूर्वक ही सम्पन्न होंगे। कभी–कभी आप मन से कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोऽघृणी तस्करो हस्ते।
बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आपके स्वभाव से मदृता का आभास होगा। आप अपने समीपस्थ बन्धु बान्धवों से भी युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त महिला वर्ग सेभी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हसतो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा दाँत, नाक, कान तथा मुखमण्डल सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। स्त्रियों के लिए आपके मन में स्नेहाधिक्य रहेगा। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के उच्च पदों पर आप आसीन रहेंगे। धर्म के प्रति आपमें विशेष श्रद्धा एवं आस्था का भाव रहेगा तथा यत्न से धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे। आप सर्वदा अपने भाषण मेंप्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सत्य एवं शुद्धता का आप विशेष रूप से ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप एक धैर्यवान पुरुष होंगे। फलतः सभी कार्यों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। परोपकारी वृत्ति भी आपके मनमें विद्यमान रहेगी तथा इस वृत्ति का आप पालन करते रहेंगे। साथ ही समस्त जीव तथा प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। देखने में आपका सौन्दर्यशाली रूप सभी को आकर्षित करेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन सुख एवं वैभव से सम्पन्न होगा लेकिन संतति संख्या में कन्याओं की संख्या अधिक त ा पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारूदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अर्थात् कन्याराशि में उत्पन्न जातक स्त्री में अनुरक्त, लम्बे हाथों वाला, सुन्दर मुख, दाँत, कान व नाक वाला, पंडित, आचार्य (अध्यक्ष), धर्मात्मा, प्रियवक्ता सत्य व शुद्धता से श्रेष्ठ धैर्यवान प्राणियों पर दया करने वाला, परोपकारी, सुन्दर, ऐश्वर्य से युक्त अधिक कन्या एवं अल्प पुत्रों वाला होता है।

आप लज्जा तथा आलस्यमय दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे। आपके कंधे तथा भुजाएँ भी शिथिलता से युक्त होंगी। आप समस्त प्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक अपने जीवन काल में उपभोग करेंगे तथा नानाप्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों के तत्व ज्ञान को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। सभी वर्गों के प्रति कार्य करने की इच्छा का आप में बाहुल्य रहेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य मित्र या सम्बन्धी के घर एवं धन का उपयोग करने वाले भी होंगे तथा विदेश जाने की इच्छा भी आपमें निरन्तर बनी रहेगी।

व्रीडामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्वार्मिकः।।
मेघावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवच– कन्याप्रजोऽल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कन्याराशि का जातक लज्जा और आलस्य युक्त शोभन दृष्टि से गमनशील, शिथिलबाहु और कन्धेवाला, सुखी कोमल शरीर युक्त, सत्यवक्ता कलाविद्या में निपुण, शास्त्र तत्वार्थ ज्ञाता, धर्माचरणरत,बुद्धिमान, स्त्रीरतिप्रिय, अन्य के घर तथा धन से युक्त, परदेश प्रिय, प्रियवक्ता, अधिक संख्यक कन्या तथा अल्प संख्यक पुत्रों वाला होता है।

आप स्त्री जाति को अपनी हास्य एवं विलासी क्रियाओं एवं मुद्राओं के द्वारा प्रसन्न करने तथा अपनी ओर आकर्षित करने की कला में अत्यन्त निपुण होंगे। आपका स्वभाव छल कपट विहीन तथा चाल–चलन उत्तमहोगा। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। पापकर्मों में आप की कोई भी अभिरुचि नहीं होगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली पुरुष होंगे तथा अपने जीवन के अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को भाग्यबल से ही सम्पन्न करेंगे।

यवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कन्या राशि का जातक अपने हास–परिहास पूर्ण क्रियाओं से स्त्रियों को प्रसन्न रखने वाला, विनयशील अधिक सन्तति युक्त, सत्कार्यकर्ता तथा भाग्यवान होता है।

आपकी बुद्धि छल से विहीन निर्मल रहेगी तथा लेखन कार्य के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपका स्वभाव शान्त होगा परन्तु कभी–कभी आपको नेत्र कष्टों से पीड़ित रहना पड़ेगा साथ ही आप गुरुजनों के

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

हित कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।
गुरुजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक निर्मल बुद्धिवाला, सुशील लेखन कार्य में बुद्धि लगाने वाला, कवि,कृषि बल को बढ़ाने वाले गुणों से युक्त, क्षमाशील, नेत्र रोगी धार्मिक, शील स्वभाव वाला तथा गुरुजनों का हितकारी होता है।

आप विलासमय प्रवृति से युक्त रहेंगे तथा समस्त भौतिक एवं विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथ से व्यय करेंगे तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप भद्र पुरुषों के प्रति अत्यन्त ही सम्मान का भाव अपने मन में रखेंगे तथा ये लोग भी प्रायः आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप अपनी दानशील प्रवृति का प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा रहेगी तथा जीवन में इसका पालन करेंगे। समाज में आप एक लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। जिससे उचित मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। संगीत तथा अभिनय के प्रति आप पूर्णरूपेण समर्पित रहेंगे तथा आजीवन इनसे आप का गहनसम्बन्ध रहेगा। साथ ही आप प्रवासी भी होंगे।

विलासी सुजनाहलादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि देवमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुःखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक विलासप्रिय, सज्जनों को आदर देकर प्रसन्न रखने वाला, सुन्दर, धर्मात्मा, दानी चतुर, कविता करने वाला, वैदिक रीति पर चलने वाला, सब लोगों से प्रेम करने वाला, नाटक और गान विद्या के व्यसन में रत रहने वाला, देशान्तर में निवास करने वाला तथा स्त्री के कारणदुःख प्राप्त करने वाला होता है।

आपका सम्पूर्ण जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा। कामभावना की आप में प्रबलता रहेगी। फलतः आप इससे यदा–कदा व्याकुलता का एहसास भी करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके मन में सहानुभूति एवं सद्भावना विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त विविध शस्त्रों तथा कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक कामवासना से व्याकुल रहने वाला, मृदु, सुन्दर ओर मनोहर वाणीसे युक्त, अधिक विद्याओं को जानने वाला तथा सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथ मधुर होगी जो अन्य जनों को सुनने में प्रिय लगेगी। आप सत्य के पालन में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप अत्यन्त ही सरल बुद्धि के स्वामी होंगे। आप अपने भावों को सादगी से प्रकट करेंगे तथा अन्य जनों के भावों को सादगी से ग्रहण करेंगे। आप शुद्ध एवंसात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के आप पूर्ण ज्ञाता होंगे तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों के द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे। आप सभी प्रकार की सम्पत्ति तथा धनैश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में कभी इनका अभाव महसूस नहीं करेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा स्वभाव से ही दानशील होंगे। सादगी आपको बहुत पसन्द होगी तथा जीवन को सादगी पूर्ण ढंग से व्यतीत करने में आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपने समाज में आप एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में पहचाने जायेंगे।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।
अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत्।।
मानसागरी

अर्थात् देवगण में पैदा हुआ मनुष्य सुन्दर, दानी, बुद्धिमान, सादगी पसन्द तथा महान विद्वान होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वाद–विवादों तथा लड़ाई–झगड़े के मामलों में सर्वथा विजयी रहेंगे।साथ ही शूरवीरता के लक्षणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं वीरता के साथ अपने कार्य–कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपकी सन्तति संख्या भी अधिक होगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा व्याप्त रहेगी तथा यत्नपूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तिथियाँ, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, शनिवार प्रथम प्रहर तथामिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10, 15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग तथा कौलव करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनो तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जीकी उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना,हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

मंत्र – ऊँ ऐं स्त्री श्रीं बुधाय नमः।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

संयुक्त ग्रहों का फल

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु की युति है। सामान्यतः सुखी जीवन के लिए यह एक अनुकूल युति नहीं होती है। यदि राहु का गोचर अशुभ है, तो अशुभ फल प्राप्त होंगे, किन्तु यदि राहु अनुकूल है, तो आपके लिए बहुत भाग्यवर्द्धक साबित होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु और शुक्र की युति है। आप विद्वान, बुद्धिमान, धनी, सामाजिक, प्रसिद्ध,प्रसन्नचित्त और सम्मान के प्रति सजग व्यक्ति होंगे। आप प्रतिष्ठित व सुख–सुविधा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे तथा आपको पत्नी व संतान का सुख भी प्राप्त होगा। आपकी पत्नी में सद्‌गुणी और सुन्दर होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु और शुक्र की लग्न, पांचवें, आठवें या नौवें भाव में युति है। आप धनी व समृद्ध होंगे तथा आपको पत्नी व संतान का सुख भी प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, गुरु और शुक्र की पांचवें भाव में युति है। आपको अपने संतान से सुख व लाभ प्राप्त होगा। आप शिक्षण व बुद्धिमत्ता से लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि और केतु की युति है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति अधिक होने की संभावना है। आपके जीवन का आधा समय बीत जाने के बाद यह युति आपके लिए काफी लाभप्रदसिद्ध होगी, किन्तु यदि इस युति के साथ कोई तीसरा ग्रह भी युत होता है, तो तीनों ही ग्रहअशुभ फलदायक हो सकते हैं।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

वार्षिक फलादेश –2021

गुरू का प्रभाव (01:01:2021 से 06:04:2021)

आप एक जनप्रिय, प्रतिष्ठित, मेहनती तथा पुरुषार्थी व्यक्ति रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। आप स्वभाव से रुखे, स्वाभिमानी किन्तु अच्छे बर्ताव वाले व्यक्ति होंगे। अपने अच्छे व्यवहार से मित्रों तथा परिजनों को खुश रखेंगे। माता से आपके सम्बन्ध साधारण रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही रहेगा जिससे कभी–कभी पेट तथा पाचन सम्बन्धी बीमारियों से समस्या हो सकती है। आपका बौद्धिक स्तर मध्यमरहेगा। आपका रुझान लिटरेचर, दर्शन, भाषा, पुरातन, आर्केलोजी आदि में रहेगा। अनेक रुकावटों औरकठिनाइयों के कारण शिक्षा पूरी करने में देरी हो सकती है। ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख प्राप्तकरने में रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है। धर्म में आस्था कम हो सकती है।

आपका वैवाहिक जीवन ठीक–ठाक बीतेगा। आपकी पत्नी कामों मे माहिर परन्तु कुछ गर्म स्वभाव की हो सकती हैं, कभी–कभी कुछ छोटी अनबन के अलावा पत्नी से आपका तालमेल बना रहेगा। सन्तान–सुख मे कमी हो सकती है या सन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। कारोबार में आपको उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आपकी मेहनत सेआपको आमदनी के नये स्त्रोत प्राप्त होंगे। आपकी इच्छा लेखक, शिक्षक, ऑथर, आर्केलाजिस्ट आदि बनकर धन कमाने की रहेगी। आपको सरकारी नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है।

गुरू का प्रभाव (06:04:2021 से 14:09:2021)

आप दुश्मनों के कारण दुखी हो सकते हैं। दुश्मन आपको परेशान कर सकते हैं इन दुश्मनों को हरानें में आप सफल रहेंगे। आपके स्वभाव में गर्मी तथा रुखापन हो सकता है। आपके मित्रों की संख्या में कमी हो सकती है और आपके व्यवहार से मित्र भी आपके विरोधी बन सकते हैं। परिजन भी आप से मुँह फेर सकतेहैं। माता–पिता से आपके सम्बन्ध ख़राब हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिससे आपको आँतों की बीमारियों, टी.बी., सांसर्गिक बीमारियाँ हो सकती हैं। आपकी बुद्धि बहुत तीव्र नहीं होगी। आपका रुझान लिटरेचर, मेडिकल, विधि इकोनोमिक्स आदि विषयों में रहेगा।

पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। ज़मीन, मकान, वाहन आदि को प्राप्त करने में देरी या रुकावट हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन से कम ही सुख मिलेगा। आपकी पत्नी सुशिक्षित किन्तु गुस्सैल स्वभाव की हो सकती हैं जिस कारण उनके साथ अनबन हो सकती है। सन्तान–सुख में रुकावट या देरी हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। कारोबार में आपको उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन लाभ के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। लेखक, टीचर, ऑथर, ड़ाक्टर यासरकारी कर्मचारी बनकर धन कमाने की आपकी इच्छा रहेगी। राज्य पक्ष से बिगडे सम्बन्धों के कारण आपको हानि हो सकती है।

गुरू का प्रभाव (14:09:2021 से 21:11:2021)

आप एक जनप्रिय, प्रतिष्ठित, मेहनती तथा पुरुषार्थी व्यक्ति रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। आप स्वभाव से रुखे, स्वाभिमानी किन्तु अच्छे बर्ताव वाले व्यक्ति होंगे। अपने अच्छे व्यवहार से मित्रों तथा परिजनों को खुश रखेंगे। माता से आपके सम्बन्ध साधारण रहेंगे। आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही रहेगा जिससे कभी–कभी पेट तथा पाचन सम्बन्धी बीमारियों से समस्या हो सकती है। आपका बौद्धिक स्तर मध्यमरहेगा। आपका रुझान लिटरेचर, दर्शन, भाषा, पुरातन, आर्केलोजी आदि में रहेगा। अनेक रुकावटों औरकठिनाइयों के कारण शिक्षा पूरी करने में देरी हो सकती है। ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख प्राप्तकरने में रुकावटों का सामना करना पड़ सकता है। धर्म में आस्था कम हो सकती

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

है।

आपका वैवाहिक जीवन ठीक–ठाक बीतेगा। आपकी पत्नी कामों मे माहिर परन्तु कुछ गर्म स्वभाव की हो सकती हैं, कभी–कभी कुछ छोटी अनबन के अलावा पत्नी से आपका तालमेल बना रहेगा। सन्तान–सुख मे कमी हो सकती है या सन्तान का स्वास्थ्य भी आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। कारोबार में आपको उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आपकी मेहनत सेआपको आमदनी के नये स्त्रोत प्राप्त होंगे। आपकी इच्छा लेखक, शिक्षक, ऑथर, आर्केलाजिस्ट आदि बनकर धन कमाने की रहेगी। आपको सरकारी नौकरी प्राप्त होने की भी सम्भावना है।

गुरू का प्रभाव (21:11:2021 से 31:12:2021)

आप दुश्मनों के कारण दुखी हो सकते हैं। दुश्मन आपको परेशान कर सकते हैं इन दुश्मनों को हरानें में आप सफल रहेंगे। आपके स्वभाव में गर्मी तथा रुखापन हो सकता है। आपके मित्रों की संख्या में कमी हो सकती है और आपके व्यवहार से मित्र भी आपके विरोधी बन सकते हैं। परिजन भी आप से मुँह फेर सकतेहैं। माता–पिता से आपके सम्बन्ध ख़राब हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिससे आपको आँतों की बीमारियों, टी.बी., सांसर्गिक बीमारियाँ हो सकती हैं। आपकी बुद्धि बहुत तीव्र नहीं होगी। आपका रुझान लिटरेचर, मेडिकल, विधि इकोनोमिक्स आदि विषयों में रहेगा।

पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। ज़मीन, मकान, वाहन आदि को प्राप्त करने में देरी या रुकावट हो सकती है। आपका वैवाहिक जीवन से कम ही सुख मिलेगा। आपकी पत्नी सुशिक्षित किन्तु गुस्सैल स्वभाव की हो सकती हैं जिस कारण उनके साथ अनबन हो सकती है। सन्तान–सुख में रुकावट या देरी हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। कारोबार में आपको उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन लाभ के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। लेखक, टीचर, ऑथर, ड़ाक्टर यासरकारी कर्मचारी बनकर धन कमाने की आपकी इच्छा रहेगी। राज्य पक्ष से बिगडे सम्बन्धों के कारण आपको हानि हो सकती है।

शनि का प्रभाव (01:01:2021 से 31:12:2021)

आपको सजने–संवरने का शौक रहेगा और आप अच्छे वस्त्र व अच्छे सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगे और आपके रहन–सहन का स्तर अच्छा रहेगा। आपके बल, पौरूष और कीर्ति की वृद्धि होगी। आप बोलने की कला में माहिर रहेंगे और आपमें नेतृत्व का गुण मौजूद रहेगा और आप अपने वर्ग, क्षेत्र, नगर, सेना जहाँ भी हैं, वहाँ प्रधान होंगे। आप सम्पन्न रहेंगे और सभी भौतिक सुखों के साधनों से युक्त होंगे। अपने वंश में आप श्रेष्ठ समझे जायेंगे तथा सभी स्थानों पर आपको मान–सम्मान प्राप्त होगा।

यदि विवाह के लिये प्रयासरत हैं तो विवाह सम्बन्धी योग है। यदि सन्तान की अभिलाषा है तो इस समय सन्तान प्राप्ति भी होगी। कुछ मित्रों से सहयोग प्राप्त होने की सम्भावना रहेगी। आपको आँखों से सम्बन्धितरोग हो सकते हैं। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होगी और प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने की कला में आप माहिर रहेंगे। धर्म में आपकी आस्था रहेगी एवं विश्वास बढ़ेगा। कार्य क्षेत्र में आपको उच्च अधिकारियों का आश्रय प्राप्त होगा तथा पद प्राप्त करेंगे, जिससे अच्छी मात्रा में धन प्राप्त होगा। आपको ज़मीन–मकान तथा चौपाये पशु अथवा वाहन प्राप्त होंगे। लॉटरी–शेयर आदि अचानक लाभ देने वाले साधनों से आपको लाभ होगा।

आप अपने अभिष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे तथा दूसरों के ऊपर आपको अधिकार प्राप्त होगा। सरकारी विभागों में भी अधिकारियों से जान–पहचान व मित्रता करने में सफल हो जायेंगे। आप परदेश में

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भी वास करेंगे और सेना जैसे कार्य क्षेत्र में हैं, तो आप अपनी शूरवीरता का प्रदर्शन करेंगे। आपका अपने पिता से विरोध व विवाद हो सकता है। कुटुम्बजनों से मुकदमेंबाजी हो सकती है व कलह–विवाद हो सकता है। दुष्ट स्त्रियों का संग प्राप्त हो सकता है, जिस कारण पत्नी से आपका मतभेद हो सकता है औरसन्तान से किसी भाँति वियोग हो सकता है और सन्तान से कष्ट हो सकता है। आपको अच्छे मित्र प्राप्त नहीं हो पायेंगे और मित्रों से भी आपकी दूरी हो सकती है।

आपके खर्च बढ़ सकते है और आपको धन प्राप्त करने के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। व्यापार में हानि की स्थिति हो सकती है, विश्वासघात से धन हानि हो सकती है एवं अयोग्य लोगों के नीचे आपकोकार्य करना पड़ सकता है। सरकारी विभागों या कार्यक्षेत्र से खतरा हो सकता है। आप रोगों से पीड़ित हो सकते हैं और आपका शरीर कमज़ोर हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशान्त व व्याकुल होसकते हैं। आप में उत्तेजना के भाव प्रखर हो सकते हैं। आपको अपने कार्यों में असफलताओं का मुँह देखना पड़ सकता है।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

मासिक फलादेश –2021

01:01:2021 से 13:01:2021 तक

आप अपनी कोशिशों में नाकाम होने पर हताश हो सकते हैं, इसके अलावा आप स्वभाव से कठोर हो सकतेहैं, जिसके कारण आपके मित्र और सम्बन्धी आपसे सम्बन्ध रखना कम ही पसन्द करेंगे और उनका सहयोग प्राप्त होने में बाधा उत्पन्न हो सकती हैं। पिता से आपके सम्बन्ध ठीक रहेंगे, जबकि आपको ननिहाल पक्ष से सुख कम ही मिल पायेगा। धन कमाने के लिये आपके द्वारा की गई कड़ी मेहनत के बावजूद सफलता कम ही मिल पायेगी।

आपका स्वास्थ्य साधारण ही रहेगा, जिससे घुटने और पैरों की बीमारियाँ हो सकती हैं, कभी–कभी आँखों और कान की बीमारियों से भी कष्ट हो सकता है। आपके खर्च बढ़ सकते हैं। आपकी सोच अनैतिक तरीकेअपनाने की हो सकती है। व्यापार की बजाय सर्विस के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में अचानक हानि हो सकती हैं। आपको रिश्वत, तस्करी आदि अवैधानिक तरीकों से दूर ही रहना चाहिये वरना सत्ता पक्ष द्वारा आर्थिक या शारीरिक रूप से दण्डित किया जा सकता है। कुछ कठिनाइयों का सामना करने के बाद आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

14:01:2021 से 11:02:2021 तक

आप व्यावहारिक रहेंगे, किन्तु कुछ हठी स्वभाव के हो सकते हैं, आपके हठी स्वभाव के कारण भी आपके परिजन भी आपसे असन्तुष्ट हो सकते हैं और पिता के साथ आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। आपको वैवाहिक सुख प्राप्त करने के लिये विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, इसके अलावा आपसी ताल–मेल की कमी के कारण पत्नी से मतभेद भी हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, फिर भी कभी–कभी आँखों के रोग, खुजली, त्वचा रोग, बवासीर आदि रोगों से आपको कष्ट हो सकता है, इसके अलावा आपको कुछ मानसिक चिन्ताएँ भी घेर सकती है। स्वास्थ्य आदि कारणों से आपके कार्य पूरे होने में देरी या बाधाएँ उत्पन्न हो सकती है। आप एक मेहनती व्यक्ति रहेंगे और अपने जन्म स्थान से दूर रहकर कारोबार करने पर आप अधिक सफल रहेंगे, परन्तु किन्हीं कारणो से आपको हानि का सामना भी करना पड़ सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। साझेदारी के व्यापार में आपको लाभ होगा। सत्ता पक्ष के साथ आपके सम्बन्ध खराब ही रहेंगे, जिसके चलते किसी प्रकार के आर्थिक दंड आदि का खतरा हो सकता है।

12:02:2021 से 13:03:2021 तक

आप स्वभाव से रुखे हो सकते हैं जिस कारणवश परिवार के लोग आपसे नाराज़ हो सकते हैं साथ ही आपके मित्रों की संख्या भी कम हो सकती है। कुटुम्ब के लोगों से भी आपको विशेष सहयोग नहीं मिल पायेगा, अतः आपको कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और पिता से आपके बिगड़े सम्बन्धो के कारण पिता की ओर से भी प्राप्त होने वाली पूरी सहायता और सहयोग नहीं मिल पायेगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, फिर भी कभी–कभी आँखों के रोग और मुँह के रोगों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि प्रखर रहेगी। आपकी रुचि विज्ञान विषय में रहेगी, जबकि साहित्य आदि में आपका रुझान कम ही रहेगा।

आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है और आपको धन कमाने के लिये अपने पिता के स्थान से

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

दूर रहना पड़ सकता है। किसी को उधार दिया गया धन वापस मिलने की सम्भावना न के बराबर है। आपखर्चीले रहेंगे और आपकी सोच अनैतिक साधनों से धन कमाने की हो सकती है, जिससे कभी–कभी रिश्वत, लॉटरी आदि से कुछ धन प्राप्त हो सकता है, फिर भी इनसे हानि ही अधिक होगी। वसीयत आदि से आपको अचानक धन लाभ या गुप्त धन प्राप्त हो सकता है। व्यावहारिक मधुरता की कमी के कारण सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं अतः सावधनी बरतें वरन् हानि भी हो सकती है।

14:03:2021 से 13:04:2021 तक

आप उत्साही और कार्यकुशल रहेंगे। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा, किन्तु आप कुछ अभिमानी हो सकते हैं।पिता से आपको स्नेह और सहयोग प्राप्त होगा, जबकि आपको भाई–बहिनों से आपका मेल कम ही रहेगा, जिससे उनका सहयोग नहीं मिल पायेगा। धर्म आपकी आस्था बढ़ेगी तथा पूजा–पाठ, दान–पुण्य आदि कर्मों में आप लीन रहेंगे।

आपको भाग्य का सहारा भी मिलने पर अपने सभी कार्यों में आप सफल होंगे, जिससे आने वाले समय में धीरे–धीरे अपनी आर्थिक स्थिति सुधार लेंगे। आपको आमदनी निरन्तर प्राप्त होती रहेगी, किन्तु खर्च बढ़ जाने से धन का संग्रह नहीं हो पायेगा। धन के लेन–देन और उधार के रूप में दिया गया धन वापस मिलने की सम्भावना भी न के बराबर ही है। आपकी सोच न्यायिक क्षेत्र, लेखन, प्रकाशन और शिक्षा के क्षेत्रद्वारा धन कमाने की रहेगी और इन क्षेत्रों में किये गये आपके कार्यों में आप सफल भी रहेंगे। सत्ता पक्षसे आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

14:04:2021 से 14:05:2021 तक

आप एक साहसी किन्तु स्वभाव से कठोर व्यक्ति हो सकते हैं, जिसके कारण परिजनों से आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं और आपको उनका पूरा सहयोग भी नहीं मिल पायेगा। माता से भी अधिक सुख प्राप्त नहींहो पायेगा। पिता से आपके सम्बन्ध कुछ खास अच्छे नहीं रहेंगे, जिस कारण आपके कार्यों में पिता का पूरा सहयोग नहीं मिल पायेगा, इसके अलावा आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने की सम्भावना भी न के बराबर है, सम्पत्ति के कारण आपको विवादों का समाना करना पड़ सकता है और पैतृक सम्पत्ति को सम्हालेरखना आपके लिये एक कठिन समस्या बन सकती है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, फिर भी ब्लड़ प्रेशर और दिल की बीमारियों आदि के कारण आपको कष्ट उठाना पड़ सकता है। आपकी बुद्धि प्रखर और आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। अपनी मेहनत से जमा किये गये धन से आप ज़मीन, मकान और वाहन आदि भौतिक सुविधाओं का सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। व्यवसाय में प्रगति प्राप्त करने के लिये आपको दूर पास की विभिन्न यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं, इसके अलावा आपको विदेश यात्रा का भी अवसर प्राप्त हो सकता है। आपके विरोधी भी आपके सामने खुद को लाचार महसूस करेंगे। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे।

15:05:2021 से 14:06:2021 तक

आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। पिता से आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं, जिस कारण आपके कार्यों में उनका सहयोग कम ही मिल पायेगा। सन्तान सुख आपको कम ही प्राप्त होगा, इसके अलावा आपकी सन्तान आज्ञा कम ही मानेगी और आप सन्तान से सम्बन्धित किसी चिन्ता से भी परेशान हो सकते हैं। आपपेट और पाचन सम्बन्धी रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपकी बुद्धि बहुत प्रखर नहीं रहेगी।

आपकी रुचि कूटनीति, गूढ़ विद्या, मंत्र शास्त्र आदि में रहेगी और आप इन विषयों का ज्ञान भी प्राप्त

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

करेंगे। आपकी रुचि संगीत, नाटक, काव्य आदि में रहेगी। आपकी शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा नहीं रहेगा।आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी, फिर भी आप अपनी मेहनत से आपकी आर्थिक स्थिति में धीरे–धीरे सुधार कर लेंगे। आपको धन तो प्राप्त होता रहेगा किन्तु किसी न किसी कारण आपका धन जल्दी ही खर्च हो जाने से धन का संग्रह नहीं हो पायेगा। कारोबार में आप उचित धन प्राप्त करेंगे। सर्विसकी बजाय व्यापार व्यवासाय में आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपको सट्टे, जुऐं आदि बुरी आदतों से दूर ही रहना चाहिये। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे।

15:06:2021 से 15:07:2021 तक

आप एक निडर और अपने भाई–बहिनों में स्नेह रखने वाले व्यक्ति होंगे। आपके स्वभाव में रुखापन हो सकता है, जिसके कारण आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है और कुटुम्ब के लोग भी आपसे मुँह फेर सकते हैं। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे और पिता का सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। आपकी सोच अपने शत्रुओं को पराजित करने की रहेगी। आप अपनी मेहनत और कार्यकुशलता से आर्थिक स्थिति सुधारने में सफल रहेंगे। नौकरी के क्षेत्र में आपके स्वभाव के कारण आपके सहकर्मियों या उच्च अधिकारियों के साथ अनबन हो सकती है, जिससे उन लोगों का सहयोग कम ही प्राप्त हो पायेगा।

आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आपके अचानक खर्चे होते रहेंगे, फिर भी आपका कोई भी कार्य धन की कमी के कारण नहीं रुकेगा। आपका स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, जिससे गठिया रोग, फेफड़े और तंत्रिका रोगों से आपको कष्ट हो सकता है, किन्तु ये रोग गम्भीर न रहकर सामान्य इलाज के द्वारा जल्दी ही ठीकभी हो जायेंगे। आप फिजूलखर्ची हो सकते हैं। व्यापार में किये गये लेन–देन में किसी प्रकार की हानिहो सकती है, फिर भी विदेश व्यापार या आयात–निर्यात के व्यापार में आपको लाभ होगा। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध समान्य रहेंगे।

16:07:2021 से 16:08:2021 तक

आप व्यावहारिक रहेंगे, किन्तु कठोर स्वभाव के हो सकते हैं। आपके परिजन भी आपसे नाराज़ हो सकते हैं,जिससे उनका सहयोग कम ही मिल पायेगा। पिता के साथ आपके सम्बन्ध ठीक रहेंगे। आपके वैवाहिक सुख में बाधा हो सकती है। आपकी पत्नी सुन्दर महिला होंगी, किन्तु उनका स्वभाव तेज़ और अस्थिर हो सकता है, और तालमेल की कमी के कारण आपसी मतभेद हो सकते हैं अतः सावधानी ज़रुरी है वरना यें मतभेद आने वाले समय में समस्या बन सकते हैं। आपके लिये चरित्र पर लांछन भी लग सकता है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा, जिससे यौन रोग और कुसंगति के कारण भी अनेक रोग आपको पीड़ितकर सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। आप वॉटर वर्क्स या जलशक्ति से सम्बन्धित क्षेत्रके अलावा होटल व्यवसाय, शीतल पेय निर्माता या विक्रेता, कलाकार आदि के कार्यों से धन कमायेंगे। साझेदारी के व्यापार की बजाय निजी व्यवसाय में आप अच्छा धन लाभ प्राप्त करेंगे। खराब सम्बन्धों के चलते सत्ता पक्ष से हानि भी हो सकती है।

17:08:2021 से 16:09:2021 तक

आप साहसी रहेंगे और आपकी सोच मेहनत और चतुराई से कार्य करने की रहेगी। आप अपने मन के भावों को छिपाकर रखेंगे आपके मन में किसी के लिये क्रोध या घृणा होने पर भी उसके सामने आप सौम्य ही बने रहेंगे। कुटुम्ब के लोग भी आपके साथ सहयोग कम ही करेंगे इसके अलावा परिजनों से मतभेद भीहो सकते हैं। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे जिससे अपने विभिन्न कार्यों में पिता का सहयोग प्राप्त करेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। अपना कार्य बनाने के लिये आप अनुचित साधनों का प्रयोग

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

आपकी सेहत बहुत अच्छी नहीं रहेगी, जिस कारण आँखों के रोग, पेट और पित्त सम्बन्धी बीमारियों से आपको पीड़ा हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन कमाने के लिये आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। धन का संग्रह नहीं हो पायेगा बल्कि आपके खर्चीलेपन के कारण आपका जमा धन भी खर्च हो सकता है तथा धन की कमी भी हो सकती है। नौकरी की बजाय कारोबार में आपको अधिक धन लाभ होगा। सत्ता पक्ष से भी आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

17:09:2021 से 16:10:2021 तक

आप एक मेहनती और साहसी व्यक्ति होंगे और आपकी सोच नई होगी, किन्तु विवेक और फैसला लेने की कमी के कारण आपको कठिनाईयों और असफलताओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्वभाव में ईर्ष्या और बोली में कटुता हो सकती है, जिससे परिवार के लोग आपसे नाराज़ हो सकते हैं। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे, जिसके कारण भी आपको विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकताहै। भाई–बहिनों से भी आपका मेल कम ही रहेगा और उनका पूरा सहयोग नहीं मिल पायेगा। धर्म–कर्म में आपकी आस्था कम हो सकती है और आपका भाग्य चमकने में विलम्ब हो सकता है।

आपके चरित्र पर लांछन भी लग सकता है, जिससे समाज में आपका यश भी कम हो सकता है। आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा, फिर भी मुँह के रोगों और गठिया रोगों से आपको कष्ट हो सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी। नौकरी की बजाय कारोबार में आपको अधिक धन लाभ प्राप्त होगा, इसके अलावा कृषि, होटल या लॉज के कारोबारी या रेस्ट हाऊस के मैनेजर जैसे कार्यों से आप सफलता प्राप्त करेंगे। धन प्राप्त करने के लिये उचित–अनुचित साधनों का प्रयोग करने में भी आपको कोई संकोच नहीं होगा। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

17:10:2021 से 15:11:2021 तक

आपके स्वभाव में रुखापन हो सकता है, जिसके कारण मित्र और सम्बन्धी भी आपका साथ नहीं देंगे। आपके विचार अस्थिर हो सकते हैं, जिससे लोग आपके ऊपर भरोसा कम ही कर पायेंगे और आपको सहयोग कम ही मिल पायेगा। आपको पिता का सहयोग या सुख कम ही मिल पायेगा, इसके अलावा पिताकी सम्पत्ति प्राप्त करने में भी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको माता का पूरा सुख नहीं मिल पायेगा और उनका स्वास्थ्य में भी कमज़ोर हो सकता है। आपके स्वास्थ्य में भी गिरावट आ सकती है, जिससे विभिन्न प्रकार के रोग समय–असमय आपको पीड़ा पहुँचा सकते हैं, कफ सम्बन्धी रोग अधिक हो सकते हैं।

आपकी रुचि संगीत, नाटक, चलचित्र आदि में रहेगी। आप अपनी मेहनत और आपकी कार्य कुशलता से अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर लेंगे। जज या बैरिस्टर के पद पर तरक्की और सफलता प्राप्त करेंगे। कारोबार में अधिक लाभ प्राप्त करने में कठिनाईयाँ हो सकती हैं, फिर भी किसी वसीयत आदि द्वारा या किसी के दत्तक पुत्र बनने की स्थिति में धन प्राप्त होगा। आपके द्वारा धन संग्रह के लिये किये गये प्रयासोंमें सफलता मिलने की सम्भावना कम ही है। कुछ कठिनाईयों के बाद आप ज़मीन, मकान और वाहनआदि भौतिक साधनों का सुख प्राप्त करेंगे। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे, सत्ता पक्ष से सम्बन्धित आपके कार्य पूरा होने में देरी हो सकती है।

16:11:2021 से 15:12:2021 तक

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आप स्वभाव से तेज़ हो सकते हैं, जिस कारण आपके परिवार के लोग आपसे नाराज़ हो सकते हैं। आपके मित्र आपके लेवल से नीचे के लेवल के होंगे। उनसे किसी प्रकार के सहयोग की आशा करना बेकार ही है। पिता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। सन्तान सुख में कमी और सन्तान सम्बन्धी कोई चिन्ता भी हो सकती हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा किन्तु कुछ बीमारियों से आपको पीड़ा हो सकती हैं। शिक्षा के दौरान शारीरिक अस्वस्थता के कारण भी कठिनाओं और असफलताओं का सामना करना पड़ सकता है, फिर भी आप मेहनत करके अपनी शिक्षा पूरी कर लेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी ही रहेगी। राजकीय या निजी क्षेत्र के सेवाकार्यों में आपको पद में तरक्की प्राप्त होगी, इसके अलावा वेतन में वृद्धि द्वारा भी लाभ होगा। आपके लिये धन कमाने का मुख्य साधन सर्विस का क्षेत्र ही रहेगा। बार बार कार्य बदलने के कारण आपको आर्थिक रूप से कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ सकता है, जिससे धन संग्रह करने में कठिनाई हो सकती हैं। कारोबार में अधिक मेहनत के बाद भी हानि होने का खतरा बना रहेगा। सत्ता पक्ष से आपके सम्बन्ध ठीक रहेंगे।

16:12:2021 से 31:12:2021 तक

आप अपनी कोशिशों में नाकाम होने पर हताश हो सकते हैं, इसके अलावा आप स्वभाव से कठोर हो सकतेहैं, जिसके कारण आपके मित्र और सम्बन्धी आपसे सम्बन्ध रखना कम ही पसन्द करेंगे और उनका सहयोग प्राप्त होने में बाधा उत्पन्न हो सकती हैं। पिता से आपके सम्बन्ध ठीक रहेंगे, जबकि आपको ननिहाल पक्ष से सुख कम ही मिल पायेगा। धन कमाने के लिये आपके द्वारा की गई कड़ी मेहनत के बावजूद सफलता कम ही मिल पायेगी।

आपका स्वास्थ्य साधारण ही रहेगा, जिससे घुटने और पैरों की बीमारियाँ हो सकती हैं, कभी–कभी आँखों और कान की बीमारियों से भी कष्ट हो सकता है। आपके खर्च बढ़ सकते हैं। आपकी सोच अनैतिक तरीकेअपनाने की हो सकती है। व्यापार की बजाय सर्विस के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी। कारोबार में अचानक हानि हो सकती हैं। आपको रिश्वत, तस्करी आदि अवैधानिक तरीकों से दूर ही रहना चाहिये वरना सत्ता पक्ष द्वारा आर्थिक या शारीरिक रूप से दण्डित किया जा सकता है। कुछ कठिनाइयों का सामना करने के बाद आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

जीवन रत्न

यह रत्न आपके लिये धन, पद, यश, स्वास्थ्य, आयु की वृद्धि करवाने वाला रहेगा।

ग्रह विवरण

लग्न	कन्या
नक्षत्र	हस्ता – 2
लग्नाधिपति	बुध
उच्चस्थ	–––
मूलत्रिकोन	–––
स्वराशिगत	–––
अस्त	हाँ
नीचस्थ	–––
वक्री	–––
केन्द्रगत	–––
त्रिकोनगत	–––
मारक भाव में	–––
त्रिक भाव में	–––
केन्द्राधिपति	हाँ
त्रिकोनाधिपति	–––
मारकेश	–––
त्रिकभावपति	–––

ओं चन्द्रपुत्राय विद्महे रोहिणीप्रियाय धीमहि
तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः।।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	पन्ना (एमरल्ड)
उप–रत्न	
बैरूज(एक्वामेरीन), मरगज(नेफ्नाइट)	
दिन	बुधवार
नक्षत्र	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
विपरीत–रत्न	
मोती, मूंगा	
मंत्र	
ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः (19000 जप)	
दान विवरण 1	
पन्ना, स्वर्ण, काँस्य, मूंग, खांड, घृत, कपूर, कस्तूरी	
दान विवरण 1	
हरा वस्त्रा, सर्वपुष्प, हाथी दाँत, शस्त्रा, फल	
रत्न कैसे धारण करें	
पन्ना तीन या छः रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद बुध के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंट के बीच धारण करना उत्तम फलप्रद रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

आपका लग्नेश बुध है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप बुध के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भाग्य रत्न

यह रत्न आपके लिये सन्तान सुख, विद्या–विवेक दायक तथा नौकरी और व्यापार में वृद्धि कारक रहेगा।

♀ ग्रह विवरण

लग्न	कन्या
नक्षत्र	हस्ता – 2
नवमेश	शुक्र
उच्चस्थ	–––
मूलत्रिकोन	–––
स्वराशिगत	–––
अस्त	–––
नीचस्थ	–––
वक्री	–––
केन्द्रगत	–––
त्रिकोनगत	हाँ
मारक भाव में	–––
त्रिक भाव में	–––
केन्द्राधिपति	–––
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	हाँ
त्रिकभावपति	–––

ओं भृगुपुत्राय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्।
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।।
इन्द्राणी मघवानुभौ बुध शनी मित्रार्क चन्द्रौ रिपू।
षष्ठो द्विर्दश वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	हीरा (डायमण्ड)
उप–रत्न	
वैक्रान्त(तुरमुली), सफेद हकीक(व्हाईट एगेट)	
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी, पू. फाल्गुनी, पू. आषाढ़ा
विपरीत–रत्न	
माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज	
मंत्र	
ऊँ द्रां द्रीं द्रों सः शुक्राय नमः (6000 जप)	
दान विवरण 1	
हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दधि, कपूर, घृत	
दान विवरण 1	
श्वेत वस्त्रा, श्वेत पुष्प, श्वेत अश्व, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय	
रत्न कैसे धारण करें	
हीरा 46 सेंट का प्लेटिनम या चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में शुक्रवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शुक्र के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

कारक रत्न

यह रत्न आपके लिये भाग्योदय, धन वृद्धि तथा व्यापार व्यवसाय में लाभ प्रदायक रहेगा।

ग्रह विवरण

लग्न	कन्या
नक्षत्र	हस्ता – 2
पंचमेश	शनि
उच्चस्थ	–––
मूलत्रिकोन	–––
स्वराशिगत	–––
अस्त	–––
नीचस्थ	–––
वक्री	हाँ
केन्द्रगत	हाँ
त्रिकोनगत	–––
मारक भाव में	–––
त्रिक भाव में	–––
केन्द्राधिपति	–––
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	–––
त्रिकभावपति	हाँ

ओं कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः।
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुधसितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।।
स्थानं पश्चिमदिक्प्रजापति यमौ देवौ धनुष्यासनः।
षट्त्रिस्थः शभकच्छनी रविसतः कर्यात मंगलम।।

ऊँ प्रां प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः (23000 जप)

रत्न विवरण

रत्न	नीलम (ब्लू सफायर)
उप–रत्न	
काकानीली(आयोलाईट), लाजवर्त(लेपिस लेजुली)	
दिन	शनिवार
नक्षत्र	पुष्य, अनुराधा, उ. भाद्रपद
विपरीत–रत्न	
माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज	
मंत्र	
ऊँ प्रां प्रीं प्रों सः शनैश्चराय नमः (23000 जप)	
दान विवरण 1	
नीलम, स्वर्ण, लौह, उड़द, कुलथी, तेल, कस्तूरी, तिल	
दान विवरण 1	
कृष्ण पुष्प, कृष्ण वस्त्रा, कृष्ण गौ, चर्म पादुका, भैंस	
रत्न कैसे धारण करें	
नीलम चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद शनि के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्यास्त से एक घंटे के बीच धारण करना श्रेष्ठ फलकारक रहता है।	

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका पंचमेश आपकी कुण्डली में किसी त्रिक भाव का स्वामी है, इसलिए पंचमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Jeewan Ratna (Based on Root Number)

This gemstone brings you Wealth, Prosperity, Fame, Long Life and Good Health.

NUMEROLOGICAL PARTICULARS

Root Number (Moolank)	**9**
Favorable Gem	**CORAL**
Favorable Upa-Ratna	
RED AGATE, CERNELIN RHODONES	
Friendly Numbers	3, 6
Enemy Numbers	1, 7
Favorable Years	
3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39	
Favorable Months	MAR, JUN, SEP, DEC
Favorable Dates	
3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, 30	
Favorable Days	
SUNDAY, MONDAY, TUESDAY, THURSDAY	
Favorable Planets	SUN, MOON, MARS, JUPT, KETU
Unfavorable Planets	MERC, RAHU
Favorable Color	RED
Favorable Metal	COPPER
Favorable Cereal	LENTIL PULSE
Favorable Root (Jadi)	ANANT ROOT
Favorable Time	AFTERNOON
Favorable Direction	SOUTH
Unfavorable Years	
1, 7, 10, 16, 19, 25, 28, 34, 37, 43, 46, 52, 55	
Unfavorable Months	JANUARY, JULY
Unfavorable Dates	
1, 7, 10, 16, 19, 25, 28	
Unfavorable Days	
WEDNESDAY, SATURDAY	
Favorable Deity	GOD HANUMAN
Favorable Mantra	
OM KRAM KREEM KROM SAH BHOMAYA NAMAH (10000 Times)	
Favorable Yantra	MARS YANTRA
Wearing Instructions	
Purify A Coral (blood Red) (6 Carat) Ring Made In Gold With Milk And Holy Water. Worship It By Reciting Mars Tantric Mantra For 108 Times (one Mala). Now Wear This Sanctified Ring In The Ring Finger Of Your Right Hand Between First Hour From Sunrise. It Will Bring You Beneficial Results.	

ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकलोदभवः क्षितिसुतः कर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः (10000 जप)

Numerological Yantra

8	3	10
9	7	5
4	11	6

Astrologer's Conclusion

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

Jeewan Ratna (Based on Root Number)

This gemstone brings you Wealth, Prosperity, Fame, Long Life and Good Health.

NUMEROLOGICAL PARTICULARS

Root Number (Moolank)	**9**
Favorable Gem	**CORAL**
Favorable Upa-Ratna	
RED AGATE, CERNELIN RHODONES	
Friendly Numbers	3, 6
Enemy Numbers	1, 7
Favorable Years	
3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39	
Favorable Months	MAR, JUN, SEP, DEC
Favorable Dates	
3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, 30	
Favorable Days	
SUNDAY, MONDAY, TUESDAY, THURSDAY	
Favorable Planets	SUN, MOON, MARS, JUPT, KETU
Unfavorable Planets	MERC, RAHU
Favorable Color	RED
Favorable Metal	COPPER
Favorable Cereal	LENTIL PULSE
Favorable Root (Jadi)	ANANT ROOT
Favorable Time	AFTERNOON
Favorable Direction	SOUTH
Unfavorable Years	
1, 7, 10, 16, 19, 25, 28, 34, 37, 43, 46, 52, 55	
Unfavorable Months	JANUARY, JULY
Unfavorable Dates	
1, 7, 10, 16, 19, 25, 28	
Unfavorable Days	
WEDNESDAY, SATURDAY	
Favorable Deity	GOD HANUMAN
Favorable Mantra	
OM KRAM KREEM KROM SAH BHOMAYA NAMAH (10000 Times)	
Favorable Yantra	MARS YANTRA
Wearing Instructions	
Purify A Coral (blood Red) (6 Carat) Ring Made In Gold With Milk And Holy Water. Worship It By Reciting Mars Tantric Mantra For 108 Times (one Mala). Now Wear This Sanctified Ring In The Ring Finger Of Your Right Hand Between First Hour From Sunrise. It Will Bring You Beneficial Results.	

ओं क्षितिपुत्राय विद्महे लोहितांगाय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात।

भौमो दक्षिणादिक् त्रिकोण यमदिग् विघ्नेश्वरो रक्तभः,
स्वामी वृश्चिक मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरि षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद् देवते,
भारद्वाजकलोदभवः क्षितिसुतः कर्यात् सदा मंगलम्।।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः (10000 जप)

Numerological Yantra

8	3	10
9	7	5
4	11	6

Astrologer's Conclusion

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु योग फल

भृगु सूत्रामृतम् 3

आपकी कुंडली में लग्नेश और दशमेश मंगल या शनि से दृष्ट हैं। यह एक शुभ योग है आप दयावान और पुत्र–पौत्रों से युक्त होंगे।

भृगु सूत्रामृतम् 44

आपकी कुंडली में पंचमेश केंद्र या त्रिकोण में स्थित है और उसके साथ अन्य ग्रह भी स्थित हैं तथाबृहस्पति क्रूर ग्रहों की राशि में स्थित है। यह एक अशुभ योग है, आप संतान के मामलों में सुखी नहीं होंगे।

भृगु सूत्रामृतम् 56

आपकी कुंडली में 2, 2 ग्रह 3 भाव में स्थित है या 1, 1 ग्रह 3 भाव में तथा तीन ग्रह एक भाव में स्थित है। यह एक शुभ योग है, आप अपनी उम्र के 26 वर्ष से लेकर जीवन पर्यंत महा सुखी होंगे।आपको राजा या मंत्री के समान पद प्राप्त होगा।

भृगु सूत्रामृतम् 90

आपकी कुंडली में पंचमेश चौथे, छठे, आठवें या दसवें भाव में स्थित है। यह एक शुभ योग है, आपसर्व प्रकार से सुखी और संपन्न होंगे।

भृगु सूत्रामृतम् 110

आपकी कुंडली में अधिकाधिक ग्रह केंद्रीय भाव में स्थित है। यह एक मिश्रित फलों वाला योग है, जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ती जाएगी, आपको इस योग के शुभ फल प्राप्त होंगे।

भृगु सूत्रामृतम् 112

आपकी कुंडली के कम से कम 6 भावों में ग्रह बैठे हुए हैं। यह एक अशुभ योग है।

भृगु सूत्रामृतम् 227

आपकी कुंडली में 6 या 6 से ज्यादा ग्रह लग्न से लेकर छठे भाव तक स्थित हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आप संपन्न और सुविधा भोगी व्यक्ति होंगे। आपके विचार प्रगतिशील होंगे तथा भौतिक सुख साधनों का आपके पास अंबार लगा होगा।

भृगु सूत्रामृतम् 252

आपकी कुंडली में कोई भाव दो ग्रहों से दृष्ट है तथा इन दो ग्रह में से एक उस भाव का अधिपतिहै और दूसरा उस भाव का कारक ग्रह है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक प्रकार का राजयोग है।

भृगु सूत्रामृतम् 294

आपकी कुंडली में चंद्रमा और बृहस्पति एक दूसरे से केंद्र में स्थित हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आपजीवन में उन्नति करेंगे।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु सूत्रामृतम् 309

आपकी कुंडली में शुक्र नीच का है और कुंडली में शनि और केतु एक साथ बैठे हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आप अस्थमा या सांसो से संबंधित बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

भृगु सूत्रामृतम् 311

आपकी कुंडली में अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे। आपके बच्चे आपकी आज्ञा का पालन करेंगे और आप व्यापारिक क्षेत्र में काफी उन्नति करेंगे और शत्रुओं से आपको कोई भय नहीं होगा।

भृगु सूत्रामृतम् 346

आपकी कुंडली में शनि और सूर्य एक दूसरे से सातवें भाव में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यहस्वास्थ्य के लिए खराब योग है। आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं और 40 से 64 वर्ष की उम्र के बीच में आप डिप्रेशन में भी जा सकते हैं। आपके उच्चाधिकायिों और सहयोगीयों की वजह से आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी।

भृगु सूत्रामृतम् 425

आपकी कुंडली में अष्टमेश या तो त्रिक भाव में स्थित है या नीच का होकर बैठा हुआ है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक प्रकार का विपरीत राजयोग है। इस योग की वजह से कुंडली में उपस्थित अशुभ योगों से आपका बचाव होगा।

भृगु सूत्रामृतम् 427

आपकी कुंडली में शुक्र द्वितीयेश या सप्तमेश है। महर्षि भृगु के अनुसार, इस स्थिति में शुक्र पूर्णरूपेण से मारक सिद्ध होगा।

भृगु सूत्रामृतम् 430

आपकी कुंडली में सप्तमेश त्रिकोण में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यदि आप व्यापारी हैं तो आप अत्यंत लाभ की स्थिति में होंगे।

भृगु सूत्रामृतम् 464

आपकी कुंडली में सप्तमेश और एकादशेश के बीच में दृष्टि संबंध है। महर्षि भृगु के अनुसार, आपको विवाह में दहेज की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी परंतु वैवाहिक सुख के लिए यह योग ठीक नहीं है। आपको अपने जीवनसाथी से मतभेद हमेशा बना रह सकता है।

भृगु सूत्रामृतम् 476

आपकी कुंडली में मंगल की दृष्टि कर्क राशि पर है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक अत्यंत कष्टदायक योग है।

भृगु सूत्रामृतम् 489

आपकी कुंडली में शनि पर राहु की दृष्टि है या राहु, शनि के साथ ही स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह योग धर्म गुरुओं के धार्मिक गुणों का ह्रास करता है।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

भृगु सूत्रामृतम् 494

आपकी कुंडली में मंगल की दृष्टि दूसरे भाव पर है। महर्षि भृगु के अनुसार, आप एक अच्छे कृषकया व्यवसायी होंगे।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

नाड़ी ग्रन्थों में विभिन्न योग

आपकी कुंडली में लग्नेश और दशमेश मंगल या शनि से दृष्ट हैं। यह एक शुभ योग है आप दयावान और पुत्र–पौत्रों से युक्त होंगे।

आपकी कुंडली में पंचमेश केंद्र या त्रिकोण में स्थित है और उसके साथ अन्य ग्रह भी स्थित हैं तथाबृहस्पति क्रूर ग्रहों की राशि में स्थित है। यह एक अशुभ योग है, आप संतान के मामलों में सुखी नहीं होंगे।

आपकी कुंडली में 2, 2 ग्रह 3 भाव में स्थित है या 1, 1 ग्रह 3 भाव में तथा तीन ग्रह एक भाव में स्थित है। यह एक शुभ योग है, आप अपनी उम्र के 26 वर्ष से लेकर जीवन पर्यंत महा सुखी होंगे।आपको राजा या मंत्री के समान पद प्राप्त होगा।

आपकी कुंडली में पंचमेश चौथे, छठे, आठवें या दसवें भाव में स्थित है। यह एक शुभ योग है, आपसर्व प्रकार से सुखी और संपन्न होंगे।

आपकी कुंडली में अधिकाधिक ग्रह केंद्रीय भाव में स्थित है। यह एक मिश्रित फलों वाला योग है, जैसे–जैसे आपकी उम्र बढ़ती जाएगी, आपको इस योग के शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपकी कुंडली के कम से कम 6 भावों में ग्रह बैठे हुए हैं। यह एक अशुभ योग है।

आपकी कुंडली में 6 या 6 से ज्यादा ग्रह लग्न से लेकर छठे भाव तक स्थित हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आप संपन्न और सुविधा भोगी व्यक्ति होंगे। आपके विचार प्रगतिशील होंगे तथा भौतिक सुख साधनों का आपके पास अंबार लगा होगा।

आपकी कुंडली में कोई भाव दो ग्रहों से दृष्ट है तथा इन दो ग्रह में से एक उस भाव का अधिपतिहै और दूसरा उस भाव का कारक ग्रह है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक प्रकार का राजयोग है।

आपकी कुंडली में चंद्रमा और बृहस्पति एक दूसरे से केंद्र में स्थित हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आपजीवन में उन्नति करेंगे।

आपकी कुंडली में शुक्र नीच का है और कुंडली में शनि और केतु एक साथ बैठे हैं। महर्षि भृगु के अनुसार, आप अस्थमा या सांसो से संबंधित बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं।

आपकी कुंडली में अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, आपकी उम्र लंबी होगी।आप अपने जीवन में उन्नति करेंगे। आपके बच्चे आपकी आज्ञा का पालन करेंगे और आप व्यापारिक क्षेत्र में काफी उन्नति करेंगे और शत्रुओं से आपको कोई भय नहीं होगा।

आपकी कुंडली में शनि और सूर्य एक दूसरे से सातवें भाव में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यहस्वास्थ्य के लिए खराब योग है। आप हृदय रोग से ग्रसित हो सकते हैं और 40 से 64 वर्ष की उम्र के बीच में आप डिप्रेशन में भी जा सकते हैं। आपके उच्चाधिकायिों और सहयोगीयों की वजह से आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपकी कुंडली में अष्टमेश या तो त्रिक भाव में स्थित है या नीच का होकर बैठा हुआ है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक प्रकार का विपरीत राजयोग है। इस योग की वजह से कुंडली में उपस्थित अशुभ योगों से आपका बचाव होगा।

आपकी कुंडली में शुक्र द्वितीयेश या सप्तमेश है। महर्षि भृगु के अनुसार, इस स्थिति में शुक्र पूर्णरूपेण से मारक सिद्ध होगा।

आपकी कुंडली में सप्तमेश त्रिकोण में स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यदि आप व्यापारी हैं तो आप अत्यंत लाभ की स्थिति में होंगे।

आपकी कुंडली में सप्तमेश और एकादशेश के बीच में दृष्टि संबंध है। महर्षि भृगु के अनुसार, आपको विवाह में दहेज की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी परंतु वैवाहिक सुख के लिए यह योग ठीक नहीं है। आपको अपने जीवनसाथी से मतभेद हमेशा बना रह सकता है।

आपकी कुंडली में मंगल की दृष्टि कर्क राशि पर है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह एक अत्यंत कष्टदायक योग है।

आपकी कुंडली में शनि पर राहु की दृष्टि है या राहु, शनि के साथ ही स्थित है। महर्षि भृगु के अनुसार, यह योग धर्म गुरुओं के धार्मिक गुणों का ह्रास करता है।

आपकी कुंडली में मंगल की दृष्टि दूसरे भाव पर है। महर्षि भृगु के अनुसार, आप एक अच्छे कृषकया व्यवसायी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु से सातवें भाव में केतु स्थित है। आपके पिता का विवाह दबाव में आकर हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु एक साथ स्थित हैं। आपके पिता का विवाह मजबूरी में या दबाव में हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य से द्वितीयेश केतु या शुक्र के साथ स्थित है। आपके पिता चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। आपका जन्म किसी मंदिर के पास हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। आपके पिता आपके बचपन में आपकी देखभाल नहीं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य धनु राशि में है। आपका जन्म गणेश भगवान या साईं बाबा के मंदिर के पास हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य धनु राशि में है। आपकी जांघों एवं कमर का आकार सुन्दर होगा।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्र के पीछे स्थित है। आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा सूर्य से दशेमश है। आपके पिता खाद्य पदार्थों का क्रय–विकय करेंगेएवं एक रेस्तरां चला सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा से चौथे भाव में राहु स्थित है। आपको माता–पिता का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा बृहस्पति से नौवें भाव में स्थित है। आप विदेश यात्रायें करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल और बृहस्पति मकर राशि में स्थित हैं। आपको अचल–संपत्ति प्राप्त होगी और आप कृषि कार्य को अपने पेशे के रूप में अपनायेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शनि और राहु के मध्य स्थित है। किसी दुर्घटना में आपके भाई की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल से दसवें भाव में बृहस्पति स्थित है। 28 या 40 वर्ष की आयु में आपएक घर बनवायेंगे या भूमि खरीदेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध से अगले भाव में शनि और केतु स्थित हैं। आपके शैक्षिणिक जीवन में बाधायें आ सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति शुक्र के साथ स्थित है। आपका विवाह 12 वर्ष की आयु में हो सकता है अथवा 12 वर्ष की आयु में आप प्रौढ जैसे हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति शुक्र के साथ स्थित है। आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से दसवें भाव पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। आप मुद्रण व मशीनरी का कार्य करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बाद के भावों में शनि और मंगल स्थित हैं। आपके पास घर, वाहन, विलासिता की वस्तुए आदि होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से द्वितीयेश पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपनी आजीविका के लिए कठिन संघर्ष करना होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति सूर्य से दूसरे भाव में स्थित है। आप उत्तम नैतिकता वाले व चरित्रवान व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक ही भाव में स्थित हैं। आप और आपकी पत्नी एक ही गांव या कस्बे के रहने वाले

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र एक साथ हैं। आपको मानसिक शांति की प्राप्ति नहीं होसकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। 36, 42 और 47 वर्ष की आयु मेंआपको यश व ख्याति प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से छठे भाव में केतु स्थित है। 6 30, 42 और 53 वर्ष की आयु मेंआपको खतरों का सामना करना पड़ सकता है अथवा आप उसकी आशंका से भयभीत हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से छठे भाव में शनि स्थित है। 50 वर्ष की आयु में आप स्थान परिवर्तन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति लग्नेश होकर पाँचवें भाव में स्थित है। 17, 29, 41 व 53 वर्ष कीआयु में आपको ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से द्वितीयेश बृहस्पति से छठें भाव में स्थित है। 18–19 वर्ष की आयु में आप अपने नौकरों के माध्यम से धनोपार्जन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से चतुर्थेश बृहस्पति से चौथे भाव में स्थित है। 40 वर्ष की आयु में आप भूमि का क्रय करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से षष्ठेश बृहस्पति से ग्यारहवें भाव में स्थित है। 21, 34, 46, 58और 70 वर्ष की आयु में आप बदनामी और शर्म से बीमार पड सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से सप्तमेश बृहस्पति से नौवें भाव में स्थित है। 33, 45, 57/58 और 69 वर्ष की आयु में आपका अपने जीवनसाथी के साथ संबंध विच्छेद हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से अष्टमेश बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। 48, 60 या 72 वर्ष की आयु में किसी गुप्त स्थान पर अथवा कैद में मृत्यु होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से नवमेश बृहस्पति से ग्यारहवें भाव में स्थित है। 35, 47, 53 और 59 वर्ष की आयु में आपके धनी मित्र होंगे एवं आपको उनके माध्यम से उत्तम आय प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से एकादशेश बृहस्पति से चौथे भाव में स्थित है। 28, 40, 52 और 64 वर्ष की आयु में पैतृक संपत्ति प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु बृहस्पति के बाद स्थित है। आप घबराहट व बेचैनी से ग्रसित हो सकते

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु से दूसरे भाव में बृहस्पति स्थित है। आपका कोई भाई नहीं हो सकताहै।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बृहस्पति के साथ है तथा मंगल शनि से सातवें भाव में स्थित है। आपके भाई का आपके साथ उत्तम संबंध नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति की दृष्टि शनि से दूसरे भाव पर पड़ रही है। आपके पेशे का संबंध शिक्षण के क्षेत्र से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु शनि के साथ स्थित है। आप एक मशीनों वाली फैक्ट्री में कार्य कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है। 12 वर्ष की आयु में आपका विवाह हो सकता हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति से बारहवें भाव में सूर्य स्थित है। आपके पिता एक धर्मात्मा व्यक्तिहोंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है। आप जन्म से ही धनी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बुध से दूसरे भाव में स्थित है। आपकी रूचि ललित कलाओं में होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र बुध एवं केतु के साथ स्थित है। आप शराब के आदी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि सूर्य से अगले भाव में स्थित है। आपको सरकारी नौकरी प्राप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से अगले भाव पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आपके पेशे का संबंध किसी शैक्षिणिक संस्थान से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन या कन्या राशि में स्थित है। आप व्यावसायी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन राशि में तथा चंद्रमा कर्क राशि (जलीय राशि) में स्थित है। आपशराब के व्यापार में संलग्न हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि केतु के साथ स्थित है। आपके पेशे का संबंध मशीनरी से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि और केतु की युति है। आपको अपने जीवन के प्रारम्भिक अवस्था में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि केतु के साथ स्थित है। आप एक बार अपनी नौकरी गवां सकते हैं

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

या बर्खास्त किये जा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप पेशे के रूप में व्यापार को अपना सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से आठवें भाव में शुक्र स्थित है। आप 20 वर्ष की आयु में अपने पेशे का प्रारम्भ करेंगे तथा 31 वर्ष की आयु में अपना पेशा बदल सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आपकी 32 वर्ष की आयु में आपके पिता की मृत्यु अथवा उनको मृत्युतुल्य कष्ट होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से चौथे भाव में चंद्रमा स्थित है। आपकी 32 वर्ष की आयु में आपकीमाता की मृत्यु अथवा उनको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में राहु स्थित है। आपके 17 वर्ष की आयु में आपके दादा–दादी/नाना–नानी की मृत्यु हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आप 45 वर्ष की आयु में समारोहों या अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से ग्यारहवें भाव में मंगल स्थित है। आप 29, 45 व 57 वर्ष की आयुमें अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से छठे भाव में बुध स्थित है। आप 40 वर्ष की आयु में समारोहों या अनुष्ठानों का संचालन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से दूसरे और बारहवें भाव में कोई ग्रह स्थित नहीं है। आप एक स्वतंत्र व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बृहस्पति से छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह स्थिति रोग, शत्रुता, पिता की मृत्यु, माता की यात्रा आदि को दर्शाता है। यद्यपि आप दीर्घायु होंगे, किन्तु आप लम्बे समय तकरोग से पीड़ित रह सकते हैं अथवा आपको रोगादि के कारण मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप यकृत या बड़ी आंत से संबंधित रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपके अनेक शक्तिशाली शत्रु होसकते हैं, जिनसे आपको हानि या भय हो सकता है। आपको जानवरों या पालतु पशुओं से खतराहो सकता है। आपके नौकर–चाकर बहुत असभ्य व रूखे बर्ताव वाले होंगे तथा उनसे आपकोपरेशानी हो सकती है। आप शैक्षणिक संस्थान में कार्यरत हो सकते हैं अथवा आपके व्यवसायका संबंध इससे हो सकता है। आपके पेशे का संबंध जानवरों या उनके चर्म व खाल के क्रय–विक्रय से भी हो सकता है अथवा आप श्रम का निर्यात कर सकते हैं। आपके पिता की मृत्यु किसी तीर्थस्थल पर अथवा दूरस्थ स्थान में हो सकती है। आपकी माता दूरस्थ स्थानों की यात्राएं अधिक करेंगी तथा उनको इन यात्राओं से हानि या परेशानी हो सकती है। आपका भाई अपने पारिवारिक जीवन के संदर्भ में खुशहाल नहीं हो सकता

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि से सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आप किसी लोक संबंधी कम्पनी के प्रबंधक या किसी सार्वजनिक संस्थान के प्रमुख हो सकते हैं अथवा आप उत्तम व्यवसाय का संचालन कर सकते है एवं संभवतः आपके व्यवसाय में शक्तिशाली लोग सम्मिलित हो सकते हैं। आप किसी ऐसे पेशे से जुड़े हो सकते हैं, जिसमें आपके अधीन अनेक कार्य करने वाले कर्मचारी हो सकते हैं अथवा संस्थान के प्रमुख के रूप में कार्य कर सकते हैं। आप आर्किटेक्चर/वास्तुविद या डिजायनर के रूप में भी सफल हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु शनि से सातवें भाव में स्थित है। आप शल्यचिकित्सा संबंधी वस्तुओं काक्रय–विक्रय कर सकते हैं अथवा आपरेशन थियेटर में कार्य कर सकते हैं। आप विद्युत विभाग मेंभी कार्य कर सकते हैं। आप प्रकाश में किए जाने वाले कार्य कर सकते हैं अथवा फोटो स्टुडियों में कार्यरत हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि से दसवें भाव में मीन राशि है। आप मूलतः गरीब व जरूरतमंद लोगों के उद्धार व सामाजिक कल्याण के लिए कार्य कर सकते हैं। आप पर्यटन विभाग में नौकरी कर सकते हैं अथवा टूरिस्ट गाइड के रूप में कार्य कर सकते हैं। आप पीड़ित व जरूरतमंदों की सहायता के लिए अथवा समाज में नीहित समस्याओं पर सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए पत्रकारिता या मीडिया के क्षेत्र में जा सकते हैं। संभवतः आप किसी सामाजिक संगठन के कार्य करसकते हैं अथवा सामाजिक विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। आपके पास आय के दो स्रोत हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में स्थित है, तो आप विदेशी भूमि पर दलित लोगों के उत्थान के लिए निर्मित संगठन में निम्न आय पर कार्य कर सकते हैं।यदि शनि सुव्यवस्थित है, तो आप पॉयलेट या एयर होस्टेस के रूप में कार्य कर सकते हैं अथवा आप वायुयान विभाग से संबंधित कार्य में संलग्न हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म जिस घर में हुआ है, उस घर के सामने की सड़क पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म जिस घर में हुआ है, उसका प्रमुख द्वार पूर्व दिशा की ओर होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपका जन्म गांव, कस्बे या शहर के पूर्वी भागमें हुआ होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु धनु राशि में स्थित है। आपको जांघ या नितम्ब से संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु से पाँचवें भाव में मंगल स्थित है। 3, 31 और 49 वर्ष की आयु में आपएक दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु बृहस्पति से बारहवें भाव में स्थित है। 11–12 वर्ष की आयु में आपको खतरों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पेशे में काफी हानि का सामना करना पड़

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

सकता है। आपकी पत्नी को गिरने से चोट लग सकती है अथवा दुर्घटना का शिकार हो सकती हैं। आपकी एक संतान की मृत्यु कम आयु में ही हो सकती है। आप अपने घर अथवा माता से दूररह सकते हैं। आप अपनी अचल संपत्ति भी खो सकते हैं। एक विधवा स्त्री आपकी गुप्त शत्रु होसकती है। आपके सहोदर विदेश में व्यापार या नौकरी कर सकते हैं। आप भी विदेश में उन्नति करेंगे तथा विदेश में संपत्ति भी खरीद सकते हैं। आपको अपने घर में पर्याप्त शैय्या सुख प्राप्त नहींहो सकता है अथवा आपके गोपनीय प्रेम–प्रसंग हो सकते हैं। आप धर्म के विरूद्ध जा सकते हैंअथवा धार्मिक लोगों के साथ शत्रुता उत्पन्न कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु और सूर्य एक साथ स्थित हैं। आपको दृष्टि से संबंधी परेशानी हो सकती है अथवा आप रोगग्रस्त शरीर से पीड़ित रह सकते हैं। पूर्व जन्म में आपको अपने पिता से अभिशाप मिला होगा। आपके पिता का जीवन समस्याप्रद हो सकता है। आपके पिता की मृत्यु काफी कम आयु में ही हो सकती है। आपको सरकार से अथवा धनी व शक्ति संपन्न लोगों से परेशानियां हो सकती हैं। परोक्ष रूप से/अप्रकट रूप से आपका सम्मान व आपकी सराहना की जायेगी। आप एक ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं, जो अपनी झूठी शान बनाये रखना चाहे, अभिमानी एवं अपनी शेखी बघारने वाला हो। आपके पिता स्वतंत्र रूप से रहने वाले व्यक्ति हो सकते हैं तथा उनका अपने परिवार के प्रति अधिक लगाव नहीं हो सकता है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक स्तर परबहुत कष्ट व दुख हो सकता है।

यह योग आपके पूर्व जन्म में पिता द्वारा दिये गये अभिशाप को सूचित करता है। पुत्र संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपको दृष्टि से संबंधित परेशानी हो सकती है। इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको सूर्य भगवान की आराधना करनी चाहिए तथा सात चांदी के सर्पो को 11 दिन तक कच्चे दूध से स्नान करवाना चाहिए। गौ दान करने से और 100 ब्राह्मणों/संतों को भोजन करवाने से इस अभिशाप का प्रभाव पूरी तरह से समाप्त हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु मंगल से तीसरे भाव में स्थित है। आपका भाई धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु बृहस्पति से छठें भाव में स्थित है। 6–7 वर्ष की आयु में आपकी मृत्युया आपको मृत्युतुल्य कष्ट होने का खतरा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु मिथुन राशि में स्थित है। आपको मस्तिष्क से संबंधित रोगों अथवा ऊँचाई से गिरने का भय हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बृहस्पति से छठे भाव में स्थित है। 6–7 वर्ष की आयु में आपके जीवनको खतरा हो सकता है। 65 वर्ष की आयु भी आपके जीवन के लिए घातक हो सकती है। आपको अपने नौकर–चाकर या पालतू पशुओं से कष्ट हो सकता है। आपकी माता को उनके 44 वर्ष की आयु में गंभीर समस्याओं से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपकी माता बहुत अधिक तीर्थयात्रायें करेंगी। आपके पारिवारिक सदस्यों को सट्टे आदि के कारण हानि हो सकती है। आपको शैय्या सुख की प्राप्ति अधिक नहीं हो सकती है। आपको मित्रता का आनन्द बहुत थोड़े समय के लिए प्राप्त हो सकता है। आप आध्यात्मिक दीक्षा प्राप्त करने अथवा उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। मृत लोगों के अभिशाप के कारण आप बीमार पड़ सकतेहैं। आपकी संतान ककर्श वाणी एवं कठोर व्यवहार वाली हो सकती है एवं उनका दाम्पत्य

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621

जीवन अधिक खुशहाल नहीं हो सकता है। आपके सहादरों का वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं हो सकता है। आप एक सम्मानित व महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे तथा आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु शनि के साथ स्थित है। आपको अपने प्रारम्भिक जीवन में बहुत अधिककठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बिजली, आग या रसायन से खतरा हो सकता है तथा संभवतः आपकी मृत्यु अप्राकृतिक रूप से अथवा आत्महत्या के कारण हो सकती है।आपकी रूचि वैदिक अध्ययन में हो सकती है। आपके व्यापार/पेशे में समस्यायें आ सकती हैं। आपको बार–बार अपने व्यापार/पेशे में परिवर्तन करना पड़ सकता है। सामान्यतः केतु और शनि केएक साथ होने पर आप के लिए शिक्षक अथवा उपदेशक आदि का पेशा उपयुक्त रहेगा। किन्तु इस योग के साथ सूर्य के स्थित होने पर आप चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापार या व्यवसाय कर सकतेहैं। जबकि केतु और शनि के साथ चंद्रमा के स्थित होने पर आप रेस्तरां या होटल के व्यापारया पेशे में हो सकते हैं। आपको एक बार अपनी नौकरी से निलंबित किया जा सकता है अथवा आप नौकरी छोड़ सकते हैं एवं दूसरी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं। आप मशीनरी का व्यापार कर सकते हैं अथवा इससे संबंधित कार्य कर सकते हैं। आपको अपने कर्तव्य को निभाने अथवा कार्य को पूरा करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आप कभी–कभी मृतकोंके संस्कार का संचालन करने के आध्यात्मिक पेशे को भी अपना सकते हैं। केतु के साथ शनि की युति होने पर अभिशाप के प्रभाव को दूर करने के लिए आपको 42 दिनों तक प्रतिदिन भैरो की पूजा करनी चाहिए अथवा भैरो को मदिरा अर्पित करना चाहिए।

Licensed to - MindSutra Software Technologies Contact :9818193410, 8527121621